

**पाठ-1 : हिंदी भाषा : प्रकृति, संरचना तथा संज्ञा पदबंध
(प्रथम प्रश्न पत्र)**

विषय सूची

1.0	हिंदी भाषा : प्रकृति और संरचना	9
1.1	भाषा : अर्थ	9
1.2	भाषा : प्रकृति	9
1.3	भाषा का प्रयोजन	9
1.4	हिंदी भाषा	9
2.0	संज्ञा पदबंध	9
2.1	शब्द, पद, पदबंध	9
2.2	संज्ञा के एकवचन और बहुवचन रूप	10
	2.2.1 एकवचन से बहुवचन रूपों का निर्माण	10
2.3	हिंदी में लिंग व्यवस्था	13
2.4	कारक	17
2.5	संज्ञाओं के तिर्यक् रूप	20
2.6	द्विरुक्त शब्द	21
2.7	संज्ञा की तरह प्रयुक्त होने वाले शब्द	22
2.8	विशेषण : परिभाषा और प्रकार्य	22
	2.8.1 विशेषण : तिर्यक् रूप	23
2.9	विशेषणों के प्रयोग	25
	2.9.1 संज्ञा की तरह प्रयुक्त होने वाले विशेषण	25
2.10	विशेषणों की संरचना	26
2.11	विशेषण-विशेष्य अन्विति	26
2.12	सर्वनाम	27
2.13	सर्वनामों के तिर्यक् रूप	28
2.14	निजवाचक सर्वनाम 'अपना'	30
3.0	कहानी : प्राणियों की सेवा भी ईश्वर भक्ति है	31
	शब्दार्थ	32

1.0 हिंदी भाषा : प्रकृति और संरचना

1.1 भाषा : अर्थ

भाषा वह है जिसे हम बोलते हैं। यह उच्चारण अवयवों से उच्चरित ध्वनि प्रतीकों की व्यवस्था है। इसके द्वारा उस भाषा-भाषी समुदाय के लोग परस्पर विचारों का आदान-प्रदान एवं सहयोग करते हैं। दूसरे शब्दों में भाषा यादृच्छिक (arbitrary) मौखिक प्रतीकों (symbols) की व्यवस्था है।

1.2 भाषा : प्रकृति

हम कोई बात बोलने या लिखने से पहले उसके बारे में विचार करते हैं। विचार आंतरिक भाषण (internal speech) है। मन में विचार चलता है जो भाषा द्वारा प्रकट होता है। विचार शब्द का बाना (dress) पहनकर सामने आते हैं। इसलिए विचार और शब्द में गहरा संबंध रहता है। हमें शब्दों का अर्थ समझकर सही शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

1.3 भाषा का प्रयोजन

भाषा का प्रयोजन उसका संप्रेषण (communication) है। हम एक-दूसरे से बातचीत करते समय विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। इसी को संप्रेषण कहते हैं। संप्रेषण केवल वाचिक शब्दों द्वारा ही नहीं होता, इशारों और संकेतों से भी हो सकता है। जैसे हाथ का इशारा, चेहरे का हाव-भाव आदि।

1.4 हिंदी भाषा

भारत बहुभाषिक (multilingual) देश है। यहाँ अनेक भाषाएँ और बोलियाँ हैं। यहाँ हिंदी, पंजाबी, गुजराती, बंगला, असमिया, मराठी आदि भाषाएँ बोली जाती हैं। दक्षिण भारत में तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़ आदि भाषाएँ बोली जाती हैं। इनमें से हिंदी भारत के अधिकांश क्षेत्रों में सर्वाधिक जनता द्वारा समझी और बोली जाती है। बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से हिंदी का स्थान विश्व की पहली तीन भाषाओं में से एक है। भारत में ग्यारह हिंदी भाषी राज्य हैं।

हिंदी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। इस लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। हिंदी का साहित्य विशाल और समृद्ध है। हिंदी में पिछले एक हजार वर्षों से साहित्य-रचना हो रही है। मध्यकाल में कबीर, सूर, तुलसीदास, मीराबाई जैसे कवियों ने हिंदी को समृद्ध बनाया। आधुनिक काल के कवियों में जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा के नाम उल्लेखनीय हैं। हिंदी भाषा इस समय विश्व के विभिन्न देशों में डेढ़ सौ विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है।

2.0 संज्ञा पदबंध

2.1 शब्द, पद, पदबंध

वाक्य ही भाषा की इकाई (unit) है। भाषा विशेष के व्याकरणिक नियमों के अनुसार शब्दों को अभिक्रमित (sequenced) करने से वाक्य बनते हैं। किसी भाषा के शब्द (word) उस भाषा के कोश (dictionary) में संग्रहीत (compiled) होते हैं। वाक्य में प्रयुक्त होने वाले शब्द ही 'पद' कहलाते हैं।

पदबंध में एक से अधिक पदों का होना आवश्यक है, जैसे—‘रामनाथ का पुत्र’ तथा ‘रामनाथ का पुत्र अशोक’ दोनों ही पदबंध हैं। ये दोनों संज्ञा पदबंध हैं। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्य को देखें :-

छोटी लड़की हँस रही है।

इसमें—

छोटी लड़की
हँस रही है

संज्ञा पदबंध
क्रिया पदबंध है

2.2 संज्ञा के एकवचन और बहुवचन रूप

‘संज्ञा’ शब्द का अर्थ है ‘नाम’। उस नाम से किसी वस्तु, स्थान, व्यक्ति या भाव का बोध होता है।

संज्ञा शब्दों में लिंग, वचन, कारक (gender, number and case) के कारण विकार (inflection, change) आते हैं। लिंग का अर्थ है ‘चिह्न’ या ‘प्रतीक’ (symbol)। जीवधारियों का लिंग निर्धारण प्राकृतिक आधार पर होता है। हिंदी में निर्जीव वस्तुएँ भी पुल्लिंग या स्त्रीलिंग कोटि में आती हैं। इस दिशा में कुछ सामान्य नियम बने हुए हैं पर अपवाद (exception) भी हैं। हिंदी में वचन भी दो हैं – एकवचन (singular) और बहुवचन (plural)। इसके साथ ही कारक चिह्नों के कारण संज्ञा रूप परिवर्तित होते रहते हैं।

2.2.1 एकवचन से बहुवचन रूपों का निर्माण

व्यावहारिक दृष्टि से वचन का आधार है संज्ञा (व्यक्ति, वस्तु इत्यादि) का एक या एक से अधिक होना। इस दृष्टिकोण (point of view) से हिंदी में दो वचन हैं – एकवचन और बहुवचन (singular and plural)।

हिंदी में एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए लिंग (gender) भेद के अनुसार प्रत्यय (suffix) जोड़े जाते हैं। यथा :

शब्द (लिंग)	एकवचन	बहुवचन
घर (पुल्लिंग)	घर	घर (अकारांत शब्द)
रात (स्त्रीलिंग)	रात	रातें (अकारांत शब्द)
लड़का (पुल्लिंग)	लड़का	लड़के (आकारांत)
लता (स्त्रीलिंग)	लता (creeper)	लताएँ (आकारांत)
कवि (पुल्लिंग)	कवि	कवि (इकारांत)
रीति (स्त्रीलिंग)	रीति	रीतियाँ (इकारांत)
साथी (पुल्लिंग)	साथी	साथी (ईकारांत)
देवी (स्त्रीलिंग)	देवी	देवियाँ (ईकारांत)
साधु (पुल्लिंग)	साधु	साधु (उकारांत)
वस्तु (स्त्रीलिंग)	वस्तु	वस्तुएँ (उकारांत)
डाकू (पुल्लिंग)	डाकू	डाकू (उकारांत)
वधू (स्त्रीलिंग)	वधू	वधुएँ (उकारांत)

बहुवचन रूप प्रायः जातिवाचक और गणनीय संज्ञाओं (common noun and countable noun) के संदर्भ में बनाए जाते हैं।

पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन रूपों को देखने पर यह पता चलता है कि—

i) पुल्लिंग आकारांत शब्दों में ही कुछ विकार (change) होते हैं।

आकारांत एकवचन शब्द बहुवचन में एकारांत हो जाता है।

अन्य सभी पुल्लिंग संज्ञाएँ बहुवचन में भी बदलती नहीं हैं। जैसे—

एकवचन	बहुवचन
मकान	मकान
पति	पति
आदमी	आदमी
गुरु	गुरु
नीबू	नीबू

ii) कुछ पदनाम (designations, posts), कुछ संबंधों (relations) के नाम, कुछ संस्कृत के तत्सम आकारांत शब्द बहुवचन में नहीं बदलते।

एकवचन	बहुवचन
राजा (king)	राजा
नेता (leader)	नेता
योद्धा (warrior)	योद्धा
चाचा (uncle)	चाचा
दादा (grand father)	दादा
बाबू (clerk)	बाबू

जैसे—

- सरदार पटेल द्वारा आयोजित सभा में देश के सभी राजा उपस्थित थे।
- अस्पताल के उद्घाटन समारोह में कई नेता आए थे।
- इस कार्यालय के दो बाबू (clerks) छुट्टी पर हैं।

जैसा पहले संकेत दिया गया है कि बहुवचन रूप गणनीय संज्ञाओं के बनते हैं। भाववाचक संज्ञाओं (abstract noun) के भी बहुवचन रूप बनाए जाते हैं।

शब्दांत	एकवचन	बहुवचन
आकारांत	आवश्यकता	आवश्यकताएँ (necessities)
	प्रथा	प्रथाएँ (customs)
इकारांत	रीति	रीतियाँ (manners)
	नीति	नीतियाँ (policies)
ईकारांत	चढ़ाई	चढ़ाइयाँ (i) invasions, (ii) ups

स्त्रीलिंग (feminine) संज्ञा शब्दों के बहुवचन रूपों में परिवर्तन निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकता है :-

शब्दांत	एकवचन	बहुवचन
अकारांत	रात	रातें
	जड़	जड़ें
	किताब	किताबें
आकारांत	माला	मालाएँ
	सभा	सभाएँ
	प्रथा	प्रथाएँ
इकारांत	जाति	जातियाँ
	रुचि	रुचियाँ
ईकारांत	चिट्ठी	चिट्ठियाँ
	बुराई	बुराइयाँ
	मिठाई	मिठाइयाँ
ऊकारांत	वधू / बहू	वधुएँ / बहुएँ
याकारांत	चिड़िया, बुढ़िया	चिड़ियाँ, बुढ़ियाँ

ऊपर दिए गए उदाहरणों से हमें पता चलता है कि -

- अकारांत शब्द बहुवचन में एकारांत हो जाते हैं। 'एँ' अनुस्वारयुक्त है-
रात-रातें, बात-बातें
- आकारांत शब्द के बहुवचन रूप अंत में 'एँ' जोड़कर बनाए जाते हैं-
प्रथा-प्रथाएँ, दुआ-दुआएँ
- इकारांत और ईकारांत शब्द के बहुवचन रूप बनाने के लिए अंत में 'याँ' जोड़ा जाता है।
ईकारांत शब्द की अंतिम 'ई' ध्वनि 'इ' में परिवर्तित हो जाती है।
नदी-नदियाँ
- ऊकारांत शब्द के अंत में 'एँ' का आगम होता है और दीर्घ (long) 'ऊ' को ह्रस्व (short) 'उ' में परिवर्तित किया जाता है।
वधू-वधुएँ
- कुछ संज्ञा शब्द जिनके अंत में 'या' होता है वह या 'याँ' में परिवर्तित हो जाता है।
चिड़िया-चिड़ियाँ

बहुवचन बनाने के लिए 'लोग' (person, people) का प्रयोग-

कुछ स्थितियों में जहाँ शब्दों में एकवचन तथा बहुवचन के रूपों में समानता होती है, वहाँ बहुवचन का बोध कराने के लिए 'लोग' शब्द संज्ञा, विशेषण तथा सर्वनाम शब्दों के बाद में लगाया जाता है। यह मानव जाति के लिए ही प्रयुक्त होता है यथा-

- 1) राजा लोग दरबार में बैठकर लोगों की शिकायतें सुना करते थे।

- इन वाक्यों में यदि हम '..... लोग' पदबंधों का कारक चिह्नों के साथ प्रयोग करें तो इन बहुवचन चिह्नक 'लोग' का रूप अन्य अकारांत संज्ञाओं की तरह (लोगों+कारक चिह्न) होता है।

- ### 2.3 हिंदी में लिंग व्यवस्था

निर्जीव वस्तुओं के लिंग निर्धारण के सामान्य नियम आगे बताए गए हैं, परंतु सामान्यतः

- 'नदी' का विशेषण शब्द 'बड़ी' ईकारांत है। इससे यह पता चलता है कि नदी स्त्रीलिंग है।

यह पहाड़ काफी ऊँचा है।

‘पहाड़’ का विशेषण शब्द ‘ऊँचा’ आकारांत है। अतः पहाड़ पुल्लिङ्ग है। अर्थात् विशेषण से संज्ञा के लिंग की सूचना मिल जाती है।

क्रिया की प्रायः कर्ता से अन्विति (agreement) होती है इसलिए क्रिया से कर्ता के लिंग का अंदाजा लगाया जा सकता है।

मेरी किताब गिर गई / फट गई।

इसमें मेरी किताब गिर गई / फट गई से भी यही ज्ञात होता है कि इनका कर्ता किताब स्त्रीलिंग है।

पुराना मकान बेच दिया गया।



इस वाक्य में भी विशेषण विशेष्य

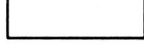
पुराना मकान

पुल्लिंग पुल्लिंग

मकान बेचा गया

कर्ता क्रिया

पुल्लिंग पुल्लिंग



निर्जीव संज्ञा शब्दों के लिंग निर्धारण के सामान्य नियम

पुल्लिंग शब्द

- i) देशों (countries), पर्वतों (mountains), समुद्रों (seas / oceans) के नाम—
भारत, अमेरिका, चीन, हिमालय, आल्प्स, विंध्याचल, हिंद महासागर, काला सागर
इत्यादि।
- ii) ग्रहों (planets) के नाम—
सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र इत्यादि।
अपवाद (exceptions) : पृथ्वी (earth) – स्त्रीलिंग।
- iii) रत्नों (gems / jewels) के नाम—
हीरा (diamond), मोती (pearl), नीलम (sapphire) इत्यादि।
- iv) धातुओं (metals) के नाम—
सोना (gold), पीतल (brass), काँसा (bronze) इत्यादि।
अपवाद : चाँदी (silver) – स्त्रीलिंग।
- v) वृक्षों / पेड़ों (trees) के नाम—
आम, पीपल, कदंब इत्यादि।
अपवाद : नीम, इमली – स्त्रीलिंग।
- vi) अनाजों (grains / cereals) के नाम—
गेहूँ (wheat), चावल (rice), चना (gram) इत्यादि।
अपवाद : अरहर, मसूर, मूँग – स्त्रीलिंग।
- vii) समय के संदर्भ में—
वर्ष, माह, दिन, सप्ताह, घंटा।
अपवाद : सांझ / संध्या (evening), रात – स्त्रीलिंग।
- viii) द्रव पदार्थों (liquids) के नाम—
पानी, घी, तेल, दूध, दही (curd), मक्खन (butter)
अपवाद : छाछ (butter milk) – स्त्रीलिंग।

स्त्रीलिंग शब्द

- i) नदियों और झीलों के नाम –
गंगा, यमुना, नर्मदा, सांभर झील
अपवाद : ब्रह्मपुत्र , सिंधु-पुल्लिंग।
- ii) नक्षत्रों के नाम–
अश्विनी, रोहिणी
- iii) तिथियों के नाम–
प्रतिपदा, द्वितीया, तीज
- iv) किराने (groceries) की वस्तुओं के नाम–
लौंग, इलायची, मिर्च, दालचीनी, सुपारी इत्यादि।
अपवाद : कपूर (camphor) – पुल्लिंग
- v) कुछ खाद्य पदार्थों के नाम–
पूरी, कचौरी, खीर, दाल, रोटी, बर्फी इत्यादि।
अपवाद : भात, रायता, लड्डू, पेड़ा – पुल्लिंग।
- vi) संस्कृत के तत्सम आकारांत और उकारांत शब्द–
दया, क्षमा, कृपा, माया, लज्जा, सुंदरता, नम्रता, मृत्यु, वस्तु, आयु।
- vii) हिंदी के अधिकांश ईकारांत / आई में अंत होने वाले शब्द–
धरती / पृथ्वी (earth), मिट्टी, चिट्ठी, बुराई, भलाई, गहराई।
अपवाद : पानी, मोती, घी, दही।
- viii) भाववाचक संज्ञाएँ जिनके अंत में ट, वट, हट हैं–
आहट, घबराहट, बनावट, सजावट

उर्दू फारसी से आगत शब्दों का लिंग–

पुल्लिंग शब्द

- i) जिस शब्द के अंत में 'आब' हो–
किताब, जवाब, नकाब
टिप्पणी – हिंदी में 'पुस्तक' स्त्रीलिंग शब्द है अतएव किताब स्त्रीलिंग की तरह प्रयुक्त होता है।
किताब (उर्दू) – पुस्तक (हिंदी) दोनों एक-दूसरे के पर्याय हैं।
- ii) उर्दू शब्द जिनके अंत में आर, आल, आन हो–

बाजार, इशतहार (notice), सवाल, हाल, एहसान, सामान, इम्तहान।
अपवाद : दुकान (shop), सरकार (government), तकरार (quarrel)।

स्त्रीलिंग शब्द

- i) ईकारांत शब्द—
गरीबी, ईमानदारी, होशियारी, चालाकी, अमीरी, नवाबी।
- ii) ऐसे शब्द जिनके अंत में 'श' हो—
कोशिश, तलाश, मालिश, नालिश (filing petition or reporting to a court)
- iii) अधिकांश 'आ' में अंत होने वाले शब्द—
दवा, हवा, सजा
अपवाद : दगा (deceitful act), मजा (enjoyment)

अंग्रेजी और विदेशी भाषाओं से आगत शब्दों का लिंग—

- (क) आकारांत शब्दों को पुल्लिंग की तरह प्रयोग किया जाता है।
- (ख) ईकारांत शब्दों को स्त्रीलिंग की तरह प्रयोग किया जाता है।
आकारांत (पुल्लिंग)—कैमरा, ड्रामा, सिनेमा
अकारांत (पुल्लिंग)—आर्डर, कालेज, कैलेंडर, हॉल
स्त्रीलिंग—कमेटी, लायब्रेरी, केतली, डायरी, कंपनी, एसेंबली।
- (ग) कुछ अंग्रेजी / विदेशी शब्द उनके हिंदी पर्याय के लिंग का अनुसरण करते हैं यथा—
नंबर — अंक (पुल्लिंग)
बूट — जूता (पुल्लिंग)
कमेटी — समिति (स्त्रीलिंग)
मीटिंग — सभा (स्त्रीलिंग)
ट्रेन — गाड़ी (स्त्रीलिंग)
फोटो — तस्वीर (स्त्रीलिंग)
नोटिस — सूचना (स्त्रीलिंग)

मनुष्येतर जीवधारियों (other than human beings) में कुछेक हमेशा पुल्लिंग में आते हैं।
वे हैं—पक्षी (bird), कौआ (crow), उल्लू (owl), चीता (leopard), कछुआ (tortoise), खटमल (bed bug)।

कुछ जो स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होते हैं—चींटी (ant), मछली (fish), तितली (butterfly), मक्खी (house fly)।

कुछ शब्दों में जब पुल्लिंग के बदले स्त्रीलिंग दर्शाना होता है तो शब्द के पहले 'मादा' लगाया जाता है—मादा उल्लू (she owl), मादा चीता (she leopard, leopardess)।

उभयलिंगी शब्द (common gender)

- i) कुछ ऐसे शब्द हैं जो स्त्रीलिंग और पुल्लिंग दोनों लिंगों में प्रयुक्त होते हैं, जैसे—अफसर (officer), मंत्री (minister), प्रधानमंत्री (prime minister), सचिव (secretary), डॉक्टर (doctor) ।
- ii) कुछ विदेशी शब्द ऐसे हैं जिन्हें कुछ हिंदी क्षेत्रों में पुल्लिंग और कुछ क्षेत्रों में स्त्रीलिंग मानते हैं –

‘किताब’ उर्दू का शब्द है। उर्दू में इसे पुल्लिंग के रूप में प्रयोग करते हैं। चूंकि हिंदी में इसका पर्याय पुस्तक है जो हिंदी में स्त्रीलिंग है अतः इसे स्त्रीलिंग मानते हैं। उसी तरह ‘आत्मा’ संस्कृत में पुल्लिंग है, हिंदी में स्त्रीलिंग मानकर इसका प्रयोग किया जाता है।

अन्य उभयलिंगी शब्द हैं – गड़बड़, चलन।

‘चर्चा’ उर्दू में पुल्लिंग है परंतु हिंदी में स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होता है।

2.4 कारक (case)

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप के द्वारा उसका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों, विशेषकर क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे ‘कारक’ कहते हैं।

यह संबंध सूचित करने के लिए संज्ञा या सर्वनाम के आगे जो चिह्न या प्रत्यय जोड़े जाते हैं, उन्हें विभक्ति (case marker) कहते हैं।

हिंदी में निम्नलिखित आठ कारक हैं—

कारक	विभक्ति	स्पष्टीकरण + उदाहरण
1. कर्ता (nominative)	○, ने	वाक्य में क्रिया का कर्ता। उद्देश्य कर्ता कारक में होता है। इसकी दो विभक्तियाँ दर्शाई गई हैं—○ और ‘ने’। राजेश्वर (कर्ता) सो रहा है। ○ चिह्न राजेश्वर ने पत्र पढ़ा। ‘ने’
2. कर्म (accusative)	○, को - ○, to	वाक्य में जिस व्यक्ति या वस्तु पर क्रिया का फल पड़ता है वह कर्म कारक में होता है। राजेश पत्र लिख रहा था। राजेश पुराने पत्र को जला रहा था।
3. करण (instrumental)	से - with	जिस साधन से कोई कार्य संपन्न होता है उस साधन को करण कारक में प्रयोग किया जाता है। नौकर चाकू से सब्जी काट रहा है।
4. संप्रदान (dative)	को, के लिए - for	जिस व्यक्ति या वस्तु के लिए कार्य संपादित होता है, वह संप्रदान कारक में प्रयुक्त होता है। सेठ ने भिखारी को खाना दिया। राजेश के लिए खाना लाओ।

कारक	विभक्ति	स्पष्टीकरण + उदाहरण
5. अपादान (ablative)	से - from	यह 'से' विभक्ति करण कारक की विभक्ति से भिन्न है। करण कारक की विभक्ति कार्य का साधन दर्शाती है। अपादान की विभक्ति क्रिया और व्यक्ति और / या किसी वस्तु से अलगाव (अलग होना, दूर जाना) दर्शाती है। नौकर <u>चाकू से</u> फल काटता है। 'चाकू' करण कारक में है। चाकू <u>मेज से</u> गिरा। यहाँ 'मेज' अपादान कारक है।
6. संबंध (possessive / genitive)	का / के / की - of	संज्ञा के जिस रूप से उसका किसी अन्य शब्द से संबंध सूचित हो तो 'का' से पूर्व दर्शाया शब्द संबंध कारक होता है। <u>राधा का</u> पुत्र इसी स्कूल में पढ़ता है। <u>राधा की</u> लड़की इसी स्कूल में पढ़ती है। <u>राधा के</u> बच्चे इसी स्कूल में पढ़ते हैं। 'का' के बाद वाला संज्ञा शब्द पुल्लिंग एकवचन होगा। 'की' के बाद वाला शब्द स्त्रीलिंग एकवचन या बहुवचन हो सकता है। 'के' का प्रयोग तब होता है जब इसके बाद में आने वाला संज्ञा शब्द पुल्लिंग बहुवचन में हो या आदर सूचक शब्द हो, जैसे— <u>राधा के</u> पिता जी बाहर गए हैं।
7. अधिकरण (locative)	में, पर - in, on, resp.	व्यक्ति या वस्तु की अवस्थिति का आधार दर्शाना या सूचित करना अधिकरण का प्रकार्य है। राजेश <u>घर में</u> है। राजेश <u>छत पर</u> था।
8. संबोधन (vocative)	हे, अरे, अज़ी - O, Oh	किसी को पुकारने / बुलाने के लिए प्रयुक्त शब्द संबोधन कारक का द्योतक है। <u>हे ईश्वर</u> , उन्हें क्षमा कर। <u>अरे लड़को</u> , बाहर जाकर खेलो। <u>अजी</u> जरा सुनिए।

(1) कर्ता कारक विभक्ति 'ने' का प्रयोग –

कर्ता कारक के साथ 'ने' विभक्ति लगाई जाती है जब—

क्रिया सकर्मक हो तथा उसका प्रयोग भूतकालिक रूप के साथ हो। जैसे—

खाया, देखा, पढ़ा, लिखा।

नरेश ने देखा।	Naresh saw.
नरेश ने देखा है।	Naresh has seen.
नरेश ने देखा था।	Naresh had seen.
नरेश ने देखा होगा।	Naresh may have seen.

जब कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग होता है तब क्रिया-लिंग, वचन कारक में कर्म के साथ अन्वित (agreement) होती है अर्थात् बदल जाती है।

कर्ता + ने	कर्म		क्रिया
रजनी ने	एक मकान तीन कमरे एक अलमारी चार चूड़ियाँ	(पुल्लिंग, एकवचन) (पुल्लिंग, बहुवचन) (स्त्रीलिंग, एकवचन) (स्त्रीलिंग, बहुवचन)	खरीदा बनवाए खरीदी बनवाई
		अन्विति	

(2) कर्म कारक 'को' का प्रयोग-

कर्म कारक विभक्ति 'को' का प्रयोग प्रायः तब किया जाता है, जब कर्म निश्चित या निर्धारित हो। यथा-

मीना ने	एक मकान खरीदा उस मकान को खरीदा अपने उस मकान को बेच दिया। राहुल को बुलाया।	uncertain certain / specific certain specific
---------	--	--

(3) करण कारक का विभक्ति प्रत्यय 'से' है।

मैं कलम से लिखता हूँ। (उपकरण - tool)

लीला बस से आई। (यात्रा का साधन - means of transport)

वह खिड़की से देख रहा है। (माध्यम - medium)

(4) संप्रदान कारक के प्रत्यय 'को' और 'के लिए' हैं।

माँ बच्चे को दूध देती है। (to the child)

यह शरबत पिता जी के लिए है। (for the father)

(5) अपादान कारक का प्रत्यय भी 'से' है।

पत्ता पेड़ से गिरा। (from the tree)

बच्चा कल से बीमार है। (since yesterday)

लीला शीला से बड़ी है। (than Sheela)

(6) संबंध कारक के प्रत्यय 'का / के / की' हैं।

राम की गाय। (Ram's cow)

सीता का भाई। (Sita's brother)

स्कूल के बच्चे। (school children)

(7) अधिकरण कारक के प्रत्यय 'में / पर' हैं।

रामलाल घर में है। (in the house)

मेज पर किताब है। (on the table)

2.5 संज्ञाओं के तिर्यक् रूप (changed forms of nouns)

कारक युक्त संज्ञा शब्दों के बहुवचन रूपों में जो विकार (change) होता है, वह निम्नलिखित चार्ट में दर्शाया गया है :-

संज्ञा शब्द पुल्लिंग	एकवचन		बहुवचन	
	बिना कारक चिह्न	कारक चिह्न सहित	बिना कारक चिह्न के	कारक चिह्न के साथ
मकान	मकान	मकान में	मकान	मकानों में
दरवाजा	दरवाजा	दरवाजे पर	दरवाजे	दरवाजों पर
मुनि	मुनि	मुनि ने	मुनि	मुनियों ने
भाई	भाई	भाई का	भाई	भाइयों का
साधु	साधु	साधु से	साधु	साधुओं से
डाकू	डाकू	डाकू के लिए	डाकू	डाकूओं के लिए

स्पष्ट है कि एकवचन संज्ञा शब्द में कारक चिह्न केवल आकारांत पुल्लिंग शब्द को प्रभावित करता है। अंतिम 'आ', 'ए' ध्वनि में परिवर्तित हो जाता है।

कारक चिह्न युक्त बहुवचन पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के अंत में 'ओ' ध्वनि आती है, यथा-

अंत में अ / आ वाले शब्द बहुवचन अंत में 'ओ' में परिवर्तित

अंत में इ / ई वाले शब्द बहुवचन रूप अंत में 'यो' का आगम

अंत में उ / ऊ वाले शब्द बहुवचन में अंत में 'ओ' का आगम

ईकारांत और ऊकारांत शब्दों में 'ई' और 'ऊ' क्रमशः ह्रस्व 'इ' और ह्रस्व 'उ' में परिवर्तित हो जाते हैं।

कारक चिह्न युक्त संज्ञा स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन रूप निम्नलिखित चार्ट से देखे जा सकते हैं :-

संज्ञा शब्द स्त्रीलिंग	एकवचन		बहुवचन	
	बिना कारक चिह्न	कारक चिह्न सहित	बिना कारक चिह्न	कारक चिह्न के साथ
अकारांत	बहिन	बहिन को	बहिनें	बहिनों को
आकारांत	माता	माता ने	माताएँ	माताओं ने
इकारांत	तिथि	तिथि से	तिथियाँ	तिथियों से
ईकारांत	लड़की	लड़की को	लड़कियाँ	लड़कियों को
उकारांत	वस्तु	वस्तु को	वस्तुएँ	वस्तुओं को
ऊकारांत	वधू	वधू को	वधुएँ	वधुओं को

स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के कारक चिह्नयुक्त बहुवचन रूपों के अंत में 'ओ' ध्वनि आती है।

अकारांत	ओकारांत	बहिनों को
आकारांत	ओं का आगम	माताओं से
इकारांत	यों का आगम	रीतियों का
ईकारांत	यों का आगम	नदियों में
उकारांत	ओं का आगम	वस्तुओं को
ऊकारांत	ओं का आगम	वधुओं ने

ईकारांत तथा ऊकारांत शब्दों के अंत में दीर्घ 'ई' तथा दीर्घ 'ऊ' क्रमशः ह्रस्व 'इ' तथा ह्रस्व 'उ' में परिवर्तित हो जाते हैं।

2.6 द्विरुक्त शब्द

प्रायः सभी भारतीय भाषाओं में द्विरुक्त शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इनमें एक वर्ग है जिसमें प्रायः सार्थक समानार्थी शब्द रहते हैं, यथा—

धन-दौलत	रिश्ता-नाता	बाल-बच्चे
शकल-सूरत	गाली-गलौज	चाल-ढाल
दान-दक्षिणा	डील-डौल	थका-हारा
बाग-बगीचा	चलना-फिरना	चाल-चलन

एक वर्ग है जिसमें किसी रूप से संबद्ध शब्द आते हैं—

रुपया-पैसा	घर-द्वार	पूजा-पाठ
जप-ध्यान	भजन-कीर्तन	लात-घूँसा
पेड़-पौधे	दवा-दारु	

कुछ ऐसे सामासिक शब्द हैं जो प्रायः विलोम शब्दों / लिंग के योग से बनते हैं।

पाप-पुण्य	दिन-रात	सुबह-शाम	पति-पत्नी	माँ-बाप
भला-बुरा	आगा-पीछा	बड़े-छोटे	अमीर-गरीब	बच्चे-बूढ़े

द्वित्व शब्दों का एक वर्ग है जिसमें उसी शब्द की आवृत्ति होती है।

संज्ञा	घर-घर	पल-पल	मन-मन (मन ही मन)
विशेषण	अच्छे-अच्छे	मीठे-मीठे	छोटे-मोटे
	बड़े-बड़े	कम-कम	ज्यादा-ज्यादा
क्रिया	पढ़ते-पढ़ते	चलते-चलते	
क्रिया विशेषण	धीरे-धीरे	कभी-कभी	साथ-साथ

2.7 संज्ञा की तरह प्रयुक्त होने वाले शब्द

(क) कभी-कभी विशेषण संज्ञा की तरह प्रयुक्त होते हैं—

- बड़ों का आदर करो।
- मूर्खों से मैं बात नहीं करता।
- चारों को सजा मिलेगी।

(ख) क्रियार्थक संज्ञा 'ना' क्रिया संज्ञा की तरह प्रयुक्त होती है—

- तैरना अच्छा व्यायाम है।

(ग) संज्ञा + वाला, क्रिया + वाला

- दूधवाला कब आएगा ?
- सोनेवाले जाग गए।
- सब्जीवाली को दस रुपए दे दो।

2.8 विशेषण : परिभाषा और प्रकार्य

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं। विशेषता के अंतर्गत गुण और दोष, अच्छाई और बुराई आदि समाहित हैं।

(1) सामान्य स्थिति में वाक्य में विशेषण शब्द, विशेष्य से पहले आता है। जैसे—

वह <u>समझदार</u> आदमी है।	(wise man)
यही <u>सीधा</u> रास्ता है।	(straight road)
मुझे <u>नई</u> किताब दो।	(new book)

विशेषण विशेष्य के बाद भी आ सकता है जैसे—

आपका पुत्र समझदार है।

यही रास्ता सीधा है।

रमणीकलाल धनी है।

- (2) संबंधसूचक सर्वनाम (possessive pronouns) मेरा, आपका, तुम्हारा, उनका विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं—

आपका घर कहाँ है ?

तुम्हारा लड़का कहाँ पढ़ता है ?

- (3) वर्तमानकालिक कृदंत (present participle) भूतकालिक कृदंत (past participle) विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं, यथा—

चलती गाड़ी से मत उतरो।

- (4) संज्ञा + वाला संरचना; ने + वाला संरचना विशेषण की तरह प्रयुक्त होती है।

अखबार वाला लड़का अभी तक नहीं आया।

नल ठीक करने वाला आदमी आज छुट्टी पर है।

यह सबसे अधिक		बिकने वाला समाचार-पत्र		
		बिकने वाली घड़ी		है।

- (5) संज्ञा + का संरचना भी विशेषण की तरह प्रयुक्त होती है।

राधा		का बेटा		कालेज में		पढ़ता है।
		की बेटी				पढ़ाती है।

- (6) 'अपना' भी विशेषण की तरह प्रयुक्त होता है।

अपना काम करो। अपनी घड़ी मुझे दे दो।

आप सब अपने घरों में रहें, बाहर न जाएँ।

2.8.1 विशेषण : तिर्यक् रूप

विशेषण का अपना कोई लिंग या वचन नहीं होता। विशेषण जिस संज्ञा शब्द की विशेषता बताता है उसके लिंग और वचन के अनुसार अपना रूप बदलता है - यही रूप-परिवर्तन उसका तिर्यक् रूप कहा जाता है।

केवल आकारांत विशेषण ही 'आ', 'ए', 'ई' पैटर्न पर बदलते हैं। जैसे—

छोटा बच्चा (पुल्लिंग एकवचन)

छोटे बच्चे (पुल्लिंग बहुवचन)

छोटी लड़की (स्त्रीलिंग एकवचन)

छोटी लड़कियाँ (स्त्रीलिंग बहुवचन)

अन्य विशेषण उसी रूप में प्रयुक्त होते हैं, चाहे वे एकवचन / बहुवचन / पुल्लिंग संज्ञा की विशेषता बताएँ।

आकारांत विशेषण के पुल्लिंग विशेष्य के बाद यदि कोई कारक विभक्ति आए तो एकवचन और बहुवचन दोनों स्थितियों में आकारांत विशेषण एकारांत हो जाते हैं ।

	पुल्लिंग विशेष्य कारक विभक्ति सहित	
विशेषण	एकवचन	बहुवचन
बड़ा नया पुराना	बड़े लड़के को नए मकान में पुराने कपड़े को	बड़े लड़कों को नए मकानों में पुराने कपड़ों को

आकारांत विशेषण के अतिरिक्त अन्य विशेषण अपने मूल रूप में प्रयुक्त होते हैं चाहे विशेष्य एकवचन में हो या बहुवचन में, स्त्रीलिंग हो या पुल्लिंग।

एक सुंदर मकान (पुल्लिंग, एकवचन) बनवाओ।

श्रीमती सुधा ने अपने तीनों लड़कों के लिए तीन सुंदर मकान (बहुवचन) बनवाए।

कानून दोषी व्यक्ति को सजा देगा।

कानून दोषी व्यक्तियों (बहुवचन) को सजा देगा।

समझदार स्त्री अपने परिवार का पूरा खयाल रखती है।

समझदार स्त्रियाँ ही अपने परिवार का खयाल रख सकती हैं।

विशेष्य के स्त्रीलिंग होने पर एकवचन और बहुवचन दोनों स्थितियों में केवल आकारांत विशेषण ईकारांत हो जाते हैं जैसे—

	स्त्रीलिंग विशेष्य	
विशेषण	एकवचन	बहुवचन
छोटा अच्छा ऊँचा (tall / high) नया	छोटी माला (स्त्रीलिंग) अच्छी किताब (स्त्रीलिंग) ऊँची मीनार (स्त्रीलिंग) नई कुर्सी (स्त्रीलिंग)	छोटी मालाएँ अच्छी किताबें ऊँची मीनारें नई कुर्सियाँ

पुल्लिंग, बहुवचन विशेष्य के पूर्व आकारांत विशेषण एकारांत हो जाते हैं—

अच्छे लड़के, छोटे पौधे, पुराने दरवाजे, मीठे केले

जानकारी के लिए कुछ विशेषणों की सूची

शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द
अमीर / धनी (rich)	गरीब (poor)	छोटा (small)	बड़ा (big)
नया (new)	पुराना (old)	एक (one)	अनेक (many)
कम (less)	ज्यादा (more)	अच्छा / भला (good)	बुरा (bad)

शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द
कम (less)	अधिक (more)	प्रथम (first)	आखिरी (last)
सस्ता (cheap)	महँगा (costly)	पहला (first)	अंतिम (last)
सुखी (happy)	दुखी (sad)	प्यार (love)	नफरत / घृणा (hatred)
स्वस्थ (healthy)	अस्वस्थ (unhealthy)	ईमानदार (honest)	बेईमान (dishonest)
ऊँचा (high)	नीचा (low)	समझदार (wise)	नासमझ (unwise)
सुंदर (beautiful)	कुरूप, भद्दा (ugly)	बुद्धिमान (wise)	मूर्ख (fool)
निश्चित (definite)	अनिश्चित (indefinite)	पूरा (complete)	अधूरा (incomplete)
भारी (heavy)	हल्का (light)	सफल (successful)	असफल (unsuccessful)
बढ़िया (superior)	घटिया (inferior)	ताजा (fresh)	बासी (stale)

2.9 विशेषणों के प्रयोग

2.9.1 संज्ञा की तरह प्रयुक्त होने वाले विशेषण

कभी-कभी विशेषण शब्द संज्ञा की तरह प्रयोग किए जाते हैं यथा—

बड़ों का आदर करना चाहिए।

गरीबों की सहायता करो।

कुछ विशेषण शब्द जो आकारांत / ईकारांत होते हुए भी किसी स्थिति में अपना रूप नहीं बदलते—

बढ़िया (superior), ताजा (fresh), उम्दा (of a good quality),

बासी (stale, not fresh)

यह मकान बढ़िया है। (मकान - पुल्लिंग एकवचन)

दोनों मकान बढ़िया हैं। (मकान - पुल्लिंग बहुवचन)

यह इमारत बढ़िया है। (इमारत - स्त्रीलिंग एकवचन)

ये सभी इमारतें बढ़िया हैं। (इमारतें - स्त्रीलिंग बहुवचन)

ताजा खाना खाओ। (खाना - पुल्लिंग)

बासी सब्जी मत खरीदो (सब्जी - स्त्रीलिंग)

2.10 विशेषणों की संरचना

(1) विशेषण संज्ञा, सर्वनाम और क्रिया के साथ प्रत्यय लगाकर भी बनाए जाते हैं।

संज्ञा से	गुण	गुणी	(virtuous)
	आलस	आलसी	(lazy)
	किताब	किताबी	(bookish)
	अमेरिका	अमेरिकी	(pertaining to America)
	हिंद	हिंदी	(pertaining to India)
	दया	दयालु	(kind hearted)
सर्वनाम से	आप	अपना	(one's own)
क्रिया से	चलना	चलता (हुआ), चालू	(prevalent, current)
	बीतना	बीता (हुआ) समय	(past, bygone)

(2) कुछ संज्ञाओं और क्रियाओं में 'वाला' जोड़कर विशेषण बनाए जाते हैं—

मिठाई	मिठाईवाला
सब्जी	सब्जीवाला
दौड़ना	दौड़नेवाला
लड़ना	लड़नेवाला

'वाला' लगे शब्द 'संज्ञा' और 'विशेषण' दोनों ही रूपों में प्रयुक्त हो सकते हैं।

2.11 विशेषण-विशेष्य अन्विति (adjective - noun agreement)

एक छोटा लड़का बाग में खेल रहा है। (पुल्लिंग - एकवचन)

एक छोटी लड़की बाग में खेल रही है। (स्त्रीलिंग - एकवचन)

छोटे बच्चे खेल रहे थे। (पुल्लिंग - बहुवचन)

छोटी लड़कियाँ खेल रही थीं। (स्त्रीलिंग - बहुवचन)

अन्विति छोटा → लड़का (masculine singular)

छोटी → लड़की (feminine singular)

छोटी → लड़कियाँ (feminine plural)

छोटे → लड़के (masculine plural)

विशेषण संज्ञा से पहले या संज्ञा के बाद आ सकते हैं।

समझदार लड़का अपनी पढ़ाई कर रहा है।

पढ़ाई करने वाला लड़का समझदार है।

जिस तरह अंग्रेजी में	good	better	best
	beautiful	more beautiful	most beautiful
	wise	wiser	wisest
	less	lesser	least

विशेषणों की तुलना comparative और superlative degree नाम से की जाती है उसी तरह हिंदी में भी तुलना की जाती है। हिंदी में दो की तुलना हेतु - विशेषण से पहले 'अधिक' जोड़ा जाता है। अन्य सभी से तुलना हेतु विशेषण से पूर्व 'सबसे' जोड़ा जाता है।

सुरेश अपने भाई से अधिक बुद्धिमान है। (more intelligent)

सुरेश अपने भाइयों में सबसे बुद्धिमान है। (the most intelligent)

'अधिक' और 'सबसे' यथास्थान सभी गुणवाचक विशेषणों के साथ जोड़े जाते हैं।

संस्कृत में 'तर' और 'तम' लगाने की प्रवृत्ति रही है। संस्कृत के तत्सम विशेषणों में 'तर', 'तम' जोड़े जाते हैं।

Adjective	Comparative	Superlative
अधिक	अधिकतर	अधिकतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
निकट	निकटतर	निकटतम
न्यून	न्यूनतर	न्यूनतम

2.12 सर्वनाम

पूर्व वाक्य या पूर्व संदर्भ में आए संज्ञा शब्द के बदले आने वाला शब्द 'सर्वनाम' कहलाता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें :-

- (1) शिवकुमार और पंकज जब रायपुर आए तो वे पहले पुस्तक मेला देखने के लिए गए।
- (2) होटल के मैनेजर ने श्यामलाल से पूछा, "आप यहाँ कितने दिन रहेंगे ?"
- (3) श्यामलाल ने मैनेजर से कहा, "मैं रायपुर में तीन दिन रुकूँगा।"
- (4) दीपा आई तो थी पर वह कुछ नहीं बोली।
- (5) पिता जी ने गोपाल से कहा, "देखो, हम दोनों कल सुबह दिल्ली के लिए रवाना होंगे। तुम टिकट ले आओ।"
- (6) सुधीर को बधाई दे दो क्योंकि वह एम.ए. की परीक्षा में सर्वप्रथम आया है।

1		2	3
वाक्य संख्या	1. 2. 3. 4. 5. 6.	'वे' 'आप' 'मैं' 'वह' 'हम' 'तुम' 'वह'	संज्ञा शब्द शिवकुमार और पंकज के स्थान पर आया है। श्यामलाल के बदले आया है। श्यामलाल के बदले प्रयुक्त हुआ है। दीपा के बदले आया है। पिता जी और गोपाल के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है। गोपाल के लिए प्रयुक्त हुआ है। सुधीर के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है।

कालम 2 में दिखाए शब्द सर्वनाम शब्द हैं।

पुरुष (Person)	एकवचन (Singular)	बहुवचन (Plural)
उत्तम पुरुष - Ist Person	मैं - I	हम - We
मध्यम पुरुष - IInd Person	तू, तुम - You (familiar) आप - You (honorific)	आप - You
अन्य पुरुष - IIIrd Person	वह - he, वह - she, वह - it	वे - They

वे सर्वनाम शब्द 'पुरुष' या 'स्त्री' दोनों के लिए समान रूप से प्रयोग में आते हैं।

2.13 सर्वनामों के तिर्यक् रूप

कारक चिह्नों के कारण हुए रूप परिवर्तन (अगले पृष्ठ पर दी गई तालिका देखिए)

तालिका में मैं, हम, तू, तुम, आप, वह, वे पुरुषवाचक सर्वनाम हैं। इनके अतिरिक्त अन्य सर्वनाम इस प्रकार हैं—

(क) वह (that) वे (those)

यह (this) ये (these)

ये चारों निश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

यह पेंसिल है। ये पेंसिलें हैं।

वह दुकानदार है। वे मैकेनिक हैं।

(ख) घर के बाहर कोई खड़ा है। someone

आइए कुछ खा लें something

'कोई' और 'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

(ग) यह वही घड़ी है जो मुझे इनाम में मिली थी।

जो सोता है वह खोता है।

पुरुषवाचक सर्वनामों के तिर्थक रूप

कारक चिह्नों के कारण हुए रूप परिवर्तन

पुरुषवाचक सर्वनाम Personal Pronouns									
पुरुष वचन (Person Number)	सर्वनाम (Pro-noun)	परिवर्तित रूप (Change of form)	कर्ता - ने (Nominative)	कर्म - को (Accusative)	करण - से (Instrumental)	संप्रदाय - को, के लिए (Dative)	अपादान - से (Ablative)	संबंध - का, के, की (Possessive)	अधिकरण - में - in , पर - on (Locative)
उत्तम पुरुष एकवचन	मैं	मुझ, मेरा	मैंने	मुझको / मुझे	मुझसे	मुझको, मेरे लिए	मुझसे	मेरा, मेरे, मेरी	मुझमें, मुझ पर
उत्तम पुरुष बहुवचन	हम	-	हमने	हमको	हमसे	हमको / हमारे लिए	हमसे	हमारा, हमारे, हमारी	हममें, हम पर
मध्यम पुरुष एकवचन	तू तुम	तुझ	तूने तुमने	तुझको / तुझे तुमको	तुझसे तुमसे	तुझको / तेरे लिए तुमको, तुम्हारे लिए	तुझसे तुमसे	तेरा, तेरे, तेरी, तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी	तुझमें, तुझ पर, तुममें, तुम पर
मध्यम पुरुष बहुवचन	आप	-	आपने	आपको	आपसे	आपको / आपके लिए	आपसे	आपका, आपके, आपकी	आप में, आप पर
अन्य पुरुष एकवचन	वह	उस	उसने	उसको	उससे	उसको / उसके लिए	उससे	उसका, उसके, उसकी	उस में, उस पर
अन्य पुरुष बहुवचन	वे	उन	उन्होंने	उनको	उनसे	उनको / उनके लिए	उनसे	उनका, उनके, उनकी	उनमें, उन पर
एकवचन	यह	इस	इसने	इसको	इससे	इसको / इसके लिए	इससे	इसका, इसके, इसकी	इसमें, इस पर
बहुवचन	ये	इन	इन्होंने	इनको	इनसे	इनको / इनके लिए	इनसे	इनका, इनके, इनकी	इनमें, इन पर
एकवचन	कौन	किस	किसने	किसको	किससे	किसको / किसके लिए	किससे	किसका, किसके, किसकी	किसमें, किस पर
बहुवचन	कौन	किन	किन्होंने	किनको	किनसे	किनको / किनके लिए	किनसे	किनका, किनके, किनकी	किनमें, किन पर
एकवचन	जो	जिस	जिसने	जिसको	जिससे	जिसका / जिस के लिए	जिससे	जिसका, जिसके, जिसकी	जिसमें, जिस पर
बहुवचन	जो	जिन	जिनोंने	जिनको	जिनसे	जिनको / जिन के लिए	जिनसे	जिनका, जिनके, जिनकी	जिनमें, जिन पर
संज्ञवाचक Relative									
प्रश्नवाचक Interrogative									
संकेतवाचक Demonstrative									

उपर्युक्त वाक्यों में 'जो' पहले वाक्य में 'घड़ी' की जगह में और दूसरे वाक्य में 'वह' 'व्यक्ति' के लिए आया है। 'जो' संबंधवाचक सर्वनाम है। 'जो' एकवचन और बहुवचन दोनों में प्रयुक्त होता है।

(घ) घर में कौन है ? वहाँ क्या है ?

घर में पार्वती है। वहाँ एक कुआँ है।

कौन और क्या क्रमशः पार्वती और कुआँ के बदले प्रयुक्त हुए हैं—ये दोनों प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

(ङ) संख्याएँ भी विशेषण हैं यथा वहाँ तीन व्यक्ति बैठे हैं। ये संख्यावाचक विशेषण हैं।

2.14 निजवाचक सर्वनाम 'अपना'

'अपना' निजवाचक सर्वनाम है। निज का अंग्रेजी पर्याय हैं one's own. हिंदी में इसके पर्यायवाची शब्द हैं—स्वयं का, खुद का।

अपना / अपने / अपनी का प्रयोग हिंदी की अपनी विशेषता है।

'अपना' आकारांत विशेषण की तरह प्रयुक्त होता है। इसलिए यह 'आ', 'ए' और 'ई' नियम के अनुसार विशेष्य के लिंग-वचन से अन्वित होता है।

नीचे लिखे वाक्यों में 'अपना' के प्रयोग को अंग्रेजी में अनूदित वाक्यों के संदर्भ में देखिए—

राजेश	अपना	काम	करता है।	Rajesh does	<u>his</u> work.
जूली			करती है।	Julie does	<u>her</u> work.
तुम			करो।	You do	<u>your</u> work.
मैं			करूँगा।	I shall do	<u>my</u> work.
आप			कीजिए।	You do	<u>your</u> work.
हम			कर रहे हैं।	We are doing	<u>our</u> work.
वे			कब करेंगे ?	When will they do	<u>their</u> work ?

हिंदी और अनूदित अंग्रेजी वाक्यों की तुलना से स्पष्ट होगा कि 'अपना' शब्द 'अंग्रेजी' में my, our, your, his, her, their सभी का प्रतिनिधित्व कर रहा है।

कर्ता द्वारा स्वयं कार्य संपादन में 'स्वयं का' के पर्याय के रूप में 'अपना' प्रयुक्त होता है।

नीचे लिखे वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़ें

पहले तुम मुझे अपना परिचय दो, फिर मैं अपना परिचय दूँगा।

First you introduce yourself then I shall introduce myself.

इस दस्तावेज पर आप अपने हस्ताक्षर कीजिए फिर वे अपनी मुहर लगाएँगे।

You put your signature on this document then he will put his seal.

जब सभी यात्री अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गए तब चालक अपनी सीट पर बैठा।

When all the passengers were seated on their respective seats, the driver occupied his seat.

‘निज’ के पर्याय के रूप में ‘आप’ का प्रयोग। जैसे—

मैं वहाँ आप (खुद) चला जाऊँगा.

I myself will go there.

3.0 कहानी

आइए अब एक कहानी पढ़ें।

प्राणियों की सेवा भी ईश्वर भक्ति है

(1) बहुत पहले की बात है। आबू नाम का एक नेकदिल इन्सान था। उसका अधिकांश समय दीन-दुखियों की मदद करने और बीमारों की सेवा-सुश्रूषा में गुजरता था। इसी से उसे अपार संतोष मिलता था।

(2) एक रात वह सो रहा था। अचानक उसकी नींद खुली तो देखता क्या है कि घर में धीमा प्रकाश फैला हुआ है। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि एक देवदूत सोने की जिल्दवाली किताब में कुछ लिख रहा है। आबू ने देवदूत को प्रणाम किया और कहा, “महाशय आपका स्वागत है। मेरा सौभाग्य है कि आप मेरे गरीबखाने में आए।”

(3) देवदूत ने आबू की ओर देखा तक नहीं। आबू ने पूछा, “महाशय आप क्या लिख रहे हैं?”

देवदूत ने कहा, “आपसे इसका कोई मतलब नहीं।”

आबू – “फिर भी जानूँ तो, कि आप क्या लिख रहे हैं ?”

देवदूत – “मैं उन लोगों के नाम लिख रहा हूँ जो ईश्वर के सच्चे भक्त हैं। क्या आपको ईश्वर से प्यार है ?”

आबू – “जी नहीं, मैं तो पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन नहीं करता। मंदिर, मस्जिद या गिरजाघर कभी नहीं जाता। झूठ क्यों कहूँ कि मुझे ईश्वर से प्यार है।”

देवदूत – “तभी न कहा था कि आपका इस सूची से कोई लेना-देना नहीं है। इस सूची में उनका नाम है जिन्हें ईश्वर से प्यार है।”

आबू – “तो मेरा नाम उस सूची में लिख लेना जो प्राणिमात्र से प्यार करते हैं।”

बात अनसुनी करके देवदूत चला गया। देवदूत के जाने के बाद आबू फिर गहरी नींद में सो गया।

(4) दूसरी रात देवदूत फिर आबू के कमरे में आया। कमरे में पहले दिन से दुगुना प्रकाश था। देवदूत ने आबू से कहा, “प्रणाम आबू जी। आप धन्य हैं।”

आबू – “क्यों भला ?”

देवदूत – “भगवान ने दोनों सूचियाँ देखीं और उन्होंने ईश्वर-भक्तों में आपका नाम सबसे ऊपर लिख दिया।”

शब्दार्थ

पैरा 1	प्राणी (m)	living being	दीन-दुखी (adj)	afflicted
	सेवा (f)	service	मदद (f)	help सहायता
	ईश्वर (m)	God भगवान	बीमार (adj)	sick / ill
	भक्ति (f)	devotion	सेवा सुश्रूषा (f)	service / nursing
	नेकदिल (adj)	good hearted	समय (m)	time वक्त
	इन्सान (m)	person / man व्यक्ति	गुजरना (v)	to pass
पैरा 2	अचानक (adv)	suddenly	स्वागत (m)	welcome
	धीमा (adj)	slow	सौभाग्य (f)	good fortune
	प्रकाश (m)	light	भक्त (m)	devotee
	देवदूत (m)	messenger from God	जिल्द (f)	cover of a book
पैरा 3	सूची (f)	list	अनसुनी करना	not to pay any heed
			लेना-देना (m)	concern
पैरा 4	दुगना (adj)	twice / two fold	आप धन्य हैं	you are blessed

पाठ-2 : क्रिया पदबंध (प्रथम प्रश्न पत्र)

विषय सूची

1.0	क्रिया पदबंध	34
1.1	क्रिया के प्रकार	34
1.2	क्रिया : रूप रचना	36
1.2.1	संयुक्त क्रिया	36
1.2.2	रंजक क्रिया	37
1.2.3	संयुक्त क्रियाओं का निर्माण	38
1.2.4	नाम धातु	39
1.2.5	प्रेरणार्थक क्रिया	40
1.2.6	'लगना' क्रिया के विभिन्न रूप	41
2.0	वाच्य	41
3.0	काल	43
4.0	अर्थ / वृत्ति	44
	- आज्ञार्थक	44
	- संभावनार्थक	46
5.0	कहानी : भगवान बुद्ध और अंगुलिमाल	47
	शब्दावली	48

1.0 क्रिया पदबंध

जिससे किसी कार्य के करने का बोध हो उसे क्रिया कहते हैं। जैसे— दौड़ना, पढ़ना, देखना, खेलना, आना, जाना, इत्यादि।

1.1 क्रिया के प्रकार

(1) जिस क्रिया का फल किसी व्यक्ति या वस्तु पर नहीं पड़ता, केवल कर्ता पर पड़ता है उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे—

बच्चे हँस रहे हैं।

चिड़िया उड़ रही है।

सरला अभी आई है।

एलेन सो रही है।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त क्रियाएँ - हँसना, उड़ना, आना, सोना अकर्मक क्रियाएँ हैं क्योंकि इन कार्यों का फल अन्य व्यक्ति या वस्तु पर नहीं पड़ता। अर्थात् अकर्मक क्रियाओं में कर्म नहीं आता।

(2) निम्नलिखित वाक्यों की क्रियाओं को देखें :-

एलेन उपन्यास पढ़ रही है।

बच्चे टी.वी. में फिल्म देख रहे थे।

मनीषा हिंदी सीख रही है।

मजदूर मकान बना रहे हैं।

माता जी चिट्ठी लिख रही हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में क्रियाओं के कर्ता के अतिरिक्त एक कर्म की आवश्यकता होती है। अर्थ जानने के लिए कर्म की जानकारी प्रायः 'क्या' प्रश्न के उत्तर में मिलती है।

एलेन क्या पढ़ रही थी ? उत्तर : 'उपन्यास' - यह कर्म है।

बच्चे क्या देख रहे थे ? उत्तर : 'फिल्म' - यह कर्म है।

मनीषा क्या सीख रही है ? उत्तर : 'हिंदी' - यह कर्म है।

इस तरह की क्रियाएँ **सकर्मक क्रियाएँ** (Transitive verb) कहलाती हैं।

(3) कुछ क्रियाओं का आशय एक से अधिक कर्म (प्रायः दो) से स्पष्ट होता है जैसे—

किराएदार मकान-मालिक को किराया देता है।

पिता ने अपने पुत्र को रुपए भेजे।

सुनीता अपनी लड़की को कहानी सुनाती है।

ऊपर के वाक्य में 'देता है' क्रिया का कर्म है 'किराया'। जिसका उत्तर "क्या देता है?" प्रश्न से मिलता है। एक अतिरिक्त कर्म है मकान-मालिक जिसका उत्तर किसे देता है - प्रश्न से मिलता है। 'क्या' प्रश्न का उत्तर मुख्य / प्रधान कर्म है। 'किसको' प्रश्न का उत्तर गौण कर्म कहलाता है। ये

क्रियाएँ द्विकर्मक क्रियाएँ (Double Transitive) कहलाती हैं।

(4) हिंदी में 'हो' प्रायः सहायक क्रिया (Auxiliary verb) की भूमिका निभाता है। 'होना' का अंग्रेजी पर्याय 'to be' है। जिस तरह 'to be' आवश्यकतानुकूल am, is, are, were रूप लेता है उसी तरह 'हो' क्रिया - है, हैं, था-थे-थी, एगा, एँगे, एगी, एँगी में बदलती है।

'है, हैं' - क्रमशः वर्तमान, एकवचन और वर्तमान बहुवचन में आते हैं।

राम पढ़ता है। रजनी पढ़ती है। (वर्तमान, एकवचन)

रामेश्वर और राजेश पढ़ते हैं। (वर्तमान, पुल्लिंग, बहुवचन)

मीरा और रजनी पढ़ती हैं। (वर्तमान, स्त्रीलिंग, बहुवचन)

'था' - भूतकाल को बताता है।

सुरेश पढ़ रहा था। (पुल्लिंग, एकवचन)

सुधा पढ़ रही थी। (स्त्रीलिंग, एकवचन)

मुकेश और माधव पढ़ रहे थे। (पुल्लिंग, बहुवचन)

सुधा, माधवी और मीरा पढ़ रही थीं। (स्त्रीलिंग, बहुवचन)

'गा' - भविष्यत काल को बताता है।

चौकीदार बाजार जाएगा। (पुल्लिंग, एकवचन)

दोनों चौकीदार सामान खरीदने जाएँगे। (पुल्लिंग, बहुवचन)

एलेन कॉलेज जाएगी। (स्त्रीलिंग, एकवचन)

शारदा और एलेन कॉलेज जाएँगी। (स्त्रीलिंग, बहुवचन)

सर्वनाम + सहायक क्रिया 'हो'

				वर्तमान	भूत	भविष्यत
उत्तम पुरुष	मैं	एकवचन				
		पुल्लिंग	हिंदी सीख रहा	हूँ	था	ऊँगा (सीखूँगा)
		स्त्रीलिंग	हिंदी सीख रही	हूँ	थी	ऊँगी (सीखूँगी)
	हम	बहुवचन				
		पुल्लिंग	हिंदी सीख रहे	हैं	थे	एँगे (सीखेंगे)
		स्त्रीलिंग	हिंदी सीख रही	हैं	थीं	एँगी (सीखेंगी)
मध्यम पुरुष	तू	एकवचन				
		पुल्लिंग	हिंदी सीख रहा	है	था	एगा (सीखेगा)
		स्त्रीलिंग	हिंदी सीख रही	है	थी	एगी (सीखेगी)

				वर्तमान	भूत	भविष्यत
मध्यम पुरुष	तुम	एकवचन/बहुवचन				
		पुल्लिंग	हिंदी सीख रहे	हो	थे	ओगे (सीखोगे)
		स्त्रीलिंग	हिंदी सीख रही		थीं	ओगी (सीखोगी)
	आप	एकवचन				
		पुल्लिंग	हिंदी सीख रहे	हैं	थे	एँगे (सीखेंगे)
		स्त्रीलिंग	हिंदी सीख रही	हैं	थीं	एँगी (सीखेंगी)
अन्य पुरुष	वह	पु. एकवचन	सीख रहा	है	था	सीखेगा
		स्त्री. एकवचन	सीख रही	है	थी	सीखेगी
	वे	पु. एकवचन बहुवचन	सीख रहे	हैं	थे	सीखेंगे
		स्त्री. एकवचन बहुवचन	सीख रही	हैं	थीं	सीखेंगी

‘हो’ क्रिया मुख्य क्रिया के रूप में भी प्रयुक्त होती है ।

आकाश अणिमा तू	डॉक्टर सुंदर	है ।
तुम	समझदार	हो ।
आप वे	समझदार	हैं ।

1.2 क्रिया : रूप रचना

1.2.1 संयुक्त क्रिया

संयुक्त क्रिया का प्रयोग हिंदी की अपनी विशेषता है। संयुक्त क्रिया की रचना दो क्रियाओं के योग से होती है जिसमें प्रथम क्रिया मुख्य क्रिया के रूप में प्रयुक्त होती है जो मूल अर्थ का बोध कराती है जब कि दूसरी क्रिया सहायक होती है जो क्रिया के लिंग, वचन और काल को व्यक्त करती है।

उदाहरण—

सीता रो पड़ी।

मैंने किताब पढ़ ली।

इन वाक्यों में 'रो पड़ी' और 'पढ़ ली' संयुक्त क्रियाएँ हैं। पहले वाक्य में 'रो' और दूसरे वाक्य में 'पढ़' मुख्य क्रियाएँ तथा 'पड़ी' और 'ली' सहायक क्रियाएँ हैं।

1.2.2 रंजक क्रिया (helping verb)

संयुक्त क्रिया में प्रयुक्त होने वाली मुख्य क्रिया की सहायक क्रिया रंजक क्रिया (Intensifier) कहलाती है। संयुक्त क्रिया में प्रयुक्त होने वाली सहायक क्रिया मुख्य क्रिया के भाव को अतिरंजित (exaggerate) करने के कारण रंजक क्रिया कहलाती है।

बच्चा गिर पड़ा।

मैंने गेंद फेंक दी।

इन वाक्यों में 'पड़ा' और 'दी' रंजक क्रियाएँ हैं।

रंजक क्रियाओं की सूची लंबी है। इनमें से एक, दो को छोड़कर सभी रंजक क्रियाएँ प्रायः स्वतंत्र क्रियाओं की तरह भी प्रयुक्त होती हैं।

ये क्रियाएँ हैं—

आना, जाना, उठना, बैठना, देना, लेना, डालना, रखना, लगना, रहना, पड़ना, सकना, चुकना, आदि। इनमें से 'सकना' और 'चुकना' ऐसी क्रियाएँ हैं जिनका स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।

- (i) 'डालना' रंजक क्रिया के रूप में किसी कार्य के अचानक या जल्दी में हो जाने, बिना विचारे कर डालने / देने को व्यक्त करती है।

सुधा ने गुस्से में चिट्ठी फाड़ डाली।

- (tore away)

आपने यह क्या कर डाला ?

- (done inadvertently)

मैंने यह उपन्यास कल रात ही पढ़ डाला था। - (finished reading)

- (ii) 'उठना' तथा 'बैठना' रंजक क्रियाओं से किसी कार्य का अविवेक में या जल्दबाजी में करना या होना अभिव्यक्त होता है।

सामने डाकू को देखकर रूपा डर से चिल्ला उठी।

सुनील यह तुम क्या कर बैठे ?

निशा को होटल में देखकर मनोज बौखला उठा।

- (iii) 'पड़ना' का प्रयोग रंजक क्रिया के रूप में (1) अचानक करने, (2) कार्य प्रारंभ करने के अर्थ में किया जाता है।

बच्चा 'आग-आग' चिल्ला पड़ा / उठा। -

(cried out)

मेरे कहने पर वह तुरंत चल पड़ा। -

(right then he made his way
Immediately set out)

गाड़ी चल पड़ी। -

(started moving)

- (iv) 'सकना' सामर्थ्य या योग्यता का बोध कराता है।
 मंत्री जी सभा में नहीं आ सकेंगे । (will not be able to come)
 मिल्खा सिंह लगातार 15 किलोमीटर दौड़ सकता है। (can run 15 kilometre at a stretch i.e. without stopping)
 मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ ? (What can I do for you?)
- (v) 'लेना' और 'देना' दोनों रंजक क्रिया के रूप में 'कार्य संपन्नता' के द्योतक हैं।
 राधेश्याम जी ने मकान किराए पर दे दिया। (gave away, rented out)
 राधेश्याम जी ने मकान किराए पर ले लिया। (took the house on rent for self)
 'देना' सहायक क्रिया किन्हीं स्थितियों में 'अनुमति' का बोध भी कराती है।
 माली को जाने दो।
 बाहर बैठे व्यक्तियों को अंदर आने दो।
- (vi) 'चुकना' सहायक क्रिया कार्य पूरा होने का संकेत देती है।
 क्या बच्चे खाना खा चुके हैं ? (have children taken their meals)
 यदि आप कह चुके हों तो मैं कुछ कहूँ। (If you have finished speaking I shall put up my views)
 जब आप स्टेशन पहुँचे तो गाड़ी आ चुकी थी। (train had already arrived)
- (vii) 'आना' और 'जाना' दोनों रंजकता की दृष्टि से मुख्य क्रिया द्वारा वांछित कार्य के पूरा होने / करने का संकेत देती है।
 गाड़ी समय से पहले आ गई। (the train came before time)
 अखबार वाला अखबार दे गया।
 वह पेटू दोनों का खाना अकेले खा गया।
- (viii) 'लगना' रंजक क्रिया कार्य प्रारंभ होने का संकेत देती है। यह क्रिया के साथ 'ने' लगकर प्रयुक्त होती है।
 डाकुओं को देखते ही लोग घरों में छिपने लगे। (started hiding themselves)
 मेरे आते ही आप क्यों जाने लगे ? (started going)

1.2.3 संयुक्त क्रियाओं का निर्माण

- (i) क्रिया का मूल रूप + रंजक क्रिया
- | | |
|------------|--|
| कर + डालना | मैंने आपके सारे पत्र कल रात ही टाइप <u>कर डाले</u> थे। |
| दे + आना | नौकर उनका अखबार वापस <u>दे आया</u> । |
| सो + जाना | बच्चे अब तक <u>सो गए</u> होंगे। |

चल + सकना | बीमारी के कारण वह चल भी नहीं सकता।
खा + चुकना | जब मेहमान आए, हम खाना खा चुके थे।

(II) कृदंत रूप + रंजक क्रिया

(i) वर्तमानकालिक कृदंत रूप (Present participle) + रंजक क्रिया

चलते + जाना | थक जाने के बावजूद हम चलते गए।

सोते + रहना | आप देर तक क्यों सोते रहते हैं?

लेते + आना | वापस आते समय छतरी लेते आना।

(ii) भूतकालिक कृदंत + रंजक क्रिया

पड़ा + रह | वह दिन-रात घर में पड़ा रहता है।

लगा + रह | वह चौबीसों घंटे काम में लगा रहता है।

(iii) क्रिया + ना + रंजक क्रिया

जागना + पड़ना | परीक्षा के कारण हमें देर रात तक जागना पड़ता है।

आना + चाहिए | कर्मचारियों को ठीक समय पर दफ्तर आना चाहिए।

(iv) क्रिया + ने + रंजक क्रिया

रोने + लगना | बिल्ली को देखते ही बच्चा रोने लगा।

आने + देना | जिसके पास पहचान पत्र हो, उन्हें ही आने दो।

1.2.4 नाम धातु

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण से बनी क्रियाओं को नाम धातु कहते हैं।

(क)	संज्ञा शब्द	नाम धातु
	शर्म	शर्माना
	लाज	लजाना
	हाथ	हथियाना
	लालच	ललचाना
	बात	बतियाना
(ख)	विशेषण	नाम धातु
	साठ	सठियाना
	गरम	गरमाना
(ग)	सर्वनाम	नाम धातु
	अपना	अपनाना

1.2.5 प्रेरणार्थक क्रिया (causative verb)

सामान्यतः वाक्य में क्रिया का करनेवाला कर्ता subject होता है। कुछ स्थितियों में कर्ता की प्रेरणा से कोई अन्य व्यक्ति कार्य संपन्न करता है अर्थात् इसमें दो कर्ता होते हैं। इन स्थितियों में मूल क्रिया के रूप में कुछ परिवर्तन होता है। यही क्रिया प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है। नीचे लिखे वाक्यों से यह बात अधिक स्पष्ट हो सकेगी।

(क) मजदूर मकान बना रहे हैं।

(ख) ठेकेदार मजदूर से मकान बनवा रहा है।

वाक्य (क) में 'मजदूर', 'बनाना' क्रिया का कर्ता है। वाक्य (ख) में मकान बनाने की प्रेरणा मजदूरों को ठेकेदार देता है। (ख) दूसरे वाक्य में कार्य स्वयं न करके ठेकेदार मजदूर से करवा रहा है इसलिए 'बनवा' प्रेरणार्थक क्रिया है।

सकर्मक क्रिया	प्रेरणार्थक क्रिया
बजाना to ring	बजवाना to get rung (by someone else)
बनाना to make, to repair	बनवाना to get made / repaired
लिखना to write	लिखवाना to get written
उठाना to raise, to lift	उठवाना to get raised / lifted
बुलाना to call	बुलवाना to send for (through an agent)

कुछ सकर्मक क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप में दीर्घ स्वर को ह्रस्व करके - वा जोड़ा जाता है।

फाड़ना to tear	फड़वाना to get torn
खींचना to pull, to draw	खिंचवाना to get pulled / drawn
भूनना to roast	भुनवाना to get roasted (Note : the initial long 'ई' and long 'ऊ' are shortened)

कुछ अनियमित रूप

बेचना to sell	बिकवाना to get sold
रोकना to prevent	रुकवाना to get prevented
देना to give	दिलवाना / दिलाना cause to be given
खिलाना to feed	खिलवाना cause to get fed

दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त प्रेरणार्थक क्रिया वाले वाक्य—

- यात्री कुली से ट्रेन में सामान रखवा रहे हैं।
- ये सारी सजावट की वस्तुएँ हमने दिल्ली से मँगवाई थीं।

3. मेरे हाथ में दर्द था, इसलिए मैंने गिरीश से पत्र लिखवाया।

4. हम सब अपने कपड़े दर्जी से सिलवाते हैं।

1.2.6 'लगना' क्रिया के विभिन्न रूप

हिंदी में 'लग' ऐसी क्रिया है जो सहायक क्रिया और मुख्य क्रिया दोनों रूपों में प्रयुक्त होती है। इसका प्रयोग जटिल (complex) होते हुए भी रोचक (interesting) है। नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए :-

Sentence	Sense conveyed
मुझे प्यास लग रही है।	physical need
उसे चोट लगी।	physical harm
नाव किनारे लगी।	contact
राधा समझदार लगती है।	seems, appears to be
हमें फूल अच्छे लगते हैं।	liking
इस पौधे में छोटे फूल लगते हैं।	bearing
पौधा नहीं लगा।	taking root
इसे उठाने में ताकत लगती है।	requires force
रजनी मेरी भाभी लगती है।	relationship
मकान बनाने में बहुत पैसे लगते हैं।	investment / expenditure
चोर को पाँच कोड़े लगाओ।	punishment
गंदगी से बीमारी लगती है।	connection, infection
मेरा मकान रमेश के मकान से लगा है।	close by, nearest proximity
घर के चिराग से घर को आग लग गई।	catch
बीमार को इंजेक्शन लगा।	insertion, injecting
एक साल का बच्चा चलने लगता है।	commencement

2.0 वाच्य (voice)

वाच्य क्रिया का वह रूप है जिससे यह ज्ञात होता है कि उसका प्रभाव कर्ता पर पड़ता है या कर्म पर या किसी भाव पर। इसी आधार पर हिंदी में तीन वाच्य होते हैं। ये हैं -

कर्तृवाच्य (Active voice), कर्मवाच्य (passive voice), भाववाच्य (Impersonal voice)

(1) भाषा में कर्तृवाच्य की प्रधानता अधिक होती है यथा-

हम सब हिंदी सीख रहे हैं।

डॉक्टर रोगियों की जाँच कर रहे थे।

हमने नेता जी का भाषण सुना।

- (2) कर्मवाच्य (passive Voice) केवल सकर्मक क्रियाओं का हो सकता है। कर्मवाच्य में कर्म को प्रधानता दी जाती है और क्रिया भी लिंग, वचन और कर्म के अनुसार बदलती जाती है। प्रायः निम्नलिखित स्थितियों में कर्मवाच्य का प्रयोग होता है :-

- (i) जब क्रिया का कर्ता अज्ञात (not known) हो, या जब कर्ता के विषय में जानकारी देना जरूरी न हो जैसे-

सभी आंतकवादी पकड़े गए।

पंचायत में सभी गाँव वाले बुलाए जाएँगे।

बंगाल में चावल खाया जाता है।

- (ii) सरकारी कामकाज की भाषा में यथा-

इस पत्र के द्वारा आपको सूचना दी जाती है कि।

डॉ. मनहर को आदेश दिया जाता है कि वे रायपुर के जिला अस्पताल में अपना पदभार (charge) ग्रहण कर लें।

इस रेल दुर्घटना की जाँच कराई जाए।

उपर्युक्त वाक्यों में कर्ता का कहीं भी उल्लेख नहीं किया गया है। केवल कर्म का उल्लेख है जिसके बारे में जानकारी दी गई है।

नीचे दिए गए कर्तृवाच्य और उनके कर्मवाच्य से बने वाक्यों को देखें :-

कर्तृवाच्य - शर्मा जी ने यह लेख भेजा।

कर्मवाच्य - यह लेख शर्मा जी के द्वारा भेजा गया।

कर्तृवाच्य - स्वामी जी योगाभ्यास सिखाएँगे।

कर्मवाच्य - स्वामी जी द्वारा योगाभ्यास सिखाया जाएगा।

कर्तृवाच्य - 'अमर संदेश' ने यह खबर प्रकाशित की।

कर्मवाच्य - यह खबर 'अमर संदेश' द्वारा प्रकाशित की गई।

कर्तृवाच्य (Active voice) अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं से बन सकते हैं। कर्मवाच्य (Passive voice) केवल सकर्मक क्रिया से बनता है क्योंकि इसमें कर्म की प्रधानता होती है और इसी से क्रिया की अन्विति होती है। कर्तृवाच्य वाले वाक्य का 'कर्म' (object) कर्मवाच्य वाले वाक्य में कर्ता बन जाता है।

कर्तृवाच्य - शोभा पत्र टाइप करती है।

(कर्ता) (कर्म)

कर्मवाच्य - पत्र शोभा द्वारा टाइप किया जाता है।



कर्तृवाच्य के कर्ता के साथ 'के द्वारा' या 'से' लगाकर कर्मवाच्यीय वाक्य बनाया जाता है।

कर्मवाच्य वाले वाक्य में मुख्य क्रिया के भूतकाल रूप के साथ सहायक क्रिया 'जा' का प्रयोग होता है। वाक्य का काल सहायक क्रिया द्वारा सूचित होता है।

- (3) भाववाच्य (Impersonal Voice) वाले वाक्य में कर्ता का उद्देश्य (Subject) प्रायः कर्ता या कर्म नहीं होता, उसमें किसी भाव (idea, theme) को कर्ता के रूप में दिया जाता है। भाववाच्य वाले वाक्य प्रायः अकर्मक क्रिया से बनते हैं। साथ ही अधिकांश में अशक्यता दर्शाने का भाव होता है।

यहाँ बैठा नहीं जाएगा।

बीमार से चला नहीं जाता।

सकर्मक क्रिया से बने वाच्यवाले वाक्य –

मुझसे राधा का दुख देखा नहीं जाता।

माता जी से नौकरानी की दुखभरी कहानी सुनी नहीं गई।

3.0 काल (Tense)

वाक्य में कार्य के घटित होने का समय (time of accomplishment of any activity) क्रिया का काल (tense) कहलाता है। काल तीन होते हैं—

1. वर्तमान काल (Present tense)
2. भूतकाल (past tense)
3. भविष्यत काल (future tense)

वर्तमान – चलते हुए समय का, भूतकाल – बीते हुए समय का, और भविष्यतकाल – आगे आने वाले समय का द्योतक है।

रेलगाड़ी आ रही है। - वर्तमानकाल

रेलगाड़ी कल देर से आई थी। - भूतकाल

रेलगाड़ी देर से आएगी। - भविष्यतकाल

समय की सूक्ष्मता का बोध कराने के लिए इन तीनों कालों के भेद किए गए हैं। इन कालों को निम्नलिखित आरेख में दर्शाया गया है :-

काल tense	सामान्य simple	अपूर्ण continuous	पूर्ण perfect
वर्तमान Present	राजेश जाता है। Rajesh goes.	राजेश जा रहा है। Rajesh is going.	राजेश गया है। Rajesh has gone.
भूत Past	राजेश गया। Rajesh went.	राजेश जा रहा था। Rajesh was going.	राजेश गया था। Rajesh had gone.

भविष्यत Future	राजेश जाएगा। Rajesh will go.	राजेश जा रहा होगा Rajesh will be going.	राजेश जा चुका होगा। Rajesh would have gone.
-------------------	---------------------------------	--	--

4.0 अर्थ / वृत्ति (mood)

क्रिया के जिस रूप से कार्य के संपन्न होने की रीति या विधि का ज्ञान हो उसे 'अर्थ / वृत्ति' कहते हैं।

आज्ञार्थक (Imperative)

क्रिया के जिस रूप से आज्ञा / आदेश (order), प्रार्थना (request) या अनुदेश (instruction) आदि का बोध हो उसे आज्ञार्थक कहते हैं। इसमें कर्ता के रूप में मध्यम पुरुष सर्वनाम - तू, तुम, आप का प्रयोग होता है। इनके लिए क्रिया के निम्नलिखित रूपों का प्रयोग होता है :-

- (1) 'तू' के साथ क्रिया का धातु रूप रखा जाता है; यथा—
तू जा, तू पढ़, तू सो, तू पानी ला।
- (2) 'तुम' के साथ क्रिया के धातु रूप में 'ओ' जोड़ा जाता है; यथा—
तुम जाओ, तुम पढ़ो, तुम सोओ, तुम पानी लाओ।
- (3) 'आप' के साथ क्रिया के धातु रूप में 'इए' जोड़ा जाता है; जैसे— आप जाइए, आप पढ़िए, आप सोइए, आप पानी लाइए।

किसी को 'तू' संबोधन करना घनिष्ठता (intimacy) तथा अनौपचारिकता (informality) का द्योतक है।

'तू' का प्रयोग - अपने से प्रायः छोटे व्यक्ति तथा बहुत नजदीकी मित्र (very intimate friend) के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग प्रायः ईश्वर के लिए भी किया जाता है। यह अंग्रेजी के thou का पर्याय है। उदाहरण -

सुरेश, तू नाश्ता कर और अपना पाठ पढ़।
बेटी सरला, तू दवा खा, दूध पी और फिर सो।
पूनम, तू बाहर जा और बाग में खेल।

- (4) 'तू' के बिना भी वाक्य बनाए जाते हैं; यथा—
बाहर जा, यहाँ बैठ। 'तू' का प्रयोग बहुवचन में नहीं होता।
- (5) 'तुम' का प्रयोग सामान्यतः बराबरी (equality) निकटता (intimacy) का बोध कराता है। यह एकवचन और बहुवचन दोनों में प्रयुक्त होता है। बहुवचन रूप में 'तुम' के साथ 'लोग' भी जोड़ा जा सकता है।

राकेश तुम यहीं बैठो।
राकेश और सलमा, तुम लोग यहीं रहो।
दिवाकर, मनोज, शिवानी तुम लोग बाजार जाओ और सामान लाओ।

- (6) 'आप' आदरसूचक शब्द है। अपने से बड़े, सामाजिक स्तर पर अपने से उच्च और अपरिचित व्यक्ति को संबोधित करने के लिए 'आप' का प्रयोग किया जाता है।

'आप' के साथ क्रिया का रूप 'क्रिया का मूल रूप + इए' होता है।

आप अंदर आइए। यहाँ बैठिए। सामाचारपत्र पढ़िए / लीजिए।

चाय पीजिए। जल्दी कीजिए। कप मुझे दीजिए।

इन वाक्यों में ले, पी, कर, दे क्रियाओं के रूप क्रमशः लीजिए, पीजिए, कीजिए और दीजिए हैं जब कि अन्य क्रियाएँ 'इए' लगाकर बनाई जाती हैं।

- (7) निषेधात्मक वाक्य बनाने के लिए प्रायः 'न' और 'मत' का प्रयोग किया जाता है। 'न' का प्रयोग 'आप' के साथ और 'मत' का प्रयोग 'तू' और 'तुम' के साथ किया जाता है। जैसे—

आप मीटिंग में न जाइए।

आप खाना न खाइए।

तुम उसे कुछ मत बताओ।

पूनम, तू शोर मत कर।

सुधा, तू अभी बाहर मत जा।

- (8) क्रिया + ना आज्ञार्थक के रूप में—

यह सामान्य सुझाव, मशविरा या अनुदेश दर्शाता है—यह प्रायः 'तू' और 'तुम' के साथ प्रयुक्त होता है। यथा—

तुम निदेशक (Director) महोदय से मिल लेना।

मुझे बताना कि वे क्या चाहते हैं।

तू प्रदर्शनी में किसी वस्तु को मत छूना / मेरे आने तक गेट पर रहना।

- (9) 'क्रिया + इएगा' का प्रयोग आज्ञार्थक में—

इस रूप का प्रयोग कभी-कभी आदरसूचक 'आप' के साथ भी किया जाता है—

आप पहले खाना खा लीजिए, फिर घर जाइएगा।

जब आप दफ्तर जाएँ तो मेरी छुट्टी की अर्जी (application) मैनेजर साहब को दे दीजिएगा।

आप कल फोन कीजिएगा।

आज्ञार्थक के अंतर्गत —

'तू' के साथ क्रिया का 'धातुरूप' प्रयुक्त होता है।

'तुम' के साथ 'क्रिया का धातुरूप + ओ' का प्रयोग किया जाता है।

'आप' के साथ, 'क्रिया का धातुरूप + इए' का प्रयोग होता है।

- (10) आज्ञार्थक के रूप में संभावनार्थक (subjunctive) का प्रयोग कार्यालयीन पत्र व्यवहार में सामान्य आदेश के रूप में संभावनार्थक क्रिया का प्रयोग होता है। यथा—

फाइल तुरंत भेजें।

मीटिंग आज ही बुलाएँ।

दिनांक 05-12-2015 को दी गई टिप्पणी के अनुसार कार्रवाई करें।

संभावनार्थक (Subjunctive Mood)

- (1) क्रिया के संभावनार्थक रूप से आशंका, संदेह (doubt), इच्छा (wish), नम्र अनुदेश (polite instruction), अनुज्ञा (permission), शर्त (condition), प्रयोजन (purpose) आदि का बोध होता है।

इसमें क्रिया एकारांत (-ए ending) आती है जो बहुवचन में 'एँ' में बदलती है।

- (i) शायद आज रात को पानी बरसे ।

(It may rain tonight.)

हो सकता है गाड़ी देर से आए ।

(May be the train comes late.)

शायद निदेशक महोदय अगले माह छुट्टी पर जाएँ।

(May be the Director will proceed on leave next month.)

- (ii) आप शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करें ।

(May you recover soon.)

तुम्हें यह नौकरी मिल जाए ।

(I wish you get this job.)

- (iii) अपनी जगह से कोई न हिले।

(No one will move from his place.)

चर्चा के अनुसार मसौदा प्रस्तुत करें।

(please put up draft as discussed.)

- (iv) क्या हम भी जाएँ ?

क्या भगवानदीन यहाँ रुके ?

- (v) गाड़ी तेज चलाओ ताकि हम ठीक समय पर स्टेशन पहुँच सकें।

टाइपिस्ट सारे पत्र अभी टाइप करे ताकि वे आज ही भेजे जा सकें।

- (vi) अगर राधिका पूछे तो बता देना मैं चला गया ।

यदि बुखार न आए तो दवा बंद कर देना।

2. सर्वनामों के साथ संभावनार्थक क्रियारूपों का चार्ट नीचे दिया जा रहा है—

पुरुष person	वचन Number	क्रिया का मूल (धातु रूप + प्रत्यय)	उदाहरण example
उत्तम पुरुष First person	एकवचन - मैं	खा+ ऊँ	मैं खाऊँ ।
	बहुवचन - हम	खा + ऐँ	हम खाएँ ।
मध्यम पुरुष Second Person	एकवचन - तू	खा + ए	तू खाए।
	एकवचन - तुम	खा + ओ	तुम खाओ।
	बहुवचन - तुम		
	एकवचन - आप	खा + ऐँ	आप खाएँ।
	बहुवचन - आप		
अन्य पुरुष Third Person	एकवचन - वह	खा + ए	वह खाए।
	बहुवचन - वे	खा + ऐँ	वे खाएँ।

5.0 कहानी

भगवान बुद्ध और अंगुलिमाल

1. अंगुलिमाल एक डाकू था। वह जंगल में रहता था। जंगल से होकर गुजरने वाले यात्रियों को वह पकड़ लेता था और उन्हें मार डालता था। उन यात्रियों को मारकर वह उनकी अँगुलियाँ काट लेता था। वह उन अँगुलियों की माला बनाकर अपने गले में पहन लेता था, इसलिए लोग उसे अँगुलिमाल कहते थे। आसपास के लोग उससे बहुत डरते थे।
2. एक बार भगवान बुद्ध जंगल के पास के एक गाँव में आए। उस गाँव के लोगों ने अंगुलिमाल के बारे में उनसे चर्चा की। उन्होंने रो-रोकर उसकी क्रूरता के किस्से सुनाए। भगवान बुद्ध ने लोगों की बातें बड़े ध्यान से सुनीं और उन्हें धीरज बँधाया।
3. दूसरे दिन भगवान बुद्ध उसी जंगल की ओर चल दिए। लोगों ने उन्हें वहाँ जाने के लिए मना किया, लेकिन वे नहीं माने।
4. बुद्ध अंगुलिमाल के इलाके में पहुँचे। अंगुलिमाल ने उन्हें दूर से देखा। वह उन्हें मारने के लिए उनके पास आ गया।
फिर कहा, “रुक जाओ।”
बुद्ध ने कहा - “लो, मैं रुक गया। तुम कब रुकोगे ?”
अंगुलिमाल इस सवाल पर सोच में पड़ गया। फिर बोला - “मैं समझा नहीं ?”
5. भगवान बुद्ध ने बड़े प्रेम से अंगुलिमाल से कहा - “सुनो भाई, मेरा एक काम कर दो।

उस पेड़ से मेरे लिए चार पत्ते तोड़कर ला दो।”

मारना और काटना तो अंगुलिमाल का रोज का काम था। वह दौड़कर गया और शीघ्र ही पेड़ से चार पत्ते तोड़ लाया।

6. भगवान बुद्ध ने उससे फिर कहा - “अब एक काम और कर दो, भाई। तुम इन पत्तों को पेड़ की उसी शाखा में फिर से लगा आओ।”
7. अंगुलिमाल अचंभे में पड़ गया। वह बोला - “यह कैसे हो सकता है? कहीं टूटा हुआ पत्ता भी फिर से शाखा में लग सकता है ?”
8. बुद्ध ने कहा - “तुमने देखा कि टूटी हुई चीज दुबारा नहीं जुड़ सकती। तुम लोगों के सिर काटते हो, क्या तुम उन्हें दुबारा जोड़ सकते हो ? नहीं। तब तुम लोगों की हत्या क्यों करते हो ? हम दूसरों को जीवन दे नहीं सकते तो हमें उनके प्राण लेने का भी कोई अधिकार नहीं है।”
9. बुद्ध के उपदेश का अंगुलिमाल पर गहरा प्रभाव पड़ा। वह जान गया कि उसे दूसरों की हत्या करने का कोई अधिकार नहीं है। वह अपनी गलतियों पर पछताने लगा। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। भगवान बुद्ध के शब्दों ने उसके जीवन की दिशा ही बदल दी। उसने हिंसा करना हमेशा के लिए छोड़ दिया और भगवान बुद्ध की शरण में आ गया।

शब्दावली Vocabulary

पैरा 1	डाकू	dacoit
	से होकर	through
	गुजरना	to pass
	अँगुली	finger
	आसपास	nearby
पैरा 2	चर्चा करना	to discuss
	क्रूरता	cruelty
	किस्सा	tale
	धीरज बँधाना	to console
पैरा 3	मना करना	to forbid
	मानना	to agree
पैरा 4	इलाका	area / locality
	रुक जाना	to stop

पैरा 5	तोड़ना	to pluck
पैरा 7	शाखा	branch
	लगाना	to fix
पैरा 8	अचंभा	surprise
	दुबारा	again
	अधिकार	right
पैरा 9	गहरा	deep
	प्रभाव	impact
	पछताना	to repent
	आँसू	tears
	बहना	to flow
	दिशा	direction
	शरण में आना	to surrender

पाठ-3 : क्रिया विशेषण, पदबंध तथा अन्विति व्यवस्था
(प्रथम प्रश्न पत्र)

विषय सूची

1.0	क्रिया विशेषण, पदबंध तथा अन्विति व्यवस्था	51
1.1	क्रिया विशेषण : परिभाषा तथा विशेषता	51
1.2	क्रिया विशेषण के प्रकार	51
1.2.1	कालवाचक क्रिया विशेषण	51
1.2.2	स्थानवाचक क्रिया विशेषण	52
1.2.3	रीतिवाचक क्रिया विशेषण	52
1.2.4	परिमाणवाचक क्रिया विशेषण	53
1.3	क्रिया विशेषणों के रूप	53
2.0	अन्विति	54
2.1	कर्ता और क्रिया की अन्विति	54
2.2	कर्म और क्रिया की अन्विति	55
2.3	विशेषण और विशेष्य की अन्विति	56
3.0	सह-संबंधवाचक	56
4.0	समुच्चयबोधक अव्यय	58
5.0	हिंदी की कुछ विशिष्ट संरचनाएँ	59
5.1	'कर्ता + को' संरचना	59
5.2	'कर्ता + ने' संरचना	61
6.0	नाटक : परीक्षा	64
	शब्दावली	66

1.0 क्रिया विशेषण, पदबंध तथा अन्विति व्यवस्था

1.1 क्रिया विशेषण : परिभाषा तथा विशेषता

क्रिया विशेषण वह अविकारी शब्द है जिसमें लिंग, वचन, पुरुष, काल, आदि की दृष्टि से कोई रूप परिवर्तन नहीं होता। यह क्रिया की, विशेषण की तथा किसी अन्य क्रिया विशेषण की विशेषता बताता है। जैसे—

शेर तेज दौड़ता है। वाक्य में 'तेज' शब्द 'दौड़ता' क्रिया की विशेषता बताता है। अतएव 'तेज' शब्द क्रिया विशेषण है। शेर कैसे दौड़ता है - 'तेज'

क्रिया विशेषण अव्यय है अर्थात् उसके रूप में परिवर्तन नहीं होता, चाहे विशेष्य क्रिया पुल्लिंग हो या स्त्रीलिंग, एकवचन हो या बहुवचन।

यह लड़का तेज दौड़ता है।

ये लड़के तेज दौड़ते हैं।

यह बालिका तेज दौड़ती है।

ये बालिकाएँ तेज दौड़ती हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में 'तेज' क्रिया विशेषण है और चारों वाक्यों में उसका रूप नहीं बदलता है।

क्रिया विशेषण किसी विशेषण की विशेषता भी बता सकता है, जैसे—

रमा बहुत खुश हुई।

राधा अत्यंत दुखी है।

यह स्थान अधिक सुंदर है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'खुश, दुखी, सुंदर' विशेषण हैं। 'बहुत, अत्यंत, अधिक' क्रिया विशेषण हैं और ये क्रमशः खुश, दुखी तथा सुंदर विशेषणों की विशेषता बताते हैं।

क्रिया विशेषण अन्य क्रिया विशेषण की विशेषता भी बताता है, जैसे—

रश्मि बहुत धीरे चलती है।

चीता अत्यधिक तेज दौड़ता है।

यह गाड़ी प्रायः देर से आती है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'धीरे, तेज, देर से' क्रिया विशेषण हैं। 'बहुत, अत्यधिक, प्रायः' भी क्रिया विशेषण हैं और क्रिया विशेषणों की विशेषता बताते हैं।

1.2 क्रिया विशेषण के प्रकार

1.2.1 कालवाचक क्रिया विशेषण

कालवाचक क्रिया विशेषण क्रिया की अवधि, काल या समय का बोध कराता है। यथा—

देवव्रत कल पाँच बजे आया।

रेलगाड़ी देर से आएगी।

वह इस बाग में हमेशा आती है।

नेहरु जी इस भवन में बीस साल रहे।

झोपड़ियों में रात को आग लगी।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द क्रिया विशेषण हैं और वे कार्य के समय के संबंध में सूचना देते हैं इसलिए ये क्रिया विशेषण कालवाचक क्रिया विशेषण की कोटि में आते हैं।

‘कब’ का उत्तर दर्शाने वाला क्रिया विशेषण ‘कालवाचक क्रिया विशेषण’ होता है।

अन्य कालवाचक क्रिया विशेषण हैं- आज, सुबह, तुरंत, बहुधा, प्रतिदिन, कभी-कभी, सर्वदा, हमेशा, कल, पहले, अक्सर, फौरन इत्यादि।

1.2.2 स्थानवाचक क्रिया विशेषण

कार्य के स्थल की सूचना देने वाला क्रिया विशेषण स्थान वाचक क्रिया विशेषण कहलाता है। जैसे—

समीर का भाई पंक्ति में आगे खड़ा था।

निदेशक (Director) महोदय बाहर गए हैं।

चोर उधर भाग गए।

‘कहाँ’ या ‘किधर’ का उत्तर ‘स्थान’ को दर्शाता है अतएव इनके उत्तर में आया क्रिया विशेषण स्थान वाचक क्रिया विशेषण की कोटि में आता है।

कुछ स्थान वाचक क्रिया विशेषण हैं – वहाँ, सर्वत्र, नजदीक, दूर, पास इत्यादि।

1.2.3 रीतिवाचक क्रिया विशेषण

किसी कार्य की रीति / विधि / प्रकार / गति आदि का बोध कराने वाला क्रिया विशेषण ‘रीतिवाचक क्रिया विशेषण’ होता है। जैसे—

आपकी घड़ी धीरे चल रही है।

देखो, दीपक ध्यानपूर्वक पाठ पढ़ रहा है।

वह ऊबड़-खाबड़ (undulated) रास्ता हमने पैदल ही तय किया ।

कुत्ता अचानक झपटा।

कुछ प्रमुख रीतिवाचक क्रिया विशेषण हैं –

निश्चय, अवश्य, शायद, नहीं, कैसे, तो आदि।

कुछ उदाहरण देखिए—

श्यामलाल अवश्य आएगा।

शायद रेल देर से आए।

सुमन आती तो है।

1.2.4 परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

लड़की खूब रोई।

आप तो हमें बिल्कुल भूल गए।

वे आपसे बहुत डरते हैं।

लोग इससे अधिक पैसा चाहते हैं।

परिमाणवाचक क्रिया विशेषण 'कितना ?' प्रश्न के उत्तर रूप में प्राप्त होता है।

संस्कृत से आगत क्रिया विशेषण तत्सम रूप में प्रयुक्त होते हैं।

अकस्मात् - अकस्मात् बिजली चली गई।

प्रायः - वे प्रायः मेरे घर रुकते हैं।

कुछ अन्य संस्कृत क्रिया विशेषण हैं - कदाचित्, वस्तुतः, सदा, सर्वदा, वृथा, इत्यादि।

उर्दू से आगत कुछ विशेषण हैं - शायद , अक्सर, फौरन, नजदीक, हमेशा, जरूर, बिल्कुल इत्यादि।

1.3 क्रिया विशेषणों के रूप

क्रिया विशेषण की सूची लंबी है। ये कई रूपों में पदबंधों में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

(क) कुछ एकल शब्द

तुरंत, हमेशा, आज, कल, पहले

कालवाचक

बाहर, वहाँ, आगे, दूर, पास

स्थानवाचक

अचानक, पैदल, सचमुच, शायद, कैसे, न, नहीं

रीतिवाचक

बहुत, अधिक, खूब, बिल्कुल

परिमाणवाचक

(ख) कुछ पुनरुक्त शब्द

धीरे-धीरे, जल्दी-जल्दी, फटाफट, घर-घर, बार-बार, धड़ाधड़, जहाँ-जहाँ, ठीक-ठाक, जाते-जाते, देश-विदेश, साफ-साफ, रातों-रात, कहीं-कहीं, इधर-उधर, आस-पास, दिन-दहाड़े, रात-दिन, इत्यादि।

(ग) कुछ परसर्गयुक्त शब्द

आराम से, सुविधापूर्वक, ध्यानपूर्वक, सावधानी से इत्यादि।

(घ) कुछ सहसंबंधवाचक

जब तब; जहाँ वहाँ

जैसे वैसे; जितना उतना

(ङ) कुछ अव्यय (निपात)

तो, ही, भी, भर

- (च) कुछ कृदंत
- (i) 'ने' में अंत होने वाले
पैर मुड़ने से
पैर मुड़ जाने के कारण मधुकर गिर पड़ा।
आपके आने से हम आश्वस्त हुए।
देर से आने के कारण गाड़ी छूट गई।
 - (ii) वर्तमानकालिक पुनरुक्त कृदंत
वह चलते-चलते गिर पड़ा।
मैं तुम्हारी बात सुनते-सुनते थक गया।
शीला पढ़ते-पढ़ते सो गई।
 - (iii) वर्तमानकालिक कृदंत
वह दौड़ते हुए चली गई।
मुझे देखते हुए राजू चला गया।
 - (iv) पूर्णकालिक कृदंत
खड़े होकर प्रार्थना करो।
पढ़कर सोओ।
 - (v) भूतकालिक कृदंत
पुष्पा लेटे हुए पढ़ रही थी।
सतीश आँखें बंद किए हुए लेटा था।

2.0 अन्विति (agreement)

अन्विति से तात्पर्य है दो पदों के बीच लिंग और वचन और पुरुष के आधार पर एकरूपता।
हिंदी भाषा में अन्विति तीन स्तरों पर होती है—

- कर्ता और क्रिया के स्तर पर
- कर्म और क्रिया के स्तर पर
- विशेषण और विशेष्य के स्तर पर

2.1 कर्ता और क्रिया की अन्विति

- (i) यदि कर्ता प्रत्यय रहित पुल्लिङ्ग एकवचन हो तो क्रिया पुल्लिङ्ग एकवचन में होगी, जैसे—
मनोज अपना सामान उठाकर स्टेशन चला गया।
- (ii) यदि कर्ता प्रत्यय रहित पुल्लिङ्ग बहुवचन हो तथा एकाधिक पुल्लिङ्ग प्राणिवाचक संज्ञाएँ

‘और’ से जुड़ीं हों तो क्रिया पुल्लिङ्ग बहुवचन में होगी। जैसे—

राजेश और मनोज बाग में खेल रहे थे।

हिरण और सियार जंगल में मिल-जुलकर रहते थे।

- (iii) यदि पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग प्राणिवाचक संज्ञाएँ कर्ता के रूप में प्रयुक्त हों तो क्रिया पुल्लिङ्ग बहुवचन में होगी। जैसे—

पति-पत्नी दोनों यात्रा के लिए निकल पड़े।

- (iv) यदि भिन्न-भिन्न लिंगों के दो या अधिक अप्राणिवाचक पद कर्ता के रूप में प्रयुक्त हों तो क्रिया की अन्विति प्रायः अंतिम पद के साथ होगी। जैसे—

उस महिला का माथा और आँखें सूजी हुई थीं।

- (v) जब एक से अधिक सर्वनाम कर्ता हों।

उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष के कर्ता के रूप में आने से क्रिया की अन्विति उत्तम पुरुष बहुवचन में होगी। जैसे—

तुम और हम साथ चलेंगे।

मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष कर्ता के रूप में आने से क्रिया की अन्विति मध्यम पुरुष से होगी जैसे—

तुम और वह कब आना चाहोगे ?

- (vi) भिन्न-भिन्न पुरुष के कर्ता विभाजक-प्रत्यय ‘या / अथवा’ से जुड़े हों तो क्रिया की अन्विति अंतिम कर्ता से होगी जैसे—

मैं या मेरी छोटी बहिन शादी में सम्मिलित होगी।

इस व्यापार में उसे हानि या लाभ नहीं हुआ।

2.2 कर्म और क्रिया की अन्विति

- (i) सकर्मक क्रिया का भूतकालिक रूप प्रयुक्त होने पर कर्ता के साथ ‘ने’ का प्रयोग किया जाएगा। इस स्थिति में क्रिया की अन्विति कर्ता से न होकर कर्म से होगी। जैसे—

आपने मुझ पर बहुत कृपा (स्त्री.) की।

- (ii) एक ही लिंग के अनेक प्रत्ययहीन कर्म होने की स्थिति में उस लिंग के बहुवचन क्रिया-रूप का प्रयोग होगा। जैसे—

चिड़ियाघर में हमने शेर, चीता, और बाघ देखे।

जंगल में लोगों ने भैंसे और नीलगायें देखी होंगी।

- (iii) कर्म के रूप में एक ही लिंग के अनेक अप्राणिवाचक कर्म या भाववाचक कर्म हों तो प्रायः उसी लिंग के एकवचन क्रिया-रूप का प्रयोग होगा।

बाजार से यात्री ने एक संदूक और एक लोटा खरीदा।

उस छोटे से बालक ने अभूतपूर्व सुझ-बूझ और साहस का परिचय दिया।

(iv) द्विकर्मक क्रिया की अन्विति प्रत्ययहीन कर्म के लिंग और वचन से होगी।

प्रबंधक ने कर्मचारी को उसकी सेवाओं के लिए पुरस्कार (पु.) दिया।

प्रबंधक ने कर्मचारी को उसकी सेवाओं के लिए हजार रुपए (पु. बहु.) दिए।

प्रबंधक ने कर्मचारी को उसकी सेवा के लिए पदोन्नति (स्त्री.) दी।

2.3 विशेषण और विशेष्य की अन्विति

विशेषण, विशेष्य (संज्ञा या सर्वनाम) के लिंग और वचन के अनुसार परिवर्तित होता है।

अच्छा लड़का ↑ ↑	बड़ों का आदर	करता है।
अच्छी लड़की ↑ ↑		करती है।
अच्छे लड़के ↑ ↑		करते हैं।
अच्छी लड़कियाँ ↑ ↑		करती हैं।

3.0 सह-संबंधवाचक

सह-संबंधवाचक वह शब्द युग्म है जो वाक्य के दो अंशों या दो उपवाक्यों का परस्पर संबंध स्थापित करने में भूमिका निभाता है। सह-संबंधवाचक / शब्द युग्म प्रायः अलग-अलग उपवाक्यों / वाक्यांशों से जुड़कर कथन के आशय को स्पष्ट करते हैं। कुछ महत्वपूर्ण सह-संबंधवाचक हैं—

(क) यदि / अगर तो ।

अगर साहूकार रुपए उधार देगा तो उन्हें ब्याज सहित लौटा दूँगा।

यदि तुम मेहनत करोगे तो अवश्य सफल होगे।

अगर आप बुरा न मानें तो एक बात कहूँ।

यदि आप यह काम कर दें तो मेरा समय बच जाएगा।

(ख) जब तब।

जब बारिश रुक गई तब हम घर से निकले।

जब वे मेरे घर आए थे तब मैं घर पर नहीं था।

कभी-कभी 'जब तब' की स्थिति विपरीत भी हो जाती है। अर्थ में परिवर्तन नहीं होता, केवल उपवाक्य का प्रभाव बदल जाता है। जैसे—

वह स्टेशन तब पहुँचा जब रेलगाड़ी जा चुकी थी।

आप तब आए जब सारे मेहमान चले गए थे। / जा चुके थे।
जब कार्य और परिणाम की पुनरावृत्ति होती है तब सह-संबंधवाचक की पुनरुक्ति होती है। जैसे—

जब-जब वे मुंबई आते हैं तब-तब वे इसी होटल में ठहरते हैं।
कई स्थितियों में 'तब' का प्रयोग नहीं होता। उसके बदले केवल विराम चिह्न (,) का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

जब प्रधान अध्यापक आए, मैंने उठकर उनका स्वागत किया।

(ग) जो वह / वे।

जो मन लगाकर पढ़ता है, वह अवश्य सफल होता है।

जो इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं वे अपना-अपना हाथ उठाएँ।

'जो' और 'वह' तिर्यक् रूपों में भी प्रयुक्त हो सकते हैं जैसे—

जिसके पास टिकट है, उसको / उसे अंदर जाने दिया जाएगा।

जिन्हें बाहर खड़ा किया था, उन्हें अंदर भेज दो।

'जो' और 'वह' तिर्यक् रूपों की आवृत्ति भी हो सकती है। जैसे—

जिस-जिस के पास परिचय पत्र है, उस-उस को मतदान का अधिकार होगा।

जिन-जिन का पैसा आ गया है, उन-उन को सामान दे दो।

(घ) जहाँ वहाँ।

जहाँ धुआँ है वहाँ आग अवश्य होगी।

जहाँ चाह है वहाँ राह है।

'जहाँ' और 'वहाँ' कभी-कभी क्रम बदलकर आते हैं। जैसे—

बच्चे वहाँ खुश रहते हैं जहाँ उन्हें प्यार मिलता है।

'जहाँ' और 'वहाँ' की पुनरावृत्ति भी होती है। जैसे—

विद्वान जहाँ-जहाँ जाते हैं वहाँ-वहाँ उनका स्वागत होता है।

(ङ) ज्यों ही त्यों ही।

ज्यों ही चोरों ने पुलिस दल को आते देखा त्यों ही वे जीप में भाग गए।

ज्यों ही मैं वहाँ पहुँचा त्यों ही गाड़ी चल पड़ी।

(च) जैसा वैसा।

जैसा आप कहेंगे वैसा ही मैं करूँगा।

जैसी मूर्ति इसने बनाई है वैसी और कौन बना सकता है ?

(छ) जितना उतना।

जितना गुड़ डालोगे उतना मीठा होगा।

जितनी ऊँची यह इमारत है उतनी ऊँची इमारत यहाँ और कोई नहीं है।

(ज) जिस तरह उस तरह

जिस तरह हम बच्चे से बात करेंगे, उस तरह ही वह भी औरों से करेगा।

4.0 समुच्चयबोधक अव्यय

यह दो पदों / पदबंधों / उपवाक्यों को जोड़ता है। समुच्चयबोधक अव्यय निम्नलिखित हैं :-

(क) संयोजक - और, तथा, एवं

	और	
राम	तथा	लक्ष्मण सीता की खोज में निकले।
	एवं	

(ख) विकल्पबोधक - या, अथवा, वा, चाहे..... चाहे....., न कि, नहीं तो, या..... या....., न..... न.....

	या	
या तो नागपुर से मेरे पिता जी आएँगे	नहीं तो	मेरे भाई को भेजेंगे।
	अथवा	

तुम चाहे रहो चाहे जाओ मुझसे कोई मतलब नहीं।

न वह स्वयं आया न उसकी चिट्ठी आई।

(ग) विरोधबोधक - मगर, पर, परंतु, किंतु, लेकिन।

	मगर	
	पर	
वह आया जरूर	परंतु	कुछ नहीं बोला।
	किंतु	
	लेकिन	

(घ) कारणबोधक - अतः, इसलिए, क्योंकि

	अतः	
अध्यक्ष महोदय नहीं आए	इसलिए	उद्घाटन समारोह नहीं हो सका।
	अतएव	

(ड) उद्देश्यबोधक कि, ताकि, जिससे

उद्घाटन समारोह कल रखा गया है ताकि मंत्री जी आ सकें।

(च) स्पष्टीकरण बोधक - यानी, मानो, जैसे, जैसे कि, यहाँ तक कि

वे चार दिन बाद यानी अगले रविवार को आएँगे।

मुझे लगा मानो वह अब नहीं बचेगा।

(छ) शर्तबोधक - तो, यदि तो, अगर तो

जो	मैं न आऊँ		तुम चले आना।
यदि	वे दें	तो	रकम ले लेना।
अगर	आप कहें		मैं इसे खरीद लूँ।

5.0 हिंदी की कुछ विशिष्ट संरचनाएँ

5.1 'कर्ता + को' संरचना

कर्ता के साथ 'को' विभक्ति (case-ending) का प्रयोग हिंदी की महत्वपूर्ण संरचना है। हिंदी में 'कर्ता+को' रूप का कर्म तथा क्रिया के रूपों के साथ प्रयोग कर अनेक भावों को अभिव्यक्त किया जाता है। जैसे—

(क) आवश्यकता सूचक

'कर्ता+को'	'कर्म'	'चाहिए'
अशोक को	मकान	चाहिए।
उसको / उसे	सब्जी	चाहिए।

(ख) उत्तरदायित्व सूचक

'कर्ता+को'	'-ना क्रिया'	'चाहिए'	
राम को	जाना	चाहिए	
राधा को	पढ़ना	चाहिए।	
'कर्ता+को'	'कर्म'	'-ना क्रिया'	'चाहिए'
मुझको / मुझे	फाइलें	देखनी	चाहिए।
उसको / उसे	काम	पूरा करना	चाहिए।
'कर्ता+को'	'कर्म + को'	'-ना क्रिया'	'चाहिए'
डाक्टर को	पहले मरीज को	देखना	चाहिए।
उसको / उसे	काम को	पूरा करना	चाहिए।

(ग) बाध्यता / विवशता / वचनबद्धता सूचक

'कर्ता+को'	'-ना क्रिया'	'होना'	
निदेशक को	मीटिंग में जाना	है।	
मुझको / मुझे	दो बजे स्टेशन पहुँचना	होगा।	
'कर्ता+को'	'कर्म'	'-ना क्रिया'	'होना'
आपको	यह काम (पु.)	करना	होगा।
आपको	चिट्ठी (स्त्री.)	लिखनी	है।

'बाध्यता' सूचक संरचना में 'होना' क्रिया के स्थान पर 'पढ़ना' क्रिया के प्रयोग से बाध्यता में अधिक तीव्रता आती है।

'कर्ता+को'	'क्रिया का मूल रूप +ना'	'पड़ना'	
मुझको / मुझे	अक्सर टूर पर जाना	पड़ता है।	
'कर्ता+को'	'कर्म'	'क्रिया का मूल रूप + ना'	'पड़ना'
आपको	ये फाइलें	आज ही पेश करनी	पड़ेंगी।

(घ) शारीरिक / मानसिक स्थिति सूचक

'कर्ता+को'	'संज्ञा'	'क्रिया' (होना / आना / लगना)
अशोक को	बुखार	है / था।
मोहन को	इस बात का दुख	है / था।
गीता को	गुस्सा	आया।
मोहन को	दया	आई।
सीता को	चोट	लगी।
रमेश को	सर्दी	लगती है।

(ङ) ज्ञान / जानकारी / कौशल सूचक

'कर्ता+को'	'संज्ञा'	क्रिया' (आना, पता होना, मालूम होना, जानकारी होना)
अशोक को	मराठी	आती है।
मुझे	स्कूटर चलाना	आता है।
हमें	इस बात का	पता है।
पवन को	यह बात	मालूम है।
उसे मेरे	घर की समस्याओं की	जानकारी है।

(च) रुचि सूचक

'कर्ता+को'	'कर्म'	'क्रिया' (पसंद होना, पसंद आना)
गीता को	यह साड़ी	पसंद है।
मुझको / मुझे	यह होटल	पसंद नहीं आया।

(छ)

'कर्ता+को'	'कर्म'	'क्रिया' (विभिन्न क्रियाएँ)
आलोक को	रुपए	मिले / प्राप्त हुए।
मुझे	आपका पत्र	मिला / प्राप्त हुआ।
'कर्ता+को'	'कर्म (व्यक्ति)'	'क्रिया' (विभिन्न क्रियाएँ)
मुझे	उसका भाई	मिला।
'कर्ता+को'	'कर्म'	'जरूरत / आवश्यकता / होना'
मुझे	रुपयों की	जरूरत है।
'कर्ता+को'	'कर्म'	'स्वीकार होना' - सहमति दर्शाना।
मुझे	तुम्हारा प्रस्ताव	स्वीकार है।

5.2 'कर्ता + ने' संरचना

कारक (Case) प्रकरण में कर्ता कारक की विभक्ति 0 (शून्य) तथा 'ने' बताई गई है। कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग कुछ विशेष परिस्थितियों में होता है। वे स्थितियाँ इस संरचना की विशेषताएँ हैं। जैसे—

(क) क्रिया का सकर्मक होना और वाक्य में उसके भूतकालिक रूप का प्रयोग होना। भूतकालिक रूप निम्नलिखित है :—

क्रिया 'देखना' -

सामान्य भूतकाल	- देखा
पूर्ण वर्तमान काल	- देखा है
पूर्ण भूतकाल	- देखा था
संदिग्ध भूतकाल	- देखा होगा

(ख) कर्ता के साथ 'ने' लगने पर क्रिया की अन्विति लिंग, वचन, कारक के स्तर पर कर्म से होती है।

उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यों को देखिए :—

कर्ता	कर्म	क्रिया
मि. ब्राउन ने	आगरा का टिकट (पु. एक.)	खरीदा
मैंने	आपका काम (पु. एक.)	नहीं किया
हमने	लता का गाना (पु. एक.)	नहीं सुना।
टैक्सीवाले ने	सौ रुपए (पु. बहु.)	लिए।
अशोक ने	नए जूते (पु. बहु.)	खरीदे।
आपके मित्र ने	एक नई घड़ी (स्त्री. एक.)	खरीदी।
क्या आपने	मेरी नई कार (स्त्री. एक.)	देखी ?
मैंने	कुछ साड़ियाँ (स्त्री. बहु.)	खरीदीं।
शीला ने	इस साल एक छोटा टेलीविजन (पु. एक.)	खरीदा है।
नौकरानी ने	अभी तक मेरे कपड़े (पु. बहु.)	नहीं धोए हैं।
अशोक ने	कल बहुत-सी चिट्ठियाँ (पु. बहु.)	लिखी थीं।
अशोक ने	केला (पु. एक.)	खरीदा था / खरीदा होगा।
अशोक ने	केले (पु. बहु.)	खरीदे थे / खरीदे होंगे।
अशोक ने	कमीज (स्त्री. एक.)	खरीदी थी / खरीदी होगी।
अशोक ने	कमीजें (स्त्री. बहु.)	खरीदीं थीं / खरीदी होंगी।
उन्होंने	पिछले साल एक मकान (पु. एक.)	खरीदा था।
स्टेनो ने	कल बहुत-सी चिट्ठियाँ (स्त्री. बहु.)	टाइप की थीं।
रामलाल ने	एक कार (स्त्री. एक.)	खरीदी होगी।

लाना, बोलना, भूलना, इस नियम के अपवाद हैं –

मोहन किताब लाया।

राधा कुछ नहीं लाई।

मोहन कुछ नहीं बोला।

राधा भी नहीं बोली।

रामलाल आपकी बात नहीं भूला।

(ग) 'कर्ता+ने' सरंचना में यदि कर्म के साथ 'को' विभक्ति का प्रयोग हुआ हो तो क्रिया पुल्लिङ्ग एकवचन में होगी।

सास ने	बहू को	आशीर्वाद दिया।
पिता जी ने	लड़के (पु.) को	बुलाया।
	बहु (स्त्री.) को	
	नौकरों (पु. बहु.) को	
	बहुओं (स्त्री. बहु.) को	
मैंने	उस घड़ी को	बेच दिया।
चिड़ियाघर में बच्चों ने	कंगारू के बच्चों को	देखा।

(घ) द्विकर्मक क्रिया वाले वाक्यों में क्रिया की अन्विति विभक्तिहीन कर्म से होती है।

दयालु व्यक्ति ने गरीबों को	एक-एक रुपया (पु. एकवचन)	दिया।
	दो-दो कंबल (पु. बहुवचन)	दिए।
	एक-एक थाली (स्त्री. एकवचन)	दी।
	दो-दो कटोरियाँ (स्त्री. बहुवचन)	दीं।

कर्ता+ने के साथ सकर्मक क्रिया के भूतकालिक रूप

मोहन ने	किताब (स्त्री.)	पढ़ी।	पढ़ी है।	पढ़ी थी।	पढ़ी होगी।
शीला ने	खाना (पु.)	खाया।	खाया है।	खाया था।	खाया होगा।
गुप्ता जी ने	साड़ी (स्त्री. एक.)	खरीदी।	खरीदी है।	खरीदी थी।	खरीदी होगी।
गुप्ता जी ने	साड़ियाँ (स्त्री.एक.)	खरीदीं।	खरीदी हैं।	खरीदी थीं।	खरीदी होंगी।

'कर्ता+ ने' के साथ 'कर्म+को' का प्रयोग

बच्चे ने	खिलौने को	तोड़ा।	तोड़ा है।	तोड़ा था।	तोड़ा होगा।
पुलिस ने	गाड़ियों को	रोका।	रोका है।	रोका था।	रोका होगा।
मैंने	चिट्ठी को	पढ़ा।	पढ़ा है।	पढ़ा था।	पढ़ा होगा।
राधा ने	चिट्ठियों को	पढ़ा।	पढ़ा है।	पढ़ा था।	पढ़ा होगा।
पिता जी ने	लड़के को	बुलाया।	बुलाया है।	बुलाया था।	बुलाया होगा।

6.0 नाटक

परीक्षा

(एकांकी - नाटक)

पात्र : गुरु द्रोणाचार्य

शिष्य : 1. युधिष्ठिर, 2 भीम, 3 अर्जुन, 4. दुर्योधन

स्थान : गुरु द्रोणाचार्य का आश्रम।

(स्टेज पर एक पेड़ की शाखा साफ दिखाई दे रही है। उस शाखा पर नीले रंग के कपड़े की एक चिड़िया है। सभी शिष्यों के हाथों में तीर-कमान हैं। उनकी पीठ पर तीरों से भरे हुए तरकश हैं। पर्दा उठते ही सब शिष्य कहते हैं – प्रणाम, गुरुदेव ! गुरु द्रोणाचार्य अपना दायाँ हाथ उठाकर शिष्यों को आशीर्वाद देते हैं।

द्रोणाचार्य : आज मैं तुम लोगों की परीक्षा लेना चाहता हूँ।

सभी शिष्य : जो आज्ञा, गुरुदेव !

द्रोणाचार्य : देखो, इस पेड़ पर एक चिड़िया है। यही तुम्हारा निशाना है। तुम्हें इस पर तीर चलाना है। तैयार हो जाओ।

द्रोणाचार्य : युधिष्ठिर, पहले तुम आगे आओ और निशाना साधो।

युधिष्ठिर : जो आज्ञा, गुरुदेव ।

द्रोणाचार्य : ठहरो, तीर चलाने से पहले मैं तुमसे कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूँ।

युधिष्ठिर : पूछिए, गुरुदेव !

द्रोणाचार्य : क्या तुम उस चिड़िया को देख रहे हो ?

युधिष्ठिर : हाँ, गुरुदेव ! वह चिड़िया मुझे साफ-साफ दिखाई दे रही है।

द्रोणाचार्य : क्या तुम उस पेड़ को भी देख रहो हो।

भीम : गुरु जी, यह पेड़ तो मुझे भी साफ दिखाई दे रहा है। अगर आप कहें तो मैं इसे अभी उखाड़कर फेंक सकता हूँ। और उस चिड़िया को तो दोनों हाथों के बीच दबाकर यों मसल सकता हूँ।

द्रोणाचार्य : भीम, जब तक बात समझ में न आए, तुम बीच में मत बोला करो।

दुर्योधन : यह पहलवानी नहीं है भैया, कुश्ती लड़ने और तीर चलाने में बहुत अंतर होता है।

भीम : तुम चुप रहो, दुर्योधन।

द्रोणाचार्य : हाँ, युधिष्ठिर ! अब तुम बताओ कि चिड़िया के अलावा क्या तुम्हें इस पेड़ की पत्तियाँ, फल, फूल, मैं, भीम और अर्जुन – ये सभी दिखाई दे रहे हैं ?

युधिष्ठिर : हाँ गुरुदेव ! मुझे सब कुछ साफ-साफ दिखाई दे रहा है।

द्रोणाचार्य : तुम्हारे उत्तर से मुझे संतोष नहीं हुआ। अच्छा, अब तुम एक ओर हट जाओ।

दुर्योधन : अगर आप कहें तो मैं सामने आऊँ, गुरुदेव !

भीम : रुको दुर्योधन ! अब मेरी बारी है।

द्रोणाचार्य : जल्दी मत करो। तुम आगे आओ दुर्योधन और निशाना लगाने के लिए तैयार हो जाओ।

दुर्योधन : जो आज्ञा, गुरुदेव !

द्रोणाचार्य : क्या अब तुम तैयार हो, दुर्योधन।

दुर्योधन : हाँ, गुरुदेव !

द्रोणाचार्य : तो बताओ, तुम्हें क्या-क्या दिखाई दे रहा है ?

दुर्योधन : गुरुदेव ! मैं इस पेड़ की शाखा पर लगे हुए पत्ते, फूल, फल, पेड़ की छाया और आप सब लोगों को साफ-साफ देख रहा हूँ।

द्रोणाचार्य : लेकिन तुम्हें जो देखना चाहिए वह नहीं देख रहे। अच्छा तुम भी पीछे हट जाओ।

दुर्योधन : जो आज्ञा।

भीम : मैंने तो पहले ही कहा था, तुम्हारी निगाह हमेशा फल पर रहती है, निशाने पर नहीं (हा! हा! हा!) अब मैं परीक्षा दूँगा। देखना, मैं कैसा उत्तर देता हूँ।

द्रोणाचार्य : भीम, मैं तुम्हारे उत्साह की प्रशंसा करता हूँ। लेकिन तुमसे पहले मैं अर्जुन की परीक्षा लेना चाहता हूँ। आओ, अर्जुन !

अर्जुन : जो आज्ञा, गुरुदेव ! अब पूछिए, गुरुदेव।

द्रोणाचार्य : क्या तुम तैयार हो ?

अर्जुन : मैं बिल्कुल तैयार हूँ, गुरुदेव !

द्रोणाचार्य : तुम चिड़िया के अलावा शाखा, पत्ते, फूल और हम सबको भी देख रहे हो न ?

अर्जुन : बिल्कुल नहीं, गुरुदेव !

द्रोणाचार्य : क्या मतलब तुम्हें कुछ नहीं दिखाई दे रहा, अर्जुन ?

अर्जुन : कुछ नहीं, गुरुदेव !

द्रोणाचार्य : बड़ा आश्चर्य है। ठीक-ठीक बताओ, तुम्हें आखिर क्या दिखाई दे रहा है ?

अर्जुन : गुरुदेव ! मुझे तो केवल चिड़िया दिखाई दे रही है। और चिड़िया का भी केवल सिर साफ दिखाई दे रहा है।

द्रोणाचार्य : इसके अलावा और कुछ।

अर्जुन : न पेड़, न फल, न फूल, न पत्ते, न आप और न दूसरे भाई। मुझे तो केवल चिड़िया की आँख दिखाई दे रही है।

भीम : (हा!! हा!! हा!!) बड़ा मूर्ख है।

दुर्योधन : ऐसा लगता है जैसे इसकी आँखें खराब हो गई हैं।

द्रोणाचार्य : शाबाश, अर्जुन ! चिड़िया पर तीर चलाओ। (अर्जुन का तीर छूटते ही चिड़िया जमीन पर गिर पड़ती है।)

द्रोणाचार्य : (अर्जुन की पीठ ठोकते हुए।) केवल तुम्हीं आज की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए, अर्जुन। विद्यार्थी को अपना निशाना ही दिखाई देना चाहिए, और कुछ नहीं। आस-पास की चीजों पर ध्यान चले जाने से निशाना ठीक नहीं बैठता।

भीम : मेरी परीक्षा? मेरी, गुरुदेव !

द्रोणाचार्य : तुम्हारी परीक्षा किसी दूसरी तरह की होगी भीम, घबराओ मत। चलो, अब चलें।

(पर्दा गिर जाता है।)

शब्दावली Vocabulary

तीर कमान	bow and arrow
निशाना	target
निशाना साधना	to aim at the target
तरकश	quiver
साफ-साफ	clearly
उखाड़ना	to pull out
फेंकना	to throw
दबाना	to press
मसलना	to rub
पहलवानी	form of wrestling
कुश्ती लड़ना	wrestling
बारी	turn
छाया	shade
निगाह	sight
उत्साह	enthusiasm
तीर छूटना	to shoot on arrow
पीठ ठोकना	to encourage
उत्तीर्ण होना	to pass

पाठ-4 : शब्द रचना
(प्रथम प्रश्न पत्र)

विषय सूची

1.0	शब्द रचना	68
1.1	शब्द रचना से अभिप्राय	68
1.2	शब्द रचना प्रक्रिया	68
1.2.1	उपसर्ग द्वारा शब्द निर्माण	69
1.2.2	प्रत्यय द्वारा शब्द निर्माण	73
1.2.3	संधि द्वारा शब्द निर्माण	78
1.2.4	समास द्वारा शब्द निर्माण	80
1.3	शब्द संपदा	81
1.4	सहायक सामग्री	83
	– कहावतें / लोकोक्तियाँ	83
	– मुहावरे	86
	– पर्यायवाची शब्द	88
	– अनेकार्थी शब्द	89
	– विलोम शब्द	91

1.0 शब्द रचना

शब्द अथवा पद से वाक्य की रचना होती है। शब्द एक निश्चित क्रम में रहकर वाक्य की रचना करते हैं। वाक्य भाषा की सबसे छोटी इकाई है। वाक्य पदों से ही बनते हैं। शब्दों की रचना, उनका प्रयोग, वाक्य में उनकी स्थिति भाषा के व्याकरण का विषय है। इस पाठ में हिंदी शब्दों के निर्माण तथा शब्द संपदा के बारे में विस्तार से जानकारी दी जाएगी।

1.1 शब्द रचना से अभिप्राय

शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होते हैं तब पद कहलाते हैं। उदाहरण के लिए एक वाक्य लें –

‘जंगल में शेर और हाथी लड़ रहे थे।’ इस वाक्य में प्रयुक्त जंगल, शेर, हाथी, लड़ ये चारों शब्द कोश में उपलब्ध होंगे। पर वाक्य में प्रयुक्त होने पर ‘जंगल’ अधिकरण कारक में है। ‘शेर’ और ‘हाथी’ कर्ता हैं। ‘लड़’ क्रिया के साथ ‘रहे थे’ अपूर्ण भूतकाल बताया है। इस तरह वाक्य में शब्द पद बन जाते हैं।

‘शब्द रचना’ के अंतर्गत कुछ विशेष शब्दावली का प्रयोग किया जाएगा जिनको समझना आवश्यक है।

व्युत्पत्ति (Derivation) के अनुसार शब्द दो प्रकार के हैं – (1) रूढ़, (2) यौगिक

रूढ़ वे शब्द हैं जिनके साथ और कोई शब्द न जुड़ा हो, जैसे–

मकान, दीपक, खर्च, पानी, मतलब, दूध आदि।

यौगिक शब्द वे हैं जो अन्य किसी शब्द या प्रत्यय (Affix) से मिलकर बनते हैं, जैसे–

मतलबी, खर्चीला, दूधवाला आदि।

प्रत्यय (Affix) प्रायः स्वतंत्र रूप में प्रयुक्त नहीं होते। वे मूल (Root) शब्दों के साथ भाषिक नियमों के अनुसार जोड़े जाते हैं। जो प्रत्यय प्रारंभ में जोड़े जाते हैं उन्हें **उपसर्ग** या **पूर्व प्रत्यय** (Prefix) कहा जाता है। जैसे–

शांत	के पूर्व ‘अ’ पूर्व प्रत्यय लगकर	अशांत
ज्ञान		अज्ञान
मर		अमर शब्द बनते हैं।

जो प्रत्यय शब्द के बाद में जोड़े जाते हैं उन्हें **परसर्ग** या **प्रत्यय** (Suffix) कहते हैं, जैसे–

मकान + वाला = मकानवाला

ज्ञान + वान = ज्ञानवान

ज्ञान + ई = ज्ञानी

साथ + ई = साथी

कोमल + ता = कोमलता

1.2 शब्द रचना प्रक्रिया

हिंदी में नए शब्द गढ़ने की चार विधियाँ हैं –

- (1) उपसर्ग (Prefix) लगाकर
- (2) प्रत्यय (Suffix) लगाकर
- (3) संधि द्वारा तथा
- (4) समास द्वारा।

1.2.1 उपसर्ग द्वारा शब्द निर्माण

संस्कृत ही हिंदी शब्दों का स्रोत है। हिंदी में भी संस्कृत के शब्द तत्सम रूप में आए हैं – तत्सम का अर्थ है उसी रूप में। उसी तरह उपसर्ग (Prefix) और प्रत्यय (Suffix) भी संस्कृत से लिए गए हैं। ये दोनों तत्सम शब्दों के साथ ही जोड़े जाते हैं।

उपसर्ग के प्रयोग से मूल शब्द के अर्थ में

- (1) विशिष्टता आ जाती है।
- (2) किन्हीं स्थितियों में अर्थ में परिवर्तन आ जाता है।

कुछ उपसर्ग नीचे दिए जा रहे हैं :-

उपसर्ग	द्योतित अर्थ	व्युत्पन्न शब्द	अर्थ
अप	कमी, लघुता, गलत	अपमान	निरादर
		अपकार	बुरा अथवा नुकसान करना
		अपहरण	गलत तरीके से ले जाना
		अपकीर्ति अपयश	यश एवं कीर्ति का क्षय होना
अनु	पीछे, पश्चात	अनुसरण	पीछे चलना (to follow)
		अनुकरण	नकल करना (to imitate)
		अनुचर	पीछे चलने वाला (नौकर)
		अनुवाद	बाद में कहा गया (translation)
अति	अधिक, ऊपर	अतिक्रमण	उल्लंघन, सीमा के पार जाना
		अत्याचार	ज्यादती
अधि	उच्चतर, श्रेष्ठ	अधिकार	स्वामित्व
		अधिपति	मालिक, स्वामी
		अध्यक्ष	उच्च अधिकारी
अव	हीनता, पतन, गिरना	अवनति	उन्नति का विलोम (downfall)
		अवगुण	बुराई

उपसर्ग	द्योतित अर्थ	व्युत्पन्न शब्द	अर्थ
आ	और, विरोध, पर्यंत, तक	आक्रोश	अधिक गुस्सा
		आगमन	आना (गमन का उलटा)
		आजीवन	जीवनभर
		आकंठ	कंठ (गले) तक
उद् / उत्	ऊपर	उत्थान	ऊपर चढ़ना, उन्नति
		उद्गम	(नदी के) निकलने का स्थान
		उत्पन्न	पैदा होना
उप	कम महत्व का, गौण, छोटा	उपसभापति	सभापति से (पद में) छोटा
		उपवन	छोटा वन, छोटा बाग
		उपनाम	गौण नाम
		उपमंत्री	मंत्री से छोटा
दूः / दूर	बुरा, हीन	दुर्जन	खराब व्यक्ति
		दुर्बल	कमजोर
		दुर्दिन	खराब दिन / समय
		दुर्गुण	बुराई, खराबी
		दुराचार	खराब आचार (misconduct)
निः / निर्	न होना, निषेध	निर्जन	जहाँ किसी जन का वास न हो
		निर्जीव	जिसमें जान न हो / जीवन न हो
		निषेध	मना होना / मना करना, रोकना
		निर्मल	स्वच्छ, बिना मल / धूल के बिना
प्र	अधिक, ऊपर, आगे, विशेष	प्रगति	उत्थान, उन्नति, आगे होना या बढ़ना
		प्रख्यात	प्रसिद्ध (famous)
		प्रयोग	काम में लाना (in use)
		प्रणाम	नमस्कार (bowing, wishing)
		प्रबल	अधिक बलशाली
प्रति	विरोध, रोकना, बराबर	प्रतिकार	विरोध करना, बदला लेना
		प्रतिदान	दान के बदले दान

उपसर्ग	द्योतित अर्थ	व्युत्पन्न शब्द	अर्थ
प्रति		प्रतिकूल	विरुद्ध, उलटा
		प्रतिरोध	रोकना, रुकावट डालना
परा	उलटा, विरुद्ध	पराजय	हार
		पराकाष्ठा	चरम सीमा
		पराभव	हार
परि	चहुँतरफा, चारों ओर, आसपास	परिक्रमा	चारों ओर घूमना
		परिचय	जानकारी
		परिपूर्ण	पूरा
		परिजन	संबंधी
वि	बाहर, विशेष, उलटा, भिन्नता	विदेश	देश के बाहर का देश, अन्य देश, विख्यात
		विगत	बीता हुआ
		वियोग	अलग होना या बिछुड़ना (separation)
सम	बराबर, सामने, समान	सम्मुख	मुख के सामने, साने (in front, face-to-face)
		संन्यास	विरक्ति (renunciation)
		संतोष	तृप्ति (satisfaction)
		संगम	मिलन (confluence)
सु	अच्छा, सरल	सुकर्म	अच्छा काम
		सुदिन	अच्छा दिन
		सुलभ	सरलता से प्राप्य
		सुशील	अच्छे आचरण वाला
		सुगम	सरल (easily accessible)

पिछले पृष्ठों में तत्सम उपसर्गों की चर्चा की गई। कुछ ऐसे भी उपसर्ग हैं जो संस्कृत के उपसर्गों से विकसित हुए हैं। इन्हें हम तद्भव (उससे निकले / उससे जन्मे / उससे प्राप्त) उपसर्ग कह सकते हैं। इनमें से कुछ का विवरण आगे दिया जा रहा है।

उपसर्ग	द्योतित अर्थ	व्युत्पन्न शब्द	अर्थ
अ / अन	अभाव, न होना, विपरित	अथाह	जिसकी थाह न मिले
		अनजान	अनभिज्ञ, जिसे जानकारी न हो
		अनपढ़	वह जो पढ़ना नहीं जानता
		अनबन	मनमुटाव
		अयोग्य	जो योग्य न हो
		असफल	जो सफल / कामयाब न हो
क, कु	बुरा, खराब	कपूत / कुपूत	बुरा पुत्र
		कुकर्म	खराब काम, बुरा काम
		कुरूप	बदसूरत
दु	बुरा, खराब	दुबला	कमजोर, दुर्बल
		दुकाल	अकाल
नि	न होना, अभाव	निडर	जो न डरता हो
		निकम्मा	बेकार, जिसे कोई काम न हो
पर	दूसरा, अन्य	परलोक	अन्य लोक
बिन	बिना, अभाव	बिन देखा	न देखा हुआ
भर	पूरा	भरपेट	पेट भरकर
		भरपूर	पूरी तरह
स	सहित	सफल	फल सहित
		समूल	जड़सहित
सह	साथ	सहचर	साथी
		सहपाठी	साथ में पढ़ने वाला

भारत में मुसलमानों के आगमन से अरबी, फारसी, तुर्की शब्दों से भी हिंदी के शब्द भंडार की अभिवृद्धि हुई। शब्दों के अतिरिक्त कई उपसर्ग तथा प्रत्यय भी आए। कुछ अधिक प्रचलित उपसर्ग नीचे दिए जा रहे हैं :-

उपसर्ग	द्योतित अर्थ	व्युत्पन्न शब्द	अर्थ
कम	थोड़ा कम	कमसिन	कम आयु वाला
		कमबख्त	कम भाग्यवान
		कमजोर	दुर्बल

खुश	अच्छा	खुशबू	सुगंध
		खुश किस्मत खुश नसीब	अच्छा भाग्य अच्छे भाग्य वाला
गैर	न होना	गैर जिम्मेदार	जो अपनी जिम्मेदारी न समझे (irresponsible)
		गैर हाजिर	अनुपस्थित
ना	उलटा	नासमझ	जिसमें समझ न हो
		नापसंद	जो पसंद न हो
बद	खराब	बदनाम	खराब नाम, किसी बुराई के कारण निंदनीय
		बदजुबां	गंदी जुबान वाला
बे	विरुद्ध, उलटा	बेकार	बिना काम के
		बेदाग	जिसमें दाग या धब्बा न हो
		बेचारा	असहाय
		बेईमान	जिसमें ईमानदारी न हो
बिला	बिना	बिलावजह	बिना कारण
ला	अभाव	लाइलाज	जिसका इलाज न हो (incurable)
		लापरवाह	जो सावधान न रहे (careless)

1.2.2 प्रत्यय द्वारा शब्द निर्माण

हिंदी में प्रत्यय की सहायता से बहुत से शब्द बनाए जाते हैं। इनकी सूची बहुत लंबी है। कुछ परसर्गों या प्रत्ययों से बनाए गए कुछ शब्द नीचे दिए जा रहे हैं :-

—ई	अच्छा	→	अच्छाई	दुख	→	दुखी
	बुरा	→	बुराई	सुख	→	सुखी
	ऊँचा	→	ऊँचाई	लोभ	→	लोभी
—आई	लिख	→	लिखाई	देख	→	दिखाई
	पढ़	→	पढ़ाई	सुन	→	सुनाई
—ता	सभ्य	→	सभ्यता	वीर	→	वीरता
	नम	→	नम्रता	लघु	→	लघुता
	क्रूर	→	क्रूरता	धूर्त	→	धूर्तता

—क	रक्षा	→	रक्षक	निंदा	→	निंदक
	शिक्षा	→	शिक्षक	पाठ	→	पाठक
	चाल	→	चालक	लेख	→	लेखक
—कार	कला	→	कलाकार	मूर्ति	→	मूर्तिकार
	चित्र	→	चित्रकार	शिल्प	→	शिल्पकार
	पत्र	→	पत्रकार	निबंध	→	निबंधकार
	साहित्य	→	साहित्यकार			
—पा	बूढ़ा	→	बुढ़ापा	मोटा	→	मोटापा
—पन	बच्चा	→	बचपन	पागल	→	पागलपन
	लइका	→	लइकपन	दीवाना	→	दीवानापन
—आलु / आलू	दया	→	दयालु	झगड़ा	→	झगड़ालू
—दार	शान	→	शानदार	जान	→	जानदार
	इज्जत	→	इज्जतदार			

ऐसे ही और कई प्रत्यय (Suffix) हैं, जैसे—

—अक्कड़	भुलक्कड़ (भूलने वाला)	forgetful
	पियक्कड़ (पीने वाला)	drunkard
	घुमक्कड़ (घूमने वाला)	wanderer
—आऊ	टिकाऊ (ज्यादा दिन चलने / टिकने वाला)	lasting
	कमाऊ (कमाने वाला)	earning
	दिखाऊ (केवल दिखाने लायक)	showy
	जड़ाऊ (जिसमें कीमती पत्थर लगे हों)	gemstudded
—आड़ी	खिलाड़ी (खेलने वाला)	player
	अनाड़ी (न जानने वाला)	ignorant
—आर	लोहार	black smith
	कुम्हार	potter
—आरी	पुजारी	one who adores in temple
	भिखारी	beggar

-आवा	दिखावा	showy
	पहनावा	dress
-आवट	बनावट	make
	सजावट	decoration
	रुकावट	obstruction
	गिरावट	downfall
-आस	मिठास	sweetness
	खटास	sourness
-बाज	चालबाज	trickster
	धोखेबाज, दगाबाज	deceitful
-ला	अगला	next
	पिछला	previous, back
	निचला	lower
-वान	गाड़ीवान	coachman
	धनवान	wealthy
	बलवान	strong
	भाग्यवान	lucky
-हारा	लकड़हारा	woodcutter
	पालनहारा	one who takes care of (God)
-शाली	बलशाली	powerful
	भाग्यशाली	lucky
	शक्तिशाली	strong
-वर्ती	परवर्ती - बाद वाला	later
	पूर्ववर्ती - पहले वाला	former
	अनुवर्ती - बाद में होने वाला	succeeding, consequent

प्रयोग के आधार पर प्रत्यय दो वर्गों में बाँटे गए हैं, जिनका परिचय नीचे दिया जा रहा है :-

कृत और तद्धित प्रत्यय

1. 'कृत' प्रत्यय वे हैं जो प्रायः क्रियाओं से जुड़ते हैं और इनके मेल से बने शब्द कृदंत कहे जाते हैं। ये प्रत्यय क्रिया या धातु को नया रूप देते हैं। इनसे संज्ञा और विशेषणों का निर्माण होता है। जैसे—

—आई	लड़ना	› लड़ाई, पढ़ना	› पढ़ाई	
—आप	मिलना	› मिलाप		
—आवट	मिलाना	› मिलावट, लिखना	› लिखावट, बनना	› बनावट
—त	बचना	› बचत		
—आऊ	बिकना	› बिकाऊ, जलना	› जलाऊ	
—क	तैरना	› तैराक		

'कृत' प्रत्यय निम्नलिखित हैं :—

- (क) वर्तमानकालिक कृदंत (Present Participle) और भूतकालिक कृदंत (Past Participle) भी कृत प्रत्यय की सहायता से बने शब्द हैं।

बहता पानी साफ रहता है।

बहता हुआ पानी साफ रहता है।

बहता / बहता हुआ विशेषण की तरह प्रयुक्त है। यह वर्तमान कालिक कृदंत है।

- (ख) पढ़ा पाठ दुबारा क्यों पढ़ूँ ?

पढ़ा हुआ पाठ दुबारा पढ़कर सुनाओ।

पढ़ा / पढ़ा हुआ भूतकालिक कृदंत है और विशेषण की तरह प्रयुक्त हो रहा है।

- (ग) कर्तृवाचक संज्ञा - गाना › गायक, गवैया

चलाना › चाल, चालक, चलाने वाला

- (घ) क्रियार्थक संज्ञा - तैरना › तैराक, लड़ना › लड़ाकू

2. तद्धित प्रत्यय – संज्ञा और विशेषण के अंत में लगने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहे जाते हैं। उदाहरण के लिए ऐसे कुछ प्रत्यय नीचे दिए जा रहे हैं :—

—ता	विचित्र	→	विचित्रता	peculiarity
	मित्र	→	मित्रता	friendship
—पा	मोटा	→	मोटापा	fatness, obesity
	बूढ़ा	→	बुढ़ापा	old age
—ई	बुद्धिमान	→	बुद्धिमानी	wisdom
	समझदार	→	समझदारी	
—वाला	गाड़ी	→	गाड़ीवाला	

-आई	भला	→	भलाई	
	बुरा	→	बुराई	
	पंडित	→	पंडिताई	

प्रत्यय द्वारा लिंग परिवर्तन

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के लिए प्रयुक्त परसर्ग

प्रत्यय	पुल्लिंग - स्त्रीलिंग	पुल्लिंग - स्त्रीलिंग
-ई	लड़का - लड़की	बेटा - बेटी
	देव - देवी	दादा - दादी
	हिरन - हिरनी	कुमार - कुमारी
-इन	माली - मालिन	साँप - साँपिन
	नाग - नागिन	
-नी	ऊँट - ऊँटनी	मोर - मोरनी
-आनी	सेठ - सेठानी	जेठ - जेठानी
	नौकर - नौकरानी	
-आइन	ठाकुर - ठाकुराइन	बाबू - बाबुआइन
	पंडित - पंडिताइन	

कई स्त्रीलिंग शब्दों में प्रत्यय लगाकर पुल्लिंग शब्द बनाए जाते हैं जैसे-

भैंस (स्त्री.) - भैंसा (पु.), बहिन - बहनोई ननद - ननदोई

लिंग परिवर्तन

	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
प्रत्यय -आ	प्रियतम	प्रियतमा
	आचार्य	आचार्या
	महोदय	महोदया
	भवदीय	भवदीया
प्रत्यय -ई	सखा	सखी
	नर	नारी
	पुत्र	पुत्री

विभिन्न शब्द	कवि	कवयित्री
	पुरुष	स्त्री
	राजा	रानी
	वर	वधू
	विद्वान	विदुषी
	श्रीमान	श्रीमती
	युवा	युवती

मनुष्येतर प्राणियों में से कुछ के स्त्रीलिंग पुल्लिंग बनाने के लिए शब्दों के सामने क्रमशः मादा अथवा नर लगाया जाता है।

मादा भेड़िया - नर भेड़िया
she wolf - he wolf
मादा कौआ - नर कौआ
she crow - he crow

1.2.3 संधि द्वारा शब्द निर्माण

जब दो या अधिक तत्सम शब्दों की निकटता से, पहले खंड के अंत्याक्षर (last letter) के दूसरे शब्द के आद्य अक्षर (first letter) से मिल जाने पर एक भिन्न अक्षर निर्मित होता है तब इस मेल को संधि कहते हैं। संधि के तीन प्रकार हैं।

(1) स्वर संधि : जब स्वर से स्वर का मेल होता है, तब स्वर संधि होती है। जैसे—

	प्रथम शब्द का अंत्याक्षर	दूसरे शब्द का आद्यक्षर	संधि रूप	व्युत्पन्न शब्द
राम + अवतार	अ	अ	आ	रामावतार
राम + आधार	अ	आ	आ	रामाधार
विद्या + अध्ययन	आ	अ	आ	विद्याध्ययन
रवि + इंद्र	इ	इ	ई	रवींद्र
गिरि + ईश	इ	ई	ई	गिरीश
मही + इंद्र	ई	इ	ई	महींद्र
नदी + ईश	ई	ई	ई	नदीश

इसी तरह

उ + उ / उ + ऊ / ऊ + उ / ऊ + ऊ = ऊ होता है।

अ + इ / अ + ई / आ + इ / आ + ई = ए होता है।

अ + अ / अ + ऊ / आ + उ / आ + ऊ = ओ होता है।

अ + ए / अ + ऐ / आ + ए / आ + ऐ = ऐ होता है।

अ + औ / आ + औ / अ + औ / आ + औ = औ होता है।

पर + उपकार अ + उ = ओ - परोपकार

महा + ऋषि आ + ऋ = अर - महर्षि

मत + ऐक्य अ + ऐ = ऐ - मतैक्य

सदा + एव आ + ए = ऐ - सदैव

अति + आचार इ + आ = या - अत्याचार

प्रति + उपकार इ + उ = यु - प्रत्युपकार

प्रति + एक इ + ए = ये - प्रत्येक

सु + आगत उ + आ = वा - स्वागत

सूर्य + उदय अ + उ = ओ - सूर्योदय

- (2) व्यंजन संधि : जब व्यंजन से स्वर अथवा व्यंजन का मेल होता है, तब व्यंजन संधि होती है।
जैसे—

सत् + आनंद = सदानंद

जगत् + नाथ = जगन्नाथ

जगत् + ईश = जगदीश

वाक् + ईश = वागीश

उत् + घाटन = उद्घाटन

उत् + लास = उल्लास

सत् + चरित्र = सच्चरित्र

चित् + मय = चिन्मय

सत् + धर्म = सद्धर्म

सत् + जन = सज्जन

भगवत् + भक्ति = भगवद्भक्ति

उत् + डयन = उड्डयन

- (3) विसर्ग संधि : जब विसर्ग से स्वर अथवा व्यंजन का मेल होता है, तब विसर्ग संधि होती है।

हिंदी में अः अनुस्वार है। इस विसर्ग (:) ध्वनि में अंत होने वाले कुछ तत्सम शब्द हिंदी खड़ी बोली में प्रयुक्त होते हैं। जैसे क्रमशः = gradually, पुनः = again, स्वतः = self

निः + चल = निश्चल

निः + संदेह = निस्संदेह

निः + फल = निष्फल

निः + कपट = निष्कपट

निः + बल = निर्बल

निः + जन = निर्जन

निः + रस = नीरस

निः + आशा = निराशा

निः + छल = निश्छल

निः + रोग = नीरोग

1.2.4. समास द्वारा शब्द निर्माण

दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं। समास का उद्देश्य है कम शब्दों में अधिक भाव व्यक्त करना। संधि में भी दो शब्दों का सम्मिलन होता है, पर उसमें दो ध्वनियों के मेल से नई ध्वनि बनती है। समास में दो ध्वनियों के मेल से नई ध्वनि का निर्माण नहीं होता। बीच में आने वाले प्रत्यय या विभक्ति का लोप हो जाता है। निम्नलिखित वाक्य देखिए :-

मेरे माता-पिता दिल्ली में रहते हैं।

‘माता-पिता’ सामासिक शब्द हैं जिसे होना चाहिए था माता और पिता। ‘और’ अव्यय का लोप करके दो शब्दों को समीप लाया गया है।

वीर सावरकर को देश-निकाला दिया गया।

‘देश-निकाला’ - देश से निकाला। यहाँ ‘से’ विभक्ति का लोप है।

सम्मिलित शब्दों के आधार पर समासों का नामकरण किया गया है। सबसे सरल और अधिक स्पष्ट द्वंद्व समास है जिसमें दो शब्दों के बीच आने वाले ‘और’, ‘अथवा’ / ‘या’ का लोप होता है। जैसे-

सुख-दुख	सुख	और	दुख
माँ-बाप	माँ		बाप
रुपया-पैसा	रुपया		पैसा
अच्छा-बुरा	अच्छा	या	बुरा
धर्म-अधर्म	धर्म		अधर्म

(धर्म + अधर्म अ + अ = आ संधि नियमों के अनुसार धर्माधर्म)

- (1) जिन सामासिक शब्दों में - को, में, पर, से इत्यादि विभक्ति प्रत्ययों का लोप हो वह तत्पुरुष समास कहलाता है। इसमें पहला पद गौण और दूसरा पद प्रधान होता है। जैसे-

मुँहमाँगा	मुँह	से	माँगा
देशभक्ति	देश	के लिए	भक्ति
जन्मरोगी	जन्म	से	रोगी
अवकाशप्राप्त	अवकाश	को	प्राप्त
सेनानायक	सेना	का	नायक

- (2) विशेषण और विशेष्य से बना समास कर्मधारय समास कहलाता है, यथा-

सामासिक पद	विशेषण	विशेष्य
नीलकमल	नीला +	कमल
काली मिर्च	काली +	मिर्च
नीलगाय	नीली +	गाय

- (3) इसी तरह यदि पहला संख्यावाचक विशेषण और दूसरा विशेष्य हो तो वहाँ द्विगु समास होता है। जैसे—

सामासिक पद	विशेषण	विशेष्य
दोपहर	दो	पहरों का समाहार
त्रिभुज	तीन	भुजाओं का समूह
त्रिभुवन	तीन	भुवनों का समूह
नवग्रह	नौ	ग्रहों का समूह

- (4) बहुब्रीहि समास में सम्मिलित शब्द अपना स्वतंत्र अर्थ न देकर किसी अन्य संज्ञा की ओर संकेत करते हैं, यथा—

लंबोदर	लंबा + उदर (पेट)	लंबा है पेट जिसका	-	गणेश जी
नीलकंठ	नीला + कंठ (गला)	जिसका कंठ नीला है	-	भगवान शिव, एक पक्षी विशेष
त्रिनेत्र	तीन + नेत्र (आँख)	जिसकी तीन आँखें हैं	-	भगवान शंकर

- (5) जिस सामासिक शब्द में पहला शब्द अव्यय होता है और सम्मिलित शब्द क्रिया विशेषण की तरह प्रयुक्त होता है उस सामासिक शब्द को अव्ययीभाव कहते हैं। जैसे—

वह प्रतिदिन टहलता है।

प्रेमचंद आजीवन साहित्य सेवा करते रहे।

देवव्रत आजन्म कुँवारा (Bachelor) रहा।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रतिदिन, आजीवन तथा आजन्म अव्ययीभाव समास है।

1.3 शब्द संपदा

भाषा में शब्दों को उनके प्रकार के अनुसार शब्द भेदों (Parts of Speech) में विभाजित किया जाता है। कहीं-कहीं एक शब्द भी पूर्ण अर्थ की प्रतीति कराता है। उस दशा में वह वाक्य की भूमिका निभाता है। वस्तुतः वह संक्षिप्त वाक्य ही होता है। यथा—

आइए! चलें। यहाँ 'आइए' और 'चलें!' शब्द हैं — पर ये संक्षिप्त वाक्य हैं।

आइए — आप आइए।

चलें! — हम चलें ?

'आइए' और 'चलें' में दो-दो ध्वनियाँ हैं।

आ + इए, चल + एँ।

'आ' और 'चल' अर्थमूलक इकाइयाँ हैं 'इए' और 'एँ' नहीं।

किसी भाषा के शब्द उस भाषा के शब्दकोष (Dictionary) में पाए जाते हैं। जिस भाषा में जितने अधिक शब्द होंगे वह भाषा उतनी ही अधिक समृद्ध होगी और उसकी अभिव्यक्ति क्षमता उतनी ही अधिक होगी।

भाषा गतिशील होती है। उसमें अलक्षित रूप से बदलाव आता रहता है। शब्दों के रूप बदल जाते हैं, अर्थ बदल जाते हैं। नए शब्द गढ़े जाते हैं। दूसरी बोलियों, अन्य देशी-विदेशी भाषाओं से शब्द लिए जाते हैं। इस तरह भाषा की शब्द संपदा में निरंतर वृद्धि होती जाती है।

उत्पत्ति या उद्गम की दृष्टि से हिंदी शब्दों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा गया है :

(i) तत्सम (ii) तद्भव (iii) देशज / देशी (iv) विदेशी

(i) तत्सम

तत्सम का अर्थ है उसके समान। संस्कृत शब्दों का मूल प्रयोग करना ही तत्सम है। जैसे, प्रकाश, रवि, आकाश, अग्नि, अंतरिक्ष, वृक्ष, लता, जल, नदी, अर्थ, मानव, वाक्य इत्यादि। हिंदी में और भी ऐसे ही अनगिनत शब्द अपने तत्सम रूप में मिलते हैं।

(ii) तद्भव

तद्भव का अर्थ है उससे उत्पन्न, उससे निकला। संस्कृत के हजारों ऐसे शब्द हिंदी में हैं जिनका तद्भव रूप में प्रयोग मिलता है। जैसे—

संस्कृत (तत्सम)		हिंदी (तद्भव)
क्षेत्र	→	खेत
भ्रातृ	→	भाई
मयूर	→	मोर
ज्येष्ठ	→	जेठ
मुख	→	मुँह
चंद्र	→	चाँद
निद्रा	→	नींद
दुग्ध	→	दूध
वधू	→	बहू

(iii) देशज / देशी

देशज अथवा देशी शब्द वे हैं जिनके आगम के बारे में निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता। ये शब्द समसामयिक अन्य बोलियों से स्वीकृत हुए होंगे। जैसे—

जूता, लोटा, डिब्बा इत्यादि।

(iv) विदेशी

भारत में मुसलमानों के आगमन से हिंदी में अरबी, फारसी, तुर्की शब्द भी प्रयोग में आने लगे। हिंदी ने उन्हें अपना लिया और वे विदेशी नहीं रह गए, हिंदी के अभिन्न अंग बन गए।

अंग्रेजी के शब्द हिंदी में धड़ल्ले से प्रयुक्त हो रहे हैं।

अंग्रेजी शब्द

अफसर, डॉक्टर, नर्स, बोतल, इंजेक्शन, अस्पताल, पेन, पेंसिल, रेल, ट्रेन, टिकट, स्कूल, फुटबाल, सिनेमा, टैक्सी, नोटिस, मोटर, पेट्रोल, डीजल, मीटर, थर्मामीटर, साइकिल इत्यादि।

अरबी शब्द

अजीब	कीमत	दावा	आफत	जुरमाना	पैदावार
अदा	जहाज	नकद	चेहरा	दरबार	सौदागर
अमीर	तकिया	खबर	जादू	परदा	फीता
औलाद	दवा	गरीब	आलपिन	चाबी	
तारीख	मजबूर	तकदीर	किराना	तंबाकू	

1.4 सहायक सामग्री

कहावतें / लोकोक्तियाँ

कहावतें या लोकोक्तियाँ प्रायः किसी कहानी, प्रसंग या घटना से संबद्ध रहती हैं। प्रसंग, कहानियाँ या घटनाएँ तो लुप्त हो गईं पर उनसे बनी कहावतें प्रयोग में आने लगीं। उदाहरण के लिए एक कहानी नीचे दी जा रही है।

‘चोर की दाढ़ी में तिनका’

(Guilty mind is always suspicious)

बहुत पुरानी बात है। एक बहुत धनी ज़मींदार था। उसका नाम माधवराज था। उसके पास सोने का एक कीमती हार था। हर रात सोने से पहले ज़मींदार हार को गले से उतारकर अपने सिरहाने रख देता था। सुबह नहा-धोकर पहन लेता था। एक दिन उसका हार गुम हो गया। उसके घर में कई नौकर-चाकर थे। सभी को अलग-अलग बुलाकर उसने पूछा। सभी ने यही कहा, “हुजूर, मैंने आपका हार नहीं लिया है। चाहे जो भी कसम ले लें।”

ज़मींदार बड़ा चिंतित था। एक दिन उसका एक मित्र आया। ज़मींदार ने उसे यह बात बताई। उसका मित्र वनमाली बड़ा ही चतुर और सूझबूझ वाला था। उसने कहा, “माधवराज, चिंतित न हों, मैं पता लगा लूँगा कि हार किसने चुराया है।”

ज़मींदार ने कहा, “तुम कैसे पता लगा लोगे ? एक सप्ताह में मैंने सभी नौकरों से पूछताछ कर ली है। मैंने डराया, धमकाया, ईश्वर का डर दिखाया पर कोई असर नहीं पड़ा।”

वनमाली बोला : “तुम्हारे महल में कितने नौकर हैं?”

ज़मींदार : “पंद्रह”

वनमाली : “क्या कोई छुट्टी लेकर बाहर गया है ?”

ज़मींदार : “नहीं तो।”

वनमाली : “सभी नौकरों को बुलाओ। मैं उन्हें देखना चाहता हूँ।”

जमींदार ने सभी नौकरों को बुलाकर वनमाली के सामने खड़ा कर दिया। वनमाली ने उनके नाम पूछे। सभी ने अपना-अपना नाम बता दिया। वनमाली बुदबुदाते हुए उनके आगे-पीछे चक्कर लगाने लगा। वह ऐसे बुदबुदा रहा था मानो कोई मंत्र पढ़ रहा हो।

सबके सामने खड़े होकर उसने जमींदार से कहा, “माधवराज, यहाँ मेरे पास खड़े हो जाओ। तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किसने चोरी की है। मंत्र-शक्ति से मैं जान गया हूँ।”

माधवराज : “मुझे बताओ कौन है वह ?”

वनमाली : “नाम बताने की जरूरत नहीं। सामने देखो, चोर की दाढ़ी में तिनका है।” जिसने चोरी की थी उसने तुरंत दाढ़ी से तिनका हटाने का प्रयत्न किया। वनमाली ने कहा, “यही वह नौकर है जिसने तुम्हारा हार चुराया है।” उस नौकर ने चोरी करना स्वीकार कर लिया और उसने पैरों पर गिरकर क्षमा माँगी।

तब से “चोर की दाढ़ी में तिनका” कहावत चल पड़ी। अर्थ हुआ, जो गलती करता है उसे शंका बनी रहती है। अंग्रेजी में कहा गया है “Guilty mind is always suspicious.”

कुछ कहावतें नीचे दी जा रही हैं :-

- (1) **अंधे की लकड़ी** – एकमात्र सहारा (The only support)
- (2) **अंधों में काना राजा** – नासमझ लोगों के बीच एक थोड़ा समझदार व्यक्ति (A figure among cyphers)
गाँव में लोकपति ही प्राइमरी पास है बाकी सब निरक्षर हैं। ठीक ही कहा है, अंधों में काना राजा।
- (3) **अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत** – काम बिगड़ने के बाद पश्चाताप करने से क्या लाभ (It is no use crying over split milk)
भवभूति को नौकरी का कागज मिला था परंतु वह नहीं गया। अब वह जगह भर गई। अब भवभूति दुखी है। पर अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।
- (4) **आस्तीन का साँप** – विश्वासघाती (Ungrateful, Cheat)
मैंने अपने भतीजे को पाला-पोसा, पढ़ाया-लिखाया। उसी ने अदालत में मेरे खिलाफ झूठी गवाही दी। वह तो आस्तीन का साँप निकला।
- (5) **देखें, ऊँट किस करवट बैठता है** – अनिश्चितता की स्थिति (See which way the wind blows)
मैंने अदालत में मुकदमा कर दिया है। कल निर्णय का दिन है। देखें ऊँट किस करवट बैठता है।
- (6) **ऊँट के मुँह में जीरा** – आवश्यकता से बहुत ही कम (A drop in the ocean)
मनमोहन ने मकान बनाने के लिए बैंक से दस लाख रुपए माँगे थे, पर बैंक ने केवल एक लाख दिए। यह तो ऊँट के मुँह में जीरा वाली बात हुई न!
- (7) **एक और एक ग्यारह** – एकता में शक्ति (Unity is Strength)

तुम दोनों भाई मिलकर रहो तो तुम्हारे विरोधी तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। तुम तो जानते ही हो एक और एक ग्यारह होते हैं।

- (8) **एक पंथ दो काज – एक ही कार्य से दो लाभ** (To kill two birds with one stone)
एक सरकारी फाइल लेकर मुझे मुंबई जाने का आदेश मिला है। मैंने सोचा वहाँ मैं अपने बड़े भाई से भी मिल आऊँगा। एक पंथ दो काज हो जाएँगे।

- (9) **काला अक्षर भैंस बराबर – बिल्कुल अनपढ़ होना** (To be illiterate)
पड़ोसी से तुम अपनी चिट्ठी क्या लिखवाओगे। उसके लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है।

- (10) **खून पसीने की कमाई – बड़ी मेहनत से कमाई संपत्ति या धन** (Hard earned money)

अपने पिता की खून-पसीने की कमाई को राकेश ने शराब और जुए में उड़ा दिया।

- (11) **चोर-चोर मौसेरे भाई – एक ही तरह के** (Birds of the same feather / chips of the same block)

मुकेश और सतीश दोनों में खूब पटती है। दोनों ही ब्लैक में सिनेमा के टिकट बेचते हैं और पटेगी भी क्यों नहीं। चोर-चोर मौसेरे भाई जो ठहरे।

- (12) **होनहार बिरवान के होत चीकने पात – होनहार के लक्षण पहले ही प्रकट होने लगते हैं** (Coming events cast their shadow before)

शिवशंकर भारतीय प्रशासनिक सेवा में अवश्य चुना जाएगा। प्रथम परीक्षा में उसे बहुत अच्छे अंक मिले हैं। ठीक ही कहा गया है होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

- (13) **हाथ कंगन को आरसी क्या – प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या जरूरत?** (Self evident needs no proof)

थानेदार साहब, मैं सरकारी कर्मचारी हूँ। मेरे ब्रीफकेस में सरकारी फाइलें हैं, विश्वास न हो तो ब्रीफकेस देख लीजिए। हाथ कंगन को आरसी क्या ?

- (14) **चिराग तले अंधेरा – जहाँ विद्वता हो वहीं अज्ञानता का कार्य** (Nearer the Church, farther from heaven)

मास्टर साहब से ट्यूशन लेने वाले पाँचों लड़के पास हो गए पर उनका खुद का लड़का फेल हो गया। इसी को तो कहते हैं चिराग तले अँधेरा।

- (15) **बात का धनी – वचन का पक्का** (True to one's word)

वादे के अनुसार राधेश्याम आज शाम तक अवश्य आएगा। वह बात का धनी है।

- (16) **पानी में रहकर मगर से बैर – किसी के आश्रित रहकर दुश्मनी करना** (To live in Rome and quarrel with the Pope)

तुम अपने उच्च अधिकारी को कभी नाराज मत करना। पानी में रहकर मगर से बैर करना ठीक नहीं।

मुहावरे

वह वाक्यांश जो शाब्दिक अर्थ का बोध न कराके विशेष अर्थ का बोध कराता है 'मुहावरा' कहलाता है।

- मुहावरे का प्रयोग वाक्य के संदर्भ में ही होता है – स्वतंत्र रूप से नहीं।
- मुहावरा अपने स्वरूप में बदलाव नहीं लाने देता अर्थात् उसमें प्रयुक्त शब्द / शब्दों का पर्याय रखने से मुहावरा नहीं बनता।
- मुहावरे में शब्द अपना कोशीय अर्थ (Lexical meaning, meaning in the dictionary) खो देता है और अन्य शब्दों के साथ मिलकर विशेष या विलक्षण अर्थ दर्शाता है।
- मुहावरे के प्रयोग से भाषा में सरलता आ जाती है और कथन का प्रभाव बढ़ जाता है।

एक उदाहरण देखिए 'पेट काटना' एक मुहावरा है जिसका अर्थ है अपने खाने-पीने में कटौती करना ताकि अन्य खर्चों की पूर्ति हो सके। 'राधा रमण ने पेट काटकर अपने लड़के को इंजीनियरी पढ़ाई।' यहाँ पेट काटना का शाब्दिक अर्थ बिल्कुल खो गया है। नीचे कुछ मुहावरे वाक्यों में प्रयोग के साथ दिए जा रहे हैं :-

- (1) **अँगूठा दिखाना** – जरूरत पड़ने पर धोखा देना (To back out)
मेरे मित्र ने मुझे एक लाख रुपए देने का वादा किया था परंतु जब वक्त आया तो उसने अँगूठा दिखा दिया।
- (2) **अपना उल्लू सीधा करना** – अपना स्वार्थ सिद्ध करना / अपना काम निकालना।
मधुकर ने अपना उल्लू सीधा किया और मुझे अँगूठा दिखाकर चलता बना।
- (3) **अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना** – खुद अपना नुकसान करना। (To harm one self)
अपने अधिकारी से झगड़ा मोल लेकर तुमने अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी है।
- (4) **अपने पैरों पर खड़ा होना** – आत्मनिर्भर होना। (To be self supporting / self reliant / self sufficient)
माँ, मेरी शादी की जल्दी मत करो। पहले मुझे अपने पैरों पर खड़ा हो लेने दो।
- (5) **अपने मुँह मियाँ मिट्टू बनना** – अपनी तारीफ स्वयं करना। (Self praise is no recommendation / to indulge in self praise)
तुमने अपने बारे में इतनी बड़ी-बड़ी बातें बताईं। बात तब है जब दूसरे तुम्हारी प्रशंसा करें, तुम तो अपने मुँह मियाँ मिट्टू बन रहे हो।
- (6) **आँखों में धूल झाँकना** – धोखा देना। (to cheat, to deceive)
सोने के गहनों को चमकाने (साफ करने) का बहाना करके वह धोखेबाज गृहिणी की आँखों में धूल झाँककर गहनों के साथ चलता बना।
- (7) **आपे से बाहर होना** – बहुत क्रोधित होना / नाराज होना। (to be beside one self due to anger)

- जैसे ही मैंने फकीरचंद से उसके छोटे भाई की जमानत के बारे में पूछा वह आपे से बाहर हो गया और मुझे गाली देने लगा।
- (8) **ईद का चाँद होना** – बहुत दिनों बाद दिखाई पड़ना। (rare sight / once in the blue moon)
तुम तो ईद का चाँद हो गए। कहाँ रहे इतने दिन ?
- (9) **खटाई में पड़ना** – किसी काम में रुकावट या व्यवधान आ जाना। (to be obstructed / to be delayed)
मेरा नियुक्ति पत्र निकलने ही वाला था। नए पदों पर रोक लगने से मेरी नियुक्ति खटाई में पड़ गई।
- (10) **गड़े मुर्दे उखाड़ना** – पुरानी दबी बात को फिर से उभारना। (let bygones be bygones)
तुम कहते हो उसने तुम्हें पहले नुकसान पहुँचाया था। पुरानी बातें भूल जाओ। गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या लाभ ?
- (11) **तिल का ताड़ बनाना** – बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना। (to exaggerate)
उसकी बात पर विश्वास न करो। वह तो तिल का ताड़ बनाता है।
- (12) **दाँतों तले उँगली दबाना** – आश्चर्य करना / चकित होना। (to be astonished)
ताजमहल की कारीगरी और नक्काशी देख बड़े-बड़े विदेशी वास्तुशिल्पी दाँतों तले उँगली दबाते हैं।
- (13) **दाल में काला होना** – कुछ शंकास्पद काम होना। (there is something fishy in... / about any affair)
वह वादा करके भी अभी तक नहीं आया। लगता है दाल में कुछ काला है।
- (14) **दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करना** – खूब उन्नति करना। (by leaps and bounds)
जब से पंचवर्षीय योजनाएँ लागू हुईं, देश दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है।
- (15) **दिन रात एक कर देना** – अनवरत मेहनत करना।
भीमराव ने इस परियोजना की सफलता के लिए दिन-रात एक कर दिया।
- (16) **नाक में दम करना** – बहुत परेशान करना। (to irritate)
इन बच्चों ने शोर मचाकर नाक में दम कर दिया है।
- (17) **पहाड़ टूट पड़ना** – बहुत बड़ी मुसीबत आना।
शिव शंकर मुकदमे में हार गया। उसकी नौकरी भी छूट गई, उस पर मानो पहाड़ टूट पड़ा।
- (18) **पाँचों उँगलियाँ घी में होना** – सभी ओर से लाभान्वित होना। (His bread is buttered on both sides)

सोमनाथ के चाचा जी निःसंतान थे। चाचा जी की सारी जायदाद सोमनाथ को मिली। अब तो उसकी पाँचों उँगलियाँ घी में हैं।

(19) **मुट्ठी गरम करना** – रिश्वत देना। (to grease one's palm)

अपना काम निकलवाने के लिए अधिकारी की मुट्ठी गरम करने से देश का विकास रुकता है।

(20) **हवाई किले बनाना** – ऊँची-ऊँची कल्पना करके खुश होना। (to built castles in the air)

सीताराम काम कुछ करता नहीं केवल हवाई किले बनाता रहता है।

(21) **हाथ मलना** – पछताना। (to repent)

जमीन में अभी से अपना हिस्सा ले लो, वरना सब बँट जाएगा और तुम हाथ मलते रह जाओगे।

पर्यायवाची शब्द (Synonyms)

जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो वे 'प्रतिशब्द', 'समानार्थी शब्द' या 'पर्यायवाची शब्द' कहलाते हैं। उनमें से एक शब्द प्रसंगानुसार अपने पर्यायवाची शब्द से प्रतिस्थापित (replace) किया जा सकता है। यथा

राम, सीता और लक्ष्मण		वन		में रहने लगे।
		जंगल		

वन - जंगल

कुछ अधिक प्रचलित पर्यायवाची शब्द नीचे दिए जा रहे हैं :-

शब्द	पर्यायवाची शब्द
अमृत	सुधा, पीयूष, अमिय।
आग	अग्नि, पावक, अनल।
आँख	नयन, नेत्र, दृग, लोचन।
अंग	अवयव, अंश, भाग, हिस्सा।
आकाश	आसमान, गगन, अंबर, नभ।
आनंद	प्रसन्नता, उल्लास, सुख, हर्ष।
इच्छा	आकांक्षा, अभिलाषा, चाह, कामना।
कपड़ा	वस्त्र, वसन, अंबर, चीर।
कमल	सरोज, जलज, पंकज, अंबुज।
घर	गृह, निकेतन, आवास, निलय।

चतुर	दक्ष, प्रवीण, निपुण, होशियार।
चाँद	चंद्रमा, चंद्र, सुधाकर, शशि, राकेश।
जंगल	वन, अरण्य, कानन।
जल	पानी, नीर, वारि, सलिल।
तालाब	सरोवर, जलाशय, तड़ाग।
दुख	पीड़ा, व्यथा, कष्ट, वेदना, शोक, क्लेश।
धन	द्रव्य, वित्त, संपदा, दौलत।
नदी	सरिता, तटिनी, तरंगिणी।
पत्थर	प्रस्तर, पाषाण, पाहन।
पर्वत	शैल, गिरि, पहाड़, महीधर।
पुत्र	बेटा, सुत, आत्मज।
पृथ्वी	भू, भूमि, धरा, धरती, वसुंधरा।
पेड़	वृक्ष, तरु, द्रुम, विटप।
फूल	पुष्प, सुमन, कुसुम, प्रसून।
बादल	मेघ, घन, वारिद, जलद, नीरद, पयोद।
बिजली	चपला, दामिनी, विद्युत, तड़ित।
सागर	समुद्र, जलधि, सिंधु, पयोधि।
सूर्य	सूरज, रवि, आदित्य, दिनकर, भास्कर, भानु।
स्त्री	नारी, वनिता, महिला, कामिनी।

अनेकार्थी शब्द

भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जिनके कई अर्थ होते हैं और वे प्रसंगानुकूल अलग-अलग अर्थ की प्रतीति कराते हैं। उदाहरण के लिए हम निम्नलिखित वाक्य को लें :-

- (1) रामनारायण, तुमने मेरे पत्र का उत्तर क्यों नहीं भेजा ? (जवाब)
- (2) रामनारायण का मकान झील के उत्तर में है (एक दिशा का नाम)

इस तरह के कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं :-

शब्द	अर्थ
अर्थ	मतलब, धन, रुपए-पैसे
अंक	संख्या, नाटक के भाग, गोद, पत्र-पत्रिकाओं के क्रम

शब्द	अर्थ
अपवाद	नियम से अलग, कलंक
अंबर	आकाश, कपड़ा
आदि	प्रारंभ, शुरू, इत्यादि
आम	आम का पेड़ या फल, सर्वसाधारण / सर्व सामान्य, मामूली
कनक	सोना, धतूरा
कर	हाथ, टैक्स, हाथी की सूँड़, किरण
कुशल	खैरियत, चतुर, दक्ष, प्रवीण
गति	हालत, स्थिति, चाल, मोक्ष
गुरु	महान, बड़ा, शिक्षक, अध्यापक, एक ग्रह, वजन वाला, वजनी
घन	बादल, लंबाई x चौड़ाई x ऊँचाई
जाल	जाला, मछली पकड़ने का जाल, फरेब, धोखा
द्रव्य	धन, वस्तु
धन	संपत्ति, दौलत, जोड़, योग
धर्म	संप्रदाय, प्रकृति, स्वभाव, कर्तव्य
पद	दर्जा, गीत, वाक्य में प्रयुक्त शब्द, पैर
पत्र	चिट्ठी, पत्ता
पक्ष	माह का पंद्रह दिन का भाग, पंख, की तरफ, के साथ
पानी	जल, इज्जत, चमक
पृष्ठ	किताब का पन्ना, पीठ-पीछे का भाग
फल	परिणाम, नतीजा, पेड़ से प्राप्त फल
बल	शक्ति, ताकत, सेना
भूत	बीता हुआ (समय / काल), प्रेतात्मा
मधु	शहद, वसंत ऋतु, शराब, मीठा
लक्ष्य	उद्देश्य, निशाना
वर्ण	रंग, अक्षर, जाति
वार	चोट, आघात, दिन
सर	सिर, तालाब, तीर

विलोम शब्द (Antonyms)

भाषा में कई ऐसे शब्द युग्म हैं जो एक-दूसरे के अर्थ से सर्वथा विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं, जैसे— रात x दिन / अच्छा x बुरा / सुखी x दुखी। हमें इतना ध्यान रखना चाहिए कि संज्ञा का विपरीतार्थक शब्द संज्ञा, विशेषण का विशेषण, क्रिया विशेषण का क्रिया विशेषण ही होना चाहिए। कुछ अधिक प्रयोग में आने वाले विलोम शब्द युग्म नीचे दिए जा रहे हैं :-

शब्द	विलोम
अंत	आदि
अंतरंग	बहिरंग
अंधकार	प्रकाश, उजाला
अतिवृष्टि	अनावृष्टि
अनुकूल	प्रतिकूल
अनुराग	विराग
अपमान	मान, सम्मान
परतंत्र	स्वतंत्र
परमार्थ	स्वार्थ
प्रधान	गौण
प्रमुख	सामान्य, गौण
अमृत / अमिय	विष, हलाहल
अर्वाचीन, नवीन	प्राचीन, पुरातन, पुराना
आदान	प्रदान
आय	व्यय
आयात	निर्यात
आलोक, प्रकाश	अंधकार, अँधेरा
उत्कर्ष	अपकर्ष
उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
उपकार	अपकार
उपयुक्त	अनुपयुक्त
कृत्रिम	अकृत्रिम, प्रकृत

शब्द	विलोम
गुरु	लघु
छाँव / छाया	धूप
प्रत्यक्ष	परोक्ष
प्राकृतिक	अप्राकृतिक, कृत्रिम
लौकिक	अलौकिक
विशेष	सामान्य
विस्तृत	संक्षिप्त
संयोग	वियोग
सजीव	निर्जीव
सम्मान	अपमान
साकार	निराकार
सार्थक	निरर्थक
सुकर्म	कुकर्म, दुष्कर्म
सुगंध	दुर्गंध
जड़	चेतन
जन्म	मृत्यु, मरण
जटिल / कठिन	सरल
दुर्जन	सज्जन
सुमति	कुमति
सौभाग्य	दुर्भाग्य
हर्ष	विषाद, शोक
हिंसा	अहिंसा

पाठ-5 : लिपि तथा उच्चारण
(प्रथम प्रश्न पत्र)

विषय सूची

1.0	लिपि तथा उच्चारण	93
1.1	देवनागरी लिपि का उद्भव एवं विकास	93
1.2	लिपि की वैज्ञानिकता के मापदंड	93
1.3	देवनागरी लिपि की विशेषताएँ	94
1.4	हिंदी वर्तनी का मानकीकरण	96
1.5	हिंदी वर्तनी में होने वाली सामान्य त्रुटियाँ	99
1.6	देवनागरी वर्णों में रूपों की विविधता	102
1.7	हिंदी के शब्दों की उच्चारण संबंधी विशेषताएँ	103
1.8	हिंदी वाक्यों में शब्द क्रम	104

1.0 लिपि तथा उच्चारण

भाषा के उच्चरित रूप को निर्धारित प्रतीक चिह्नों के माध्यम से लिखित रूप देने का साधन ही लिपि है। लिपि की उत्पत्ति भाषा की उत्पत्ति के बहुत बाद में हुई। लिपि, मानव समुदाय का एक बहुत बड़ा आविष्कार है। इसके प्रयोग, क्रमिक विकास में काफी समय लगा। लिपि की उत्पत्ति से पहले भावाभिव्यक्ति का दायरा बोलने और सुनने वाले तक सीमित रहता था। मनुष्य की उत्कट अभिलाषा थी कि ज्ञान-विज्ञान विषयक उसके विचार दूर-दूर तक पहुँचें। उन्हें भविष्य के लिए संचित किया जा सके, उनका संरक्षण किया जा सके। इस आवश्यकता की पूर्ति करना ही उसका लक्ष्य बन गया और आगे चलकर यही मनुष्य के लिए लिपि के आविष्कार की प्रेरणा भी बनी।

1.1 देवनागरी लिपि का उद्भव एवं विकास

प्राचीन भारत में ब्राह्मी और खरोष्ठी नाम की दो लिपियाँ प्रचलित थीं। ब्राह्मी लिपि का प्रयोग पश्चिमोत्तर भारत को छोड़कर प्रायः पूरे देश में होता था। ब्राह्मी आर्य लिपि थी। इसमें वे सभी ध्वनि संकेत थे जो भाषा में प्रयुक्त ध्वनियों के लिए होने चाहिए अर्थात् हर एक ध्वनि के लिए एक अलग वर्ण या अक्षर था। भाषा की ध्वनि और वर्ण में अन्योन्याश्रित संबंध था। ब्राह्मी लिपि देवनागरी की तरह बाईं ओर से दाहिनी ओर लिखी जाती थी। इसी ब्राह्मी से भारत की समस्त मध्यकालीन और आधुनिक लिपियों का उद्भव हुआ। ब्राह्मी की उत्तरी शैली से देवनागरी, असमी, उड़िया, कश्मीरी, गुरुमुखी, गुजराती और बंगला लिपियाँ विकसित हुईं। और ब्राह्मी लिपि की दक्षिणी शैली से कन्नड़, तमिल, तेलुगु और मलयालम लिपियों का विकास हुआ।

इस बात के पर्याप्त साक्ष्य मिले हैं कि मौर्य काल में ब्राह्मी का प्रयोग सारे भारत में होता था। ब्राह्मी में लिखे शिलालेख ईसा पूर्व पाँचवीं शती तक के मिले हैं। इस लिपि का प्रचार 350 ई. तक रहा। चौथी शताब्दी में कुछ परिवर्तनों के कारण यही 'गुप्त लिपि' कहलाई। लिपि को यह नाम संभवतः तत्कालीन गुप्त सम्राटों के महत्व के कारण मिला। यह गुप्त लिपि ही कालांतर में कुटिल लिपि बनी। कुटिल लिपि का प्रचार ईसा की छठी से नवीं शताब्दी तक रहा। कुटिल लिपि से ही देवनागरी तथा कश्मीर की प्राचीन लिपि 'शारदा लिपि' का विकास हुआ। इस काल की देवनागरी को हम 'प्राचीन नागरी' कह सकते हैं। इसी का विकसित रूप आज प्रचलित है।

1.2 लिपि की वैज्ञानिकता के मापदंड

किसी भी भाषा के लिए प्रयुक्त लिपि के वर्णों / अक्षरों की विशिष्टता इसमें है कि सभी वर्णों के लिए अलग-अलग प्रतीक हों, वर्णों में स्पष्ट आकार भेद हो, लिखने में सरल हो और स्पष्ट हो, कम समय लगे और कम स्थान घेरे।

इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार से किया जा सकता है :-

(क) भाषा की हर सार्थक ध्वनि के लिए प्रतीक या वर्ण हो।

(ख) हर वर्ण एक ही ध्वनि का प्रतिनिधित्व करे। किंतु अंग्रेजी में इस व्यवस्था के विपरीत उदाहरण देखने को मिलते हैं।

इसे स्पष्ट करने के लिए हम अंग्रेजी का उदाहरण लें।

अंग्रेजी के C का उच्चारण निम्नलिखित शब्दों में देखें :-

Cat में 'C' का उच्चारण 'क' है, जब कि Cent में 'C' का उच्चारण 'स' है।

(ग) एक ही ध्वनि के लिए कई लिपि चिह्न न हों, लेकिन उर्दू में 'स' के लिए से, सीन, स्वाद तीन अक्षर हैं।

(घ) जो बोला जाए वही लिखा जाए और जो लिखा जाए वही बोला जाए अर्थात् लेखन-उच्चारण / पठन में सीधा संबंध हो। निम्नलिखित उदाहरण में 'CH' का उच्चारण 'च', 'क' और 'श' के रूप में किया जा रहा है, जो सही नहीं है :-

Ch-	charm	monarch	chef
	चार्म	मोनार्क	शेफ

(ङ) ध्वनि प्रतीक / वर्ण एक-दूसरे से इतने भिन्न लगें कि तुरंत पहचाने जा सकें।

(च) वर्णों / अक्षरों के वर्गीकरण में कोई विशेष क्रम हो, वर्गीकरण का कोई वैज्ञानिक आधार हो।

1.3 देवनागरी लिपि की विशेषताएँ

(क) भाषा की हर सार्थक ध्वनि के लिए एक लिपि संकेत है। हिंदी के जितने स्वनिम (ध्वनियाँ) हैं, उन सभी के लिए अलग-अलग वर्ण या अक्षर हैं। न कम न ज्यादा। जैसे-

'क' स्पर्श व्यंजन, अघोष, अल्पप्राण ध्वनि है और क उसका लिपि चिह्न है।

(ख) हिंदी का हर वर्ण यथोचित एक ही ध्वनि का प्रतिनिधित्व करता है।

क	प्रारंभ में कमल	मध्य में मकान	अंत में नाक	सर्वत्र 'क' ही उच्चरित होगा।
---	--------------------	------------------	----------------	------------------------------

(ग) शब्द में प्रयुक्त प्रत्येक वर्ण उच्चरित होता है—कोई भी वर्ण अनुच्चरित नहीं रहता। अंग्रेजी के knife, write में क्रमशः 'k' और 'w' अनुच्चरित हैं।

(घ) हिंदी में जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा जाता है। इसलिए यदि अन्य भाषा-भाषी, हिंदी के शब्दों का ठीक उच्चारण सुनकर ठीक लेखन करें तो वर्तनी की गलती नहीं होगी।

(ङ) हिंदी के सभी वर्णों में आकार की दृष्टि से पूर्ण भिन्नता है। इसलिए लेखन में किसी प्रकार की भ्रामक स्थिति उत्पन्न नहीं होती।

(च) नागरी वर्णमाला का वर्गीकरण (classification) और अनुस्तरीकरण (sequences)

(i) पहले स्वर

(ii) फिर व्यंजन

- (iii) स्वरों में पहले ह्रस्व फिर दीर्घ
अ, आ, इ, ई, उ, ऊ ह्रस्व-दीर्घ क्रम में
- (iv) ए, ऐ, ओ, औ - प्राचीन आर्यभाषाओं में ये संध्यक्षर थे।
ये क्रमशः अ + इ (ए), आ + इ (ऐ), अ + उ (ओ), आ + उ (औ)
अब हिंदी के मूल स्वर हैं। चारों दीर्घ स्वर हैं।
- (v) व्यंजन ध्वनियों को वैज्ञानिक आधार पर अभिक्रमित किया गया है।*
- | | | | |
|---------|------------|-----|------------|
| क ख ग घ | ← कंठ्य | → ड | } अनुनासिक |
| च छ ज झ | ← तालव्य | → ञ | |
| ट ठ ड ढ | ← मूर्धन्य | → ण | |
| त थ द ध | ← दंत्य | → न | |
| प फ ब भ | ← ओष्ठ्य | → म | |
- (vi) हर वर्ग का पहला अक्षर (क, च, ट, त, प) अघोष, अल्पप्राण, स्पर्श व्यंजन है।
- (vii) हर वर्ग का द्वितीय वर्ण (ख, छ, ठ, थ, फ) अघोष, महाप्राण, स्पर्श व्यंजन है।
- (viii) हर वर्ग का तीसरा अक्षर (ग, ज, ड, द, ब) सघोष, अल्पप्राण, स्पर्श व्यंजन है।
- (ix) हर वर्ग का चौथा व्यंजन (घ, झ, ढ, ध, भ) सघोष, महाप्राण, स्पर्श व्यंजन है।
- (x) हर वर्ग का पंचम अक्षर अनुनासिक है।
- (xi) इसके बाद य, र, ल, व अंतस्थ व्यंजन हैं। इन्हें अंतस्थ इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनका उच्चारण स्वर और व्यंजन के बीच का है।
- (xii) अंतस्थ व्यंजन के पश्चात श, ष, स हैं जिन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं।
- (xiii) ह संघर्षी घोष ध्वनि है।
- (xiv) क्ष, त्र, ज्ञ, श्र संयुक्त व्यंजन हैं।
क् + ष = क्ष, त् + र = त्र, ज् + ञ = ज्ञ, श् + र = श्र
- (xv) इ मूर्धन्य, घोष, अल्पप्राण ध्वनि है और ढ महाप्राण ध्वनि है।
- (छ) हिंदी में प्रयुक्त देवनागरी वर्णमाला निम्नलिखित क्रम में लिखी जाती है।
स्वर - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
अनुस्वार - अं तथा अः (विसर्ग :)

* कंठ्य = velar, तालव्य = palatal, मूर्धन्य = alveolar, दंत्य = dental, ओष्ठ्य = bilabial, सघोष / घोष = voiced, अघोष = unvoiced, अल्पप्राण = un-aspirate, महाप्राण = aspirate, स्पर्श = stop, अनुनासिक = nasal, संध्यक्षर = dipthong

व्यंजन

नाम	अघोष अल्पप्राण	अघोष महाप्राण	घोष अल्पप्राण	घोष महाप्राण	अनुनासिक अल्पप्राण / महाप्राण	
कंठ्य या 'क' वर्ग	क	ख	ग	घ	ङ	
तालव्य या 'च' वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	
मूर्धन्य या 'ट' वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	इ ढ
दंत्य या 'त' वर्ग	त	थ	द	ध	न	
ओष्ठ्य या 'प' वर्ग	प	फ	ब	भ	म	
अंतस्थ*	य	र	ल	व		
ऊष्म	श	ष	स			
संघर्षी* घोष		ह				
संयुक्त अक्षर*	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र		

आगत ध्वनियाँ / गृहीत स्वन

अंग्रेजी से ओ ball में 'a' की ध्वनि

doctor में 'o' की ध्वनि

फारसी से नुक्ता क / ख / ग / ज / फ़

1.4 हिंदी वर्तनी का मानकीकरण

भारत सरकार ने हिंदी की वर्तनी में एकरूपता लाने के विषय में सुझाव देने हेतु एक विशेषज्ञ समिति का गठन 1961 में किया था। इसमें भाषाविद्, शिक्षा शास्त्री, अध्यापक, पत्रकार तथा हिंदी के मूर्धन्य विद्वान थे। इस समिति द्वारा दिए गए सुझाव मंत्रालय द्वारा स्वीकृत हुए तथा 1966 में शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रकाशित किए गए। इनमें समय-समय पर संशोधन होते रहे हैं। देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी के मानकीकरण के संबंध में अद्यतन सिफारिशों में से कुछ इस प्रकार हैं :-

(क) खड़ी पाई वाले व्यंजन -

खड़ी पाई वाले व्यंजनों का संयुक्त रूप खड़ी पाई को हटाकर बनाया जाए, यथा :- कुत्ता, प्यास, सभ्य, उल्लेख, पथ्य, धन्य।

* अंतस्थ = continuant, संघर्षी = fricative, संयुक्त व्यंजन = conjunct consonant

- (ख) बिना खड़ी पाई वाले व्यंजन, जैसे—
ड, छ, ट, ठ, ड, ढ, द और ह के संयुक्ताक्षर हल् का चिह्न लगाकर बनाए जाएँ, यथा—
वाङ्मय, लट्ठ, बुड्ढा, विद्या, चिह्न आदि
- (ग) 'क' और 'फ' के संयुक्ताक्षर—
पक्का, दफ्तर आदि ी तरह बनाए जाएँ।
- (घ) संयुक्त 'र' के प्रचलित तीनों रूप यथावत् रहेंगे, यथा—
प्रकार, धर्म, राष्ट्र।
- (ङ) 'श्र' का प्रचलित रूप ही मान्य रहेगा। त् + र के संयुक्त रूप के लिए त्र और त्र दोनों में से त्र का प्रयोग किया जाए।
- (च) हल् चिह्न युक्त वर्ण से बनने वाले संयुक्ताक्षर के द्वितीय व्यंजन के साथ 'इ' की मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन के पूर्व ही किया जाए। यथा—
द्वितीय, बुद्धिमान आदि।
- (छ) संस्कृत भाषा के मूल श्लोकों को उद्धृत करते समय संयुक्ताक्षर पुरानी शैली से भी लिखे जा सकेंगे। जैसे—संयुक्त, विद्या, चञ्चल, विद्वान्, वृद्ध, अङ्क, द्वितीय, बुद्धि आदि। किंतु उक्त नियमानुसार भी वर्तनी का प्रयोग किया जा सकता है।

विभक्ति चिह्न

- (क) हिंदी के विभक्ति चिह्न सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों में प्रातिपदिक से पृथक् लिखे जाएँ, जैसे—
राम ने, राम को, राम से आदि। सर्वनाम शब्दों में ये चिह्न प्रातिपदिक के साथ मिलाकर लिखे जाएँ, जैसे—उसने, उसको, उससे, उसपर आदि।
- (ख) सर्वनामों के साथ दो विभक्ति चिह्न हों तो उनमें से पहला मिलाकर और दूसरा पृथक् लिखा जाए, जैसे—उसके लिए, इनमें से।
- (ग) सर्वनाम और विभक्ति के बीच 'ही', 'तक' आदि का निपात हो तो विभक्ति को पृथक् लिखा जाए, जैसे—आप ही के लिए, मुझ तक को।

क्रियापद

संयुक्त क्रियाओं में सभी क्रियाएँ अलग-अलग लिखी जाएँ, जैसे—पढ़ा करता है, आ सकता है, बढ़ते चले आ रहे हैं आदि।

अव्यय

'तक', 'साथ' आदि अव्यय सदा पृथक् लिखे जाएँ, जैसे—आपके साथ, यहाँ तक।

श्रुतिमूलक 'य', 'व'

- (क) जहाँ श्रुतिमूलक य, व का प्रयोग विकल्प से होता है वहाँ किए-किये, नई-नयी, हुआ-हुवा आदि में से पहले (स्वरात्मक) रूपों का ही प्रयोग किया जाए। यह नियम क्रिया, विशेषण, अव्यय आदि

सभी रूपों और स्थितियों में लागू माना जाए, जैसे-दिखाए गए, राम के लिए, पुस्तक लिए हुए, नई दिल्ली आदि।

- (ख) जहाँ 'य' श्रुतिमूलक, व्याकरणिक परिवर्तन न होकर शब्द का ही मूल तत्व हो वहाँ वैकल्पिक श्रुतिमूलक स्वरात्मक परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है, जैसे-स्थायी, अव्ययीभाव, दायित्व आदि। यहाँ स्थाई, अव्ययीभाव, दाइत्व न लिखा जाए।

अनुस्वार तथा अनुनासिक-चिह्न (चंद्रबिंदु)

अनुस्वार (ं) और अनुनासिक चिह्न (ँ) दोनों प्रचलित रहेंगे।

संयुक्त व्यंजन के रूप में जहाँ पंचमाक्षर के बाद सवर्गीय शेष चार वर्णों में से कोई वर्ण हो तो एकरूपता और मुद्रण / लेखन की सुविधा के लिए अनुस्वार का ही प्रयोग करना चाहिए, जैसे गंगा, चंचल, ठंडा, संध्या, संपादक आदि में पंचमाक्षर के बाद उसी वर्ग का वर्ण आगे आता है। यदि पंचमाक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग का कोई वर्ण आए अथवा वही पंचमाक्षर दुबारा आए तो पंचमाक्षर अनुस्वार के रूप में परिवर्तित नहीं होगा, जैसे अन्य, अन्न, सम्मेलन, चिन्मय, उन्मुख आदि।

चंद्रबिंदु के बिना प्रायः अर्थ में भ्रम की गुंजाइश रहती है, जैसे हंस - हँस, अंगना - अँगना आदि में। अतएव चंद्रबिंदु का प्रयोग अवश्य किया जाना चाहिए। किंतु शिरोरेखा के ऊपर जुड़ने वाली मात्रा के साथ चंद्रबिंदु के स्थान पर बिंदु के प्रयोग की छूट दी जा सकती है। जैसे-नहीं, मैं, मैं।

विदेशी ध्वनियाँ

- (क) अरबी-फारसी या अंग्रेजी मूलक वे शब्द जो हिंदी के अंग बन चुके हैं और जिनकी विदेशी ध्वनियों का हिंदी ध्वनियों में रूपांतर हो चुका है, हिंदी रूप में ही स्वीकार किए जा सकते हैं, जैसे- कलम, किला, दाग आदि (कलम, किला, दाग नहीं)।
- (ख) अंग्रेजी के जिन शब्दों में अर्धविवृत 'ओ' ध्वनि का प्रयोग होता है, उनके शुद्ध रूप का हिंदी में प्रयोग अभीष्ट होने पर 'आ' की मात्रा (ा) के ऊपर अर्धचंद्र का प्रयोग किया जाए (ऑ, ॉ)। जैसे- कॉलेज, हॉकी, कॉफी, डॉक्टर आदि।

हिंदी में कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनके दो-दो रूप बराबर चल रहे हैं। कुछ उदाहरण हैं - गरदन / गर्दन, गरमी / गर्मी, बरफ / बर्फ, बिलकुल / बिल्कुल, सरदी / सर्दी, कुरसी / कुर्सी, भरती / भर्ती, फुरसत / फुर्सत, बरदाश्त / बर्दाश्त, वापिस / वापस, आखीर / आखिर, बरतन / बर्तन, दोबारा / दुबारा, दूकान / दुकान, बीमारी / बिमारी, दीवार / दीवाल, पूरी / पूड़ी आदि। दोनों वर्तनियाँ चलती रहेंगी।

विसर्ग

संस्कृत के जिन शब्दों में विसर्ग का प्रयोग होता है, वे यदि तत्सम रूप में प्रयुक्त होते हों तो विसर्ग का प्रयोग अवश्य किया जाए। जैसे- अतः, पुनः, प्रायः, स्वतः, प्रातःकाल, नमः, शनैः शनैः।

पूर्वकालिक प्रत्यय

पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' क्रिया से मिलाकर लिखा जाए, जैसे- मिलाकर, खा-पीकर, रो-रोकर आदि।

अन्य नियम

- (क) शिरोरेखा का प्रयोग प्रचलित रहेगा।
- (ख) फुलस्टॉप को छोड़कर शेष विराम आदि चिह्न वही ग्रहण कर लिए जाएँ, जो अंग्रेजी में प्रचलित हैं। यथा "-----! : ="
- (विसर्ग के चिह्न को ही कोलन का चिह्न मान लिया जाए)
- (ग) पूर्णविराम के लिए खड़ी पाई (।) का प्रयोग किया जाए।
- हाइफन** – हाइफन का प्रयोग स्पष्टता के लिए किया जाता है।
- (क) द्वंद्व समास में पदों के बीच हाइफन रखा जाए, जैसे—शिव-पार्वती-संवाद, देख-रेख, चाल-चलन, हँसी-मजाक, लेन-देन, पढ़ना-लिखना, खाना-पीना आदि।
- (ख) सा, जैसा, आदि से पूर्व हाइफन रखा जाए, जैसे—तुम-सा, राम-जैसा।

हल चिह्न

संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों का संस्कृत रूप ही रखा जाए, परंतु जिन शब्दों के प्रयोग में हिंदी में हल चिह्न लुप्त हो चुका है, उनमें उसको फिर से लगाने का यत्न न किया जाए, जैसे—महान्, विद्वान् आदि के 'न' में।

स्वन परिवर्तन

संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी को ज्यों का त्यों ग्रहण किया जाए। अतः 'ब्रह्मा' को 'ब्रम्हा', 'चिह्न' को 'चिन्ह' में बदलना उचित नहीं होगा। जिन तत्सम शब्दों में तीन व्यंजनों के संयोग की स्थिति में एक द्वित्वमूलक व्यंजन लुप्त हो गया है उसे न लिखने की छूट है, जैसे—अर्द्ध / अर्ध, उज्ज्वल / उज्वल, तत्त्व / तत्व आदि।

1.5 हिंदी वर्तनी में होने वाली सामान्य त्रुटियाँ

किसी भी भाषा में शब्दों की वर्तनी का बड़ा महत्व है। वर्तनी के छोटे से अंतर में अर्थ बदल जाता है। यहाँ ऐसे ही कुछ शब्दों की वर्तनी दी जा रही है जिनमें प्रायः गलती हो जाती है।

- (1) आदि = शुरू beginning
इत्यादि = etcetera
आदी = अभ्यस्त habituated
- (2) आकर = खान mine
आकार = स्वरूप, रूप size
- (3) आयत = लंबाई-चौड़ाई length-breadth
आयात = आना, बाहर से किसी वस्तु का आना import
- (4) आसन = बैठने का स्थान, बैठने के लिए कोई प्रबंध seat

- आसान = सरल simple
 आसन्न = नजदीक, पास near
- (5) कर्म = काम action, work
 क्रम = सिलसिला order, serial
- (6) कलि = कलियुग name of the present age
 कली = अधखिला फूल bug, unblossomed flower
- (7) कंकाल = ठठरी skeleton
 कंगाल = गरीब poor
- (8) कोश = dictionary
 कोष = खजाना treasure
- (9) किला = महल, दुर्ग fort
 कीला = लोहे की कील nail (iron)
- (10) खाद = उर्वरक manure, fertilizer
 खाद्य = खाने के योग्य eatable
- (11) खासी = काफी enough
 खाँसी = cough
- (12) गण = समूह group
 गण्य = गिनने के लायक countable
- (13) ग्रह = नक्षत्र planet
 गृह = घर house
- (14) गड़ना = चुभना to prick, अंदर जाना (जमीन के) to be buried
 गढ़ना = सुडौल बनाना to shape properly
- (15) चिर = पुराना old
 चीर = वस्त्र, कपड़ा cloth
- (16) चिता = अंत्येष्टि संबंधी funeral pyre
 चीता = एक जंगली जानवर leopard
- (17) चालक = चलाने वाला driver
 चालाक = चतुर clever, cunning
- (18) दिन = दिवस day
 दीन = गरीब poor, destitute

- (19) देव = देवता God
दैव = प्रारब्ध, भाग्य fate
- (20) द्रव = तरल पदार्थ liquid
द्रव्य = धन wealth
- (21) नत = नम्र / झुका हुआ polite
नद = बड़ी नदी a big river
- (22) दिया = 'दे' का भूतकालिक रूप gave
दीया = दीपक lamp
- (23) नियत = निश्चित appointed, fixed
नीयत = मंशा / इच्छा intention
- (24) निश्चल = अटल static
निश्छल = निष्कपट pure heart
- (25) नीरज = कमल lotus
नीरद = बादल cloud
- (26) परिणय = विवाह marriage
प्रणय = प्रेम love
- (27) पास = निकट, नजदीक near
पाश = बंधन tie, restriction
- (28) बलि = कुर्बानी sacrifice
बली = ताकतवर strong
- (29) बास = महक smell, fragrance
वास = रहना / निवास stay
- (30) बात = वचन, कहना talk
वात = हवा wind, air
- (31) बुरा = खराब bad
बूरा = बारीक शक्कर fine sugar
- (32) भारती = सरस्वती Goddess of knowledge and learning
भारतीय = भारत का रहने वाला Indian
- (33) राज = राज्य kingdom
राज़ = रहस्य secret

- (34) लक्ष = लाख one lac, ten million
लक्ष्य = निशाना aim, target
- (35) मूल = जड़ root
मूल्य = कीमत cost
- (36) वसन = कपड़ा cloth
व्यसन = लत, बुरी आदत bad habit, addiction
- (37) सर = तालाब tank
शर = बाण arrow
- (38) शती = सैकड़ा century
सती = पतिव्रता
(i) a lady totally devoted to her husband even after his death.
(ii) an out dated custom
- (39) शहर = नगर town
सहर = सवेरा, सुबह morning
- (40) समान = बराबर equal
सामान = सामग्री things, article
- (41) हल = solution, a plough
हाल = समाचार news

1.6 देवनागरी वर्णों में रूपों की विविधता

पहले मानकीकृत हिंदी वर्णों के कुछ अलग रूप थे। इनको जानना आवश्यक है क्योंकि पहले मुद्रित / लिखित सामग्री में वे वर्ण ही प्रयुक्त होते थे।

वर्ण

क्रम संख्या	पहले का रूप	मानक रूप
1.	अ	अ
2.	आ	आ
3.	ओ	ओ
4.	औ	औ
5.	अं	अं

6.	अः	अः
7.	ख	ख
8.	छ	छ
9.	झ	झ
10.	ण	ण
11.	ध	ध
12.	भ	भ

1.7 हिंदी के शब्दों की उच्चारण संबंधी विशेषताएँ

हिंदी भाषा की ध्वनियों और हिंदी लिखने के लिए प्रयुक्त देवनागरी लिपि में एक और एक की अनुरूपता (One to one correspondence) है। तात्पर्य यह है कि हिंदी में जितनी सार्थक ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं उन सबके लिए अलग ध्वनि प्रतीक अर्थात् वर्ण अथवा अक्षर हैं। न एक कम, न एक ज्यादा। इस तथ्य का सीधा संबंध लिखने और बोलने या पढ़ने में पूर्ण सामंजस्य से है। हिंदी में प्रायः वही लिखा जाता है जो बोला जाता है और वही बोला जाता है जो लिखा जाता है।

देवनागरी में एक भी ऐसा अक्षर नहीं है जो दो तरह से उच्चरित होता हो। साथ ही शब्द रचना में आए वर्णों में से कोई भी वर्ण अनुच्चरित नहीं होता।

हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में सीखने वाले ही नहीं, हिंदी भाषी भी वर्तनी संबंधी भूलें करते हैं। यह विशेषकर ईकारांत और ऊकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के पुल्लिंग रूप बनाते समय देखा जा सकता है। उदाहरण स्वरूप—

दवाई	इन सभी ईकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन रूपों में दीर्घ 'ई' ह्रस्व 'इ' हो जाती है। इसे हम
नदी	व्याकरणिक नियम न कहें तो उचित होगा। यह प्रयत्न लाघव और मुखसुख का सिद्धांत
सब्जी	है। स्वाभाविक रूप से पुल्लिंग प्रत्यय 'याँ' जोड़ने से पहले दीर्घ (long) 'ई' ह्रस्व (short) 'इ'
देवी	उच्चरित होता है। हिंदी भाषा का सिद्धांत है कि जैसा बोला जाए वैसा ही लिखा जाए। इस
रानी	स्थिति में ऊपर दिए गए शब्दों के बहुवचन रूप इस तरह बनेंगे और वैसे ही उच्चरित भी होंगे।

एकवचन रूप	बहुवचन रूप	एकवचन रूप	एकवचन रूप
दवाई	दवाईयाँ	देवी	देवी
नदी	नदियाँ	रानी	रानी
सब्जी	सब्जियाँ		

यही नियम ऊकारांत (ending in ऊ) स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन बनाते समय होता है। बहुवचन प्रत्यय 'एँ' जोड़ने से पहले दीर्घ ऊ (long ऊ) ह्रस्व उ (short उ) में परिवर्तित किया जाता है। सिद्धांत वही प्रयत्न लाघव (Principle of least effort) का है।

वधू }
 बहू } के बहुवचन रूप में { वधुएँ
 { बहुएँ

1.8 हिंदी वाक्यों में शब्द क्रम

अन्वय 1

भाषा मुख से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके माध्यम से एक समाज के सदस्य आपस में विचार विनिमय करते हैं।*

हर भाषा की अपनी विशिष्ट ध्वनियाँ होती हैं जिनकी सहायता से शब्द बनाए जाते हैं। शब्दों को भाषिक नियमों के अनुसार विशेष क्रम में रखने से वाक्य बनते हैं। किसी भाषा के वाक्य के शब्दों का क्रम क्या हो, इसका निर्णय व्यावहारिक व्याकरण करता है। वाक्य में शब्द क्रम, व्याकरणिक नियमों के अनुसार रखने से ही अपेक्षित अर्थ देने में वाक्य समर्थ होता है।

हिंदी भाषा में शब्दों का क्रम प्रायः निम्नलिखित नियमों के अनुसार होता है :-

- (i) वाक्य के प्रारंभ में कर्ता या उद्देश्य और अंत में क्रिया रखी जाती है।
गोपाल (कर्ता) सो रहा है। (क्रिया)
- (ii) कर्ता के बाद कर्म (सकर्मक क्रियाओं के प्रयोग से) और अंत में क्रिया रहती है।
धर्मवीर पुस्तक (कर्म) पढ़ रहा है।
- (iii) द्विकर्मक क्रिया के प्रयोग से वाक्य में दो कर्म प्रयुक्त होते हैं। एक गौण (secondary) और एक मुख्य (primary)
अध्यापक छात्रों को (गौण कर्म) कविता (मुख्य कर्म) पढ़ा रहा है।
- (iv) विशेषण अपने विशेष्य से पहले रखे जाते हैं, जैसे—
—यह सुंदर चित्र किसने बनाया है ?
विशेषण विशेष्य के बाद भी आता है, जैसे—
—यहाँ का दृश्य बड़ा ही मनमोहक है।
- (v) क्रिया विशेषण भी अपनी विशेष्य-क्रिया/विशेषण/अन्य क्रिया विशेषण के पहले प्रयुक्त होते हैं।
—रेलगाड़ी धीरे-धीरे (क्रि.वि.) चल रही थी।
—यहाँ का दृश्य अत्यधिक (क्रि.वि.) मोहक (विशेषण) है।
—बीमार व्यक्ति बहुत (क्रि.वि.) धीरे-धीरे (क्रि.वि.) बोल रहा था।
- (vi) समानाधिकरण शब्द मुख्य शब्द के बाद में रखा जाता है।
—तुम्हारा छोटा भाई रामप्रकाश बरामदे में बैठा है।
(मुख्य शब्द)

* A Language is a system of arbitrary vocal symbol by means of which a social group cooperates and interacts—Bloch & Trager, Outline of Linguistic Analysis. P.S.

अन्वय 2

क्रिया का पूरक कर्म की तरह कर्म की जगह रखा जाता है।

राजीव	डॉक्टर (पूरक)	है।
	समझदार (पूरक)	

अन्वय 3

- (viii) समुच्चय बोधक अव्यय (conjunct word) उन शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों के बीच आता है जिन्हें वह जोड़ता है।

पृथ्वी और अन्य ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं।

हमने सुधीर को कई बार समझाया पर / परंतु / किंतु / लेकिन उसने हमारी बात नहीं मानी।

- (ix) यदि 'और' अथवा 'या' इत्यादि कई शब्दों को जोड़ते हैं तो यह प्रायः अंतिम शब्द के पहले रखा जाता है।

राम, रहीम और एल्बर्ट सिनेमा देखने गए हैं।

राधारमण, पुनीत या हैदर अवश्य आएँगे।

- (x) पूर्णकालिक कृदंत (Perfect Participle) क्रिया के पहले रखा जाता है।

हम सब खाना खाकर चलेंगे।

- (xi) तो, हो, भी, भर, तक, मात्र जैसे निपात उस शब्द के बाद रखे जाते हैं जिस पर जोर देना होता है।

रघुराज तो आया।

At least Raghuraj came.

रघुराज आया तो।

Raghuraj did come.

जोसफ ही आया था।

Only Joseph had come.

जोसफ आया ही था कि बम फटा।

Joseph had just entered (come) when the bomb exploded.

अन्वय 4

- (xii) कालवाचक क्रिया विशेषण - आज, कल, तुरंत, हमेशा, सुबह

स्थानवाचक क्रिया विशेषण - बाहर, आगे, सभी जगह (सर्वत्र)

रीतिवाचक क्रिया विशेषण - धीरे-धीरे, अचानक, चलकर, पैदल

जोसफ कल (adverb of time) स्कूल (adverb of place) गया था।

जोसफ कल स्कूल पैदल (adverb of manner) गया था।

जिस क्रिया विशेषण पर जोर देना है उसे पहले रखा जाता है। उसी के अनुसार हिंदी भाषा में क्रम बदला जाता है।



**पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग
केंद्रीय हिंदी निदेशालय**

उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम
नई दिल्ली - 110066
दूरभाष : 011-26105211/44

**Department of Correspondence Course
Central Hindi Directorate**
Department of Higher Education
Ministry of Human Resource Development
West Block-7, Ramakrishnapuram
New Delhi - 110066
Phone: 011-26105211/44
Website: www.hindinideshalaya.nic.in



पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग
Department of Correspondence Courses
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
CENTRAL HINDI DIRECTORATE



एडवांस हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम
ADVANCE DIPLOMA COURSE IN HINDI

KIT-1 (प्रथम प्रश्न पत्र)
हिंदी भाषा तथा संरचना

Response Sheet - 1-5
उत्तर पत्र - 1-5

R.S. received by the { Student on :
Directorate on :

प्राप्तांक Marks	1/ 20	2/ 20	3/ 20	4/ 20	5/ 20
---------------------	---	-----------	---	-----------	---	-----------	---	-----------	---	-----------

PLEASE ALWAYS QUOTE YOUR ROLL NO. IN ALL CORRESPONDENCE WITH US

FILL UP THE FOLLOWING IN BLOCK LETTERS

Roll No.

Kum/Smt/Shri

Postal Address

.....

.....

.....

RETURN THE RESPONSE SHEET TO

The Deputy Director

Department of Correspondence Courses, Central Hindi Directorate
West Block-7, Ramakrishnapuram, New Delhi - 110066 INDIA

PLEASE READ YOUR LESSON UNITS CAREFULLY
BEFORE ANSWERING YOUR RESPONSE SHEETS

प्रश्न-1 भाषा का प्रयोजन क्या है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-2 हिंदी भाषा का परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-3 नीचे लिखे शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए :-

(क) पुल्लिङ्ग शब्द -

शहर

नाम

देश

घड़ा

शब्द

वाक्य

पहाड़	दरवाजा
नक्षत्र	पाठ
(ख) स्त्रीलिंग शब्द –			
जाति	किताब
नदी	रचना
वस्तु	दीवार
आवश्यकता	दिशा
माता	दशा

प्रश्न-4 उपयुक्त कारक चिह्नों के आधार पर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

मीराबाई जन्म राजस्थान मेड़ता निकट एक गाँव हुआ था। उनके पिता नाम रतनसिंह था। इनको बाल्यावस्था ही गिरधर गोपाल प्रेम हो गया था। विवाह कुछ दिनों बाद ही इनके पति मृत्यु हो गई। अब मीरा कृष्ण ही अपना पति मानकर उनके प्रेम दीवानी हो गई। वह लोकलाज त्यागकर साधु-संतों सत्संग और कृष्ण-भजन अपना समय व्यतीत करती थीं। इनके देवर रुष्ट होकर इनके लिए विष प्याला भेजा, परंतु वह उसे भगवान का प्रसाद समझकर पी गई। अंत मीरा 1546 ई. में कृष्ण-प्रेम के गीत गाते-गाते द्वारिका रणछोड़ जी (कृष्ण) मूर्ति समा गई।

प्रश्न-5 निम्नलिखित शब्दों के सामने दिए गए उत्तरों में से उनके सही व्याकरणिक लिंग पर सही (✓) का चिह्न लगाइए।

(1) रात	(स्त्रीलिंग / पुल्लिंग)	(6) पहाड़	(स्त्रीलिंग / पुल्लिंग)
(2) साधु	(स्त्रीलिंग / पुल्लिंग)	(7) सेवा	(स्त्रीलिंग / पुल्लिंग)
(3) सभा	(स्त्रीलिंग / पुल्लिंग)	(8) मोती	(स्त्रीलिंग / पुल्लिंग)
(4) वाक्य	(स्त्रीलिंग / पुल्लिंग)	(9) शब्द	(स्त्रीलिंग / पुल्लिंग)
(5) माया	(स्त्रीलिंग / पुल्लिंग)	(10) पृथ्वी	(स्त्रीलिंग / पुल्लिंग)

प्रश्न-6 'ने' का प्रयोग करते हुए पाँच वाक्य बनाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-7 निम्नलिखित कारक विभक्तियों को पाँच संज्ञा और पाँच सर्वनाम शब्दों के साथ प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए :-

मैं, के लिए, का, को, से

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....
.....

प्रश्न-8 नीचे लिखे वाक्यों के खाली स्थानों में 'मैं', 'तुम', 'हम', 'आप', 'वह', 'वे' के उचित रूप भरकर वाक्य पूरा करो :-

- (1) यहाँ कब आए ?
- (2) जब आएगा तब जाऊँगा।
- (3) यदि राधेलाल न आएँ तो फोन कर देना।
- (4) आप ही बताइए झूठ क्यों बोलूँगा।
- (5) हर दिन बाग में घूमने आते हैं ?

प्रश्न-9 निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :-

रात
भला
अमीर
आगे
नई

प्रश्न-10 प्रश्न 9 में दिए गए शब्दों और उनके विलोम शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-11 'प्राणियों की सेवा भी ईश्वर भक्ति है' नामक पाठ से दस संज्ञा और पाँच सर्वनाम शब्द चुनकर लिखिए।

संज्ञा		सर्वनाम	
(1)	(6)	(1)	
(2)	(7)	(2)	
(3)	(8)	(3)	
(4)	(9)	(4)	
(5)	(10)	(5)	

Comments & Instructions

1. Improvements needed.
2. General assessment of the performance.

(Signature of the Evaluator)

सो (अकर्मक / सकर्मक)

लिख (अकर्मक / सकर्मक)

बैठ (अकर्मक / सकर्मक)

--

જા (અકર્મક / સકર્મક)

देख (अकर्मक / सकर्मक)

चल (अकर्मक / सकर्मक)

Page 10 of 10

बेच देना, चिल्ला पड़ना, कर चुकना, देखते रहना, रुकना पड़ा, जाने लगना, जाने दे, भाग जाना, आना चाहिए, पढ़ सकना।

This image shows a full page of white paper with horizontal dotted lines, typical of primary school writing paper. The lines are evenly spaced and run across the width of the page. There are no margins, text, or other markings on the paper.

.....

.....

.....

प्रश्न-3 'लग' क्रिया का प्रयोग करते हुए पाँच भिन्न-भिन्न वाक्य बनाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-4 पाँच 'नाम धातु क्रियाएँ' लिखिए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-5 निम्नलिखित वाक्यों को प्रेरणार्थक वाक्यों में रूपांतरित कीजिए :-

उदाहरण - अधिकारी ने पत्र लिखा।

अधिकारी ने स्टेनो से पत्र लिखवाया। (स्टेनो)

(1) शाहजहाँ ने किला बनाया। (मजदूर)

(2) पिता जी ने शोभा को गणित पढ़ाया। (शिक्षक)

(3) बूढ़े ने अपने फौजी लड़के की चिट्ठी पढ़ी। (डाकिया)

(4) मैं आपका काम कल करूँगा। (नौकर)

(5) माँ बच्चे को दूध पिलाती है। (आया)

प्रश्न-6 'वाच्य' कितने प्रकार के हैं ? उनके नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-7 कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने के क्या नियम हैं ?

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-8 नीचे लिखे वाक्यों को कर्मवाच्य में रूपांतरित कीजिए :-

उदाहरण - शीला अपने भाई को पत्र (पुल्लिंग, एकवचन) लिख रही थी।
शीला द्वारा अपने भाई को पत्र लिखा जा रहा था।

(1) बच्चे ने फूलों के साथ कलियाँ भी (स्त्रीलिंग, बहुवचन) तोड़ीं।

.....

(2) हम नौकर के हाथ वहाँ कुछ फल (पुल्लिंग, बहुवचन) भेजेंगे।

.....

(3) तुगलक ने सोने के सिक्के (पुल्लिंग, बहुवचन) चलवाए।

.....

(4) बंगाल के लोग चावल अधिक खाते हैं।

.....

(5) न्यायाधीश दोषियों को सजा देते हैं।

.....

(6) टाइपिस्ट ने सारे पत्र (पुल्लिंग, बहुवचन) टाइप किए।

.....

(7) पुलिस ने तीन डाकुओं को पकड़ा।

.....

(8) निदेशक ने छुट्टी का आदेश जारी किया।

.....

प्रश्न-9 नीचे दिए गए रिक्त स्थानों की 'तू', 'तुम' और 'आप' के उचित प्रयोग से पूर्ति कीजिए :-

(1) पुस्तक मेले में ढेर सारी पुस्तकें हैं वहाँ जा और कुछ पुस्तकें ले आ।

(2) समय का सदुपयोग करो अन्यथा पछताना पड़ेगा।

- (3) कल मेरे घर आ रहे हैं न! मैं प्रतीक्षा करूँगा।
- (4) घर जाकर आराम कीजिए, बहुत थक गए होंगे।
- (5) मोहन, वहाँ खड़ा हो जा, राकेश इधर आ जाओ और सब अभी इंतजार कीजिए।

प्रश्न-10 'भगवान बुद्ध और अंगुलिमाल' कहानी से पाँच संयुक्त क्रियाएँ* चुनकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

* टिप्पणी : क्रिया + पड़, क्रिया + जा, क्रिया + सक, क्रिया + दे इत्यादि संयुक्त क्रियाओं की कोटि में आते हैं।

Comments & Instructions

1. Improvements needed.
2. General assessment of the performance.

(Signature of the Evaluator)

प्रश्न-1 क्रिया विशेषण किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-2 क्रिया विशेषण कितने प्रकार के होते हैं ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-3 निम्नलिखित वाक्यों में आए क्रिया विशेषणों को छाँटिए :-

- (1) भगवान तुम्हारा दुख अवश्य दूर करेंगे।
.....
- (2) हम गाँव से तुरंत लौट आए।
.....
- (3) वह सदा पुरानी पुस्तकें खरीदती थी।
.....
- (4) बच्चे जोर-जोर से चिल्ला रहे थे।
.....
- (5) ईश्वर सर्वत्र है।
.....
- (6) आने में उसने बहुत देर कर दी।
.....
- (7) नौकर कब आएगा?
.....
- (8) आप कुर्सी पर आराम से बैठिए।
.....
- (9) आज रात को शायद पानी बरसे।
.....
- (10) मेरी बात ध्यानपूर्वक सुनिए।
.....

प्रश्न-4 निम्नलिखित क्रिया विशेषणों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-

अकस्मात् (suddenly), सदा (always), बहुधा (mostly / very often), बहुत (many/
very much), तुरंत (immediately), धीरे-धीरे (slowly), सावधानी से (carefully),
आराम से (leisurely / comfortably), पैदल (on foot / by walk), आस-पास (around)

.....
.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-5 (क) अन्विति किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

(ख) निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और संबंधित अन्विति का नाम लिखिए :-

- (1) हमने बाजार से चार किताबें खरीदीं। (.....)
- (2) राजेश और मोहन बाग में टहल रहे थे। (.....)
- (3) अच्छे बच्चे हमेशा सच बोलते हैं। (.....)
- (4) चाचा जी परसों बनारस से लौटे। (.....)
- (5) गोपाल ने कल चार चिट्ठियाँ लिखीं। (.....)

प्रश्न-6 खाली स्थानों में उपयुक्त समुच्चय बोधक अव्यय भरकर वाक्य पूरे कीजिए।
 और (and), नहीं तो (else), परंतु / किंतु / लेकिन (but), इसलिए (therefore), क्योंकि (because), न...न... (neither...nor), यदि ... तो (if...then)

- (1) मैंने उसे बुलाया वह नहीं आया।
- (2) बुखार के कारण उसे तो भूख लगती है ही नींद आती है।
- (3) सुधाकर कार्यालय नहीं जा सका वह बीमार था।
- (4) एलेन आज रात को आएगी परसों वापस चली जाएगी।
- (5) शीला का व्यवहार बहुत अच्छा है पड़ोस की सभी महिलाएँ उसका आदर करती हैं।
- (6) तुम खुद-ब-खुद बाहर चले जाओ चौकीदार तुम्हें बाहर निकाल देगा।
- (7) समय मिला मैं वहाँ जाऊँगा।

प्रश्न-7 नीचे दिए गए वाक्यों के खाली स्थानों में कोष्ठक में दी गई क्रियाओं के उपयुक्त रूप भरकर वाक्य पूरे कीजिए :-

- (1) राजाराम को फाइल चाहिए। (प्रस्तुत करना)
- (2) राम इसाद को यह मकान । (पसंद होना)
- (3) परीक्षार्थियों को इन सभी प्रश्नों के उत्तर । (लिखना होना)
- (4) माधवी को मराठी । (आना)
- (5) मुझे आपकी बात अच्छी तरह से । (याद होना)

प्रश्न-8 कर्ता + ने संरचना की प्रमुख विशिष्टताओं को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-9 'परीक्षा' नामक पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :-

(1) द्रोणाचार्य कौन थे ?

.....

(2) द्रोणाचार्य ने किस-किसकी परीक्षा ली ?

.....

(3) युधिष्ठिर ने क्या उत्तर दिया ?

.....

(4) दुर्योधन ने क्या उत्तर दिया ?

.....

(5) अर्जुन ने क्या उत्तर दिया ?

.....

(6) अर्जुन का उत्तर सुनकर द्रोणाचार्य ने क्या कहा ?

.....

प्रश्न-10 इस पाठ में क्या संदेश दिया गया है ?

.....
.....
.....
.....
.....
.....

Comments & Instructions

1. Improvements needed.
2. General assessment of the performance.

(Signature of the Evaluator)

प्रश्न-1 अंतर बताइए।

(1) रूढ़ और यौगिक शब्द। (2) उपसर्ग और प्रत्यय।

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-2 शब्द रचना की कौन-सी चार प्रक्रियाएँ हैं ? नाम लिखिए और दो-दो उदाहरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-3 निम्नलिखित उपसर्गों और प्रत्ययों की सहायता से व्युत्पन्न शब्द लिखिए :-

उपसर्ग - अप, अनु, अति, प्र, सु

प्रत्यय - ता, पन, पा, क, कार

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-4 पाँच कृदंत और पाँच तद्धित शब्द लिखिए और उन्हें अपने वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-5 निम्नलिखित पुल्लिंग शब्दों के स्त्रीलिंग शब्द लिखिए :-

दास	माली
देव	मोर
नौकर	मालिक
पंडित	कुम्हार
बूढ़ा	अध्यापक

प्रश्न-6 निम्नलिखित संधिरूप किन-किन शब्दों के मेल से बने हैं ? अलग-अलग करके लिखिए :-

रामावतार, जगदीश, विद्याध्ययन, उद्घाटन, रवींद्र,
सच्चरित्र, परोपकार, दुरुपयोग, प्रत्येक, दुष्कर्म

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-7 निम्नलिखित सामासिक शब्द किन-किन शब्दों के मेल से बने हैं ? उन्हें जोड़ने वाला अव्यय भी बीच में लिखें :-

पति-पत्नी, पाप-पुण्य, माँ-बाप, देश-भक्ति, मुँह-माँगा

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-8 अंग्रेजी, फारसी, तुर्की, अरबी भाषाओं से आगत कुल दस शब्द लिखिए :-

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-9 निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए :-

आग	दुबला
आम	पंछी
घर	पत्ता
सूरज	लाज
ऊँचा	सच

प्रश्न-10 निम्नलिखित के पर्यायवाची शब्द लिखिए :-

आकाश	नदी
चाँद	सूर्य
फूल	पृथ्वी

प्रश्न-11 निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

नौ दो ग्यारह होना, ईद का चाँद होना, दाँतो तले उंगली दबाना, नाक में दम करना, अपना उल्टू सीधा करना।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

Comments & Instructions

- 1. Improvements needed.
- 2. General assessment of the performance.

(Signature of the Evaluator)

प्रश्न-1 नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में दीजिए :-

(1) प्राचीन भारत में कौन-सी दो लिपियाँ प्रचलित थीं ?

.....

.....

.....

(2) ब्राह्मी लिपि का प्रयोग कहाँ-कहाँ होता था ?

.....

.....

.....

(3) कुटिल लिपि का प्रयोग ईसा की किस शती तक रहा ?

.....

.....

.....

(4) देवनागरी का आधुनिक रूप ईसा की किस शती से चला आ रहा है ?

.....

.....

.....

(5) देवनागरी में स्वरों का क्रम क्या है ?

.....

.....

.....

प्रश्न-2 देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता के बारे में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-3 हिंदी वर्तनी के मानकीकरण से क्या तात्पर्य है ? संक्षेप में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-4 हिंदी वर्तनी में विभक्ति चिह्नों के प्रयोग के क्या नियम निर्धारित हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-5 हिंदी वाक्यों में शब्द-क्रम की स्थिति पर प्रकाश डालिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-6 निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए :-

दरवाजा (पु.)	वधू (स्त्री.)
दवाई (स्त्री.)	साधु (पु.)
कमल (पु.)	पुस्तक (स्त्री.)
नदी (स्त्री.)	पाठ (पु.)

प्रश्न-7 निम्नलिखित शब्द-युग्मों का अंतर वाक्य में प्रयोग करते हुए स्पष्ट कीजिए :-

कंकाल-कंगाल	आयत-आयात	कोश-कोष	खाद-खाद्य
दिन-दीन	नियत-नीयत	समान-सामान	क्रम-कर्म

[illegible]

प्रश्न-8 (क) निम्नलिखित पैराग्राफ की वर्तनीगत अशुद्धियों को ठीक करके शुद्ध रूप लिखिए।

दिल्ली भारत की राजधानी है। यह बहुत प्रचीन ओर ऐतिहासिक सहर है। दिल्ली यमूना नदी के किनारे बसा है। इसे हिंदू तथा मुसलमान राजाओं ने बसाया। अंग्रेजों ने बाद में इसे अपनी राजधानी बनाया पर नाम नहि बदला। सुतंत्रता मिल जाने के बवजूद दिल्ली भारत की राजधानी बनी रही। यहाँ सभी धर्मों के मानने वाले लोग रहते हैं। यों तो यहाँ सभी भाषाओं के बोलने वाले लोग रहते हैं लेकिन यहाँ की बोलचाल की मुख्य भाषा हिंदी ही है।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(ख) निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए :-

आर्शीवाद	ब्रम्हा
उजवल	भारतिय
सन्यास	श्रीमति
ध्वनी	पत्नि

Comments & Instructions

1. Improvements needed.
2. General assessment of the performance.

(Signature of the Evaluator)

